५ नवम्बर-शुक्रवार-१९२६

विजय वैजयन्ती

(४)

मंदिर में

हज़ारों वर्षों से घंटों का गंभीर महान निनाद अमावस की रात्रि की गंभीर निःशब्दता को तीव्र वेग से चीरता हुआ वायु की लहरों पर चढ़कर आकाश में पहुंच रहा है। हज़ारों की संख्या में भक्त पुजारी तथा उपासक मन्दिर में इकट्ठे हो रहे हैं। प्रतिवर्ष साधक आराधना के लिये इकट्ठे होते हैं और चरणों में भेंट चढ़ाते हैं तथा हज़ारों की संख्या में इकट्ठे शीश चरणों में झुकते हैं पर हमारे हृदय भक्ति नम्रता और आत्मसमर्पण के भावों से अभी तक शून्य हैं। मन्दिर को नई से नई वेश-भूषा से सजाते हैं पर हमारा हृदय मन्दिर पुराने जालों से मण्डित है। उसमें जगह २ जाले लगे हुए हैं, कभी सफ़ेदी तक नहीं की गई। आज नगर उपनगर, सड़कों और गलियों को भी मन्दिर में दीये बालने के साथ यत्र तत्र सर्वत्र दीपे बाल कर, इस अमावस की रात को इनके आलोक से आलोकित करेंगे। पर इस मन्दिर में इसकी किरण की छाया तक न पहुंची है न पहुंचेगी। हज़ारों वर्षों से दुर्गा लक्ष्मी-चंडी, कालि[illegible] और राम की पूजा [illegible] रहे हैं; उनकी वीरता की कथाओं का पाठ कर रहे हैं पर निर्जीव के निर्जीव बने हुए हैं। आज हमारे हृदय भक्ति और प्रेम से ओतप्रोत नहीं हैं। हमारे शीश चरणों में झुकते ज़रूर हैं पर अपने आप को अर्पित करने की शक्ति हममें नहीं है। आज अपने शीश लहू से मां के चरण धोने के बजाय निःसहाय बकरों के खून से धोते हैं। अपने शीश कुसुमों की माला अर्पित करने के बदले बकरों के मुण्डों की माला अर्पित करते हैं। आज भुजाओं में शक्ति नहीं है और हृदय में भक्ति नहीं है।

मां की हृदय में प्रतिष्ठित शक्तिमयी और मूर्ति में रहने लगी है। आज हम अपने को शुद्ध और पवित्र मन कर, संकल्पों और मंगल भावना के सजाने के बजाय पत्थर और मूर्ति को सजाने लगे हैं। पहिले यह हमारी भावनाओं की साकार पर निर्जीव मूर्ति थी जो कि सदा मां का स्मरण दिलाती थी पर हम आज उस सजीव मूर्ति को भूल कर निर्जीव को भी प्रतिदिन की जगह एक दिन स्मरण कर लेते हैं। इसी कारण से आज हमारा हृदय भक्ति से शून्य है।

मां की पूजा पहिले मानपुष्पों और हृदय-कुसुमों के चढ़ाने से करते थे पर आज दिन बदल गया है। निर्गन्धित कुसुमों से मां की पूजा हो रही है। हम बदल गये, हमारी भावनायें बदल गईं, जिस दुनिया में हम रहते हैं वह दुनिया बदल गई पर आश्चर्य और विस्मय की बात है कि हमारी मां वैसी की वैसी है। जंजीरों और बेड़ियों से की लाल पर कोड़ियों के संगीत के साथ पूजा करने पर भी आज वही है वह नहीं बदली है अविचल भाव से अपरिवर्तित रूप से वात्सल्य भरा वरद हस्त लिए हमको आशीर्वाद और अभय दान के लिये बढ़ा रखा है।

मां अम्बिका आज तुझे इन दीपों के उजाले में पहिचाना है। आज हमारा मस्तक श्रद्धा से तेरे पूत-चरणों में झुका है। तेरी पर वरदायिनी दिव्य मूर्ति सदा हमारे हृदय में विराजमान है। स्नेह का अक्षय कवच धारण कर रणांगण में कूद पड़े और तू प्रसन्न हो अपने लाडले पुत्रों के शरीर से रक्त गंगा में स्नान कर। मां! वह दिन दूर नहीं रहेगा।

गुब्बारा.

जब कि यू अपने 33 करोड़ कण्ठों से निकले जयजयकार के बीच अपने प्राचीन सिंहासन पर अधिष्ठित होगी और अपने आंगन में खिल उठेगी। अपने इस वैभव के वेश को छोड़ कर स्वाभाविक वस्त्रों से अलंकृत होगी। वह जननी माँ चाहे तेरे पुत्रों की कामना सफल हो।

दिवाली आओ यह ठीक है कि अब हम में भारतीय विजय-वैजयन्ती को अनन्तीय सीमा से पार ले जाने की ताकत नहीं है, आज हम में यह शक्ति नहीं है कि इन दीपकों के निर्मल उजाले में अपने हृदय सम्राट को ढूंढ निकालें। न वह भावनायें ही है कि आज हम सब भाई भाई आपस में मिलकर अपने विजयी वीर का स्वागत करें। नहीं वह आज शक्ति ही है कि प्रेमी से मिलन के लिये अपने आप को हम समर्पित कर दें पर, तब भी आओ, तुम अपने साथ हमारी उज्वल विजयों की मधुर स्मृति लाती हो जिनको देखकर सदा झुकने वाला शीश गर्व से उन्नत हो जाता है, छाती फूल उठती है, नया खून चक्कर काटने लगता है और भूले इतिहास के पन्नों को फिर से स्मरण कराने का देती है। तुम्हारा आगमन नई स्फूर्ति को देने वाला है अतः माँ का स्मरण दिलाने वाली दीवाली! आओ तुम्हारा बार बार स्वागत है।

आज फिर हमने प्रवीर के आगमन के सम्मान में दिये जलाये हैं। इसका निर्मल उज्वल प्रकाश सदा बना रहे हमारा मन्दिर इस प्रकाश से सदा प्रकाशित रहे।

गुब्बारा!

मैंने तुम्हें तैयार करने में आज का सारा दिवस लगाया है, यह लो तुम्हारे लिए यह रंग बिरंगे कागज़ रखे हैं, इन्हें लिया चाहते हो? यह रात हुई तुम्हारे लिए लोगों की भीड़ जमा हो गई, तुम कहाँ जाया चाहते हो- अरे वहाँ, उन छोटे से सितारे के पास!!

लो जाओ! हे गुब्बारे! मेरे उपकार को, जो तुम्हारे किसी कोने में रह गया हो फेंक दो। देखना सितारे की चाह में जाते हो, दग्ध हो जाओगे, तुम्हारी हंसी होगी, अथवा फिर ठंडे हो जाना, वन के कोने में तुम्हें कोई न पूछेगा। फिर कहना वही पुराना- "तुम्हारा"

— ९ मी [illegible] —

रजत जयन्ती और हमारा कर्तव्य.

आज दिवाली का पवित्र दिन है। प्रत्येक कुलवासी का हृदय शुद्ध संकल्पों, पवित्र भावनाओं और नवीन मनोरथों से भरपूर है। इस अवसर पर हम अपने पाठकों का ध्यान उस ओर आकर्षित करना चाहते हैं — जिसकी ओर साल के आरम्भ से हमारी शक्तियां लगी हुई हैं — गुरुकुल रजत जयन्ती की ओर। रजत-जयन्ती में ४, ५ मास शेष हैं। इस अवसर की सफलता बहुत कुछ हमारे पर ही निर्भर है। यदि सम्मेलनों की सफलता से उत्सव सफल कहलाता है तो अधिकांश सम्मेलनों का भार हमी पर है। हमारी सभायें भी अपनी अपनी ओर से अधिवेशन करेंगी पर उनको सफल बनाने के लिये आवश्यक होगा कि हम अभी से तैयारी करें क्योंकि परीक्षाओं के बाद फिर शिक्षा के लिये हमें जाना होगा उस समय तैयारी का अवसर हमें न मिलेगा। विशेषतः हम २, ३ बातों की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

I गुरुकुल के उत्सव पर प्रदर्शनी होगी और अवश्य होगी। उसमें क्या वही पुराना सामान रखकर दिखलाया जायगा या कुछ नया भी। नया सामान न लाते आयेगा नहीं तो फिर नवीनता कैसे लाई जावेगी। इसके लिये हमें अपने हाथों को हिलाना चाहिये अपने हुनर को, दस्तकारी को और अपने विज्ञान के पाण्डित्य को दिखलाना चाहिये।

II इस अवसर पर विविध सम्मेलनों की आयोजना होगी अतः कवियों को — निबंध लेखकों को और वक्ताओं को अभी से तैयारी करनी चाहिये। आज हमारा कुल वक्ताओं और कवियों से दरिद्र हो रहा है, आवश्यकता है कि कुल के भावुक व कवि इधर ध्यान दें। हमारा प्रत्येक भाई से अनुरोध है कि वक्ता बनने की कोशिश करें और दूसरों को सहायता प्रदान करें।

अन्त में हम एक प्रस्ताव करना चाहते हैं कि उत्सव पर - उत्सव के दिनों में नवीं असेम्बली का अधिवेशन किया जाय। मार्च के मास में दिल्ली में असेम्बली का अधिवेशन होगा अतः असेम्बली के प्रमुख सदस्यों को भी आसानी से निमंत्रित किया जा सकेगा। क्या वाग्वर्धिनी के अधिकारी इधर ध्यान देंगे?

वाद्य खेल और धन संग्रह के काम चल रहे हैं इसलिये इनके बारे में कुछ कहना व्यर्थ होगा। ये पंक्तियां लिखते हुए हम उस भगवती देवी को नहीं भूलते — जिसकी पूजा का पर्व है। इसीलिये हम आपका ध्यान इधर खींच रहे हैं। कुल का गौरव हम में है यह यदि हम अनुभव करेंगे तब इन दोनों कठिनाइयों को सह सकेंगे

डायरी के पत्रे

(२)

दीनापुर स्टेशन से आरते ही वर्षा कणों ने स्वागत किया। घर पहुंचते ही इसने विकराल रूप धारण किया। दो मिनिट पहिले की सूखी सड़कें जलमग्न होगईं। सड़क के साथ नालियां बह उठीं। इस ऋतु में स्वभावतः आदमी का मन शान्त होता है फिर बिहार के लोगों के दिलों के संबन्ध में यह आशा करना कि ये शान्त होंगे यह अनुचित न था। इस आशा का कारण था पत्रों की कालम जो अन्तःस्थिति न देखकर जो ऊपर का चेहरा मात्र देखते हैं। ज़मीन के नीचे बारूद छिपी हो चाहे पर ऊपर साफ़ मैदान होना चाहिये, ज़मीन ऊंची नीची और कंकरीली न होनी चाहिये। पत्रों के अध्ययन से असली हाल का ज्ञान प्राप्त करना कठिन है। क्योंकि शेक्सपीयर के शब्दों में शब्दों का लिखना हृदय के आन्तरिक भावों का छिपाना है।" यह वचन किसी और जगह के लिये सत्य हो या न हो पर बिहार के लिये सर्वथा सत्य है।

× × × ×

कलकत्ते के विस्फोट की चिनगारियां पटने पहुंची। पटना जब सब प्रकार का माल कलकत्ते से मंगाता है तब अशान्ति की चिनगारियों को भी ले लिया तो क्या आश्चर्य! कलकत्ते की लाठियों की आवाज़ और छूरे की चमक का प्रकाश के पटने पहुंचने की देर थी कि वंशपरम्परागत आये हुए मुसलमान नौकर हिन्दू मालिकों के घर, दुकान और मिलों से निकाल दिये गये। यदि किसी प्रकार ने किसी मुसलमान कम्पाउंडर को रखा तो इसलिये कि मुसलमान रोगी भी उसकी दुकान में आवें। वहां हृदयों की शुद्धता या भावों की उच्चता काम नहीं कर रही थी राजनीति काम कर रही थी। हिन्दुओं ने मुसलमानों के त्यौहार में और मुसलमानों ने हिन्दुओं के त्यौहारों में भाग लेना बन्द कर दिया। यदि कोई हिन्दू किसी मुस्लिम त्यौहार को देखने जावे तो जाने से पहिले अपने सजातियों की झाड़ और डांट डपट सुनने के लिये तैयार रहना चाहिये। दुर्भाग्य वश इस नियम की जानकारी न होने से मुसलमानों की 'चालीसा' देखने मैं गया। उसी दिन हसन हुसैन का त्यौहार था। मुझ को वहां खड़ा देखकर वहां से गुज़रने वाले समाजी परिचित सज्जनों ने समाज में चलने के लिये कहा उनके इस कथन का अर्थ मैं उस दिन समझ नहीं सका था अतः मैं वहां ही खड़ा रहा। उन लोगों ने भी ज्यादा आग्रह करना उचित न समझा क्योंकि मैं थोड़े दिनों का मेहमान था। मैंने कभी इसको पहिले कभी न देखा था। थोड़े दिनों के बाद इसका रहस्य मुझे पता लगा। पर इसके बाद से इसका मौका नहीं आया जब मैं भी इस नियम का पालन करता।

इन भावों ने एक काम ज़रूर किया है वह यह है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा अपने जातीय त्यौहारों में सम्मिलित होता है। सम्मिलित ही नहीं होता पर क्रियात्मक भाग भी लेता है। बड़े बड़े रईस गतका, बनैठी इन त्यौहारों में छोटे २ आदमियों के साथ खेलते हैं। बिहार में मुसलमान केवल २० प्रतिशतक है

असमाप्त

बापूजी के चरणों में

मेरे तीन सप्ताह

(श्री. उपा. देवराज जी सेठी. M.A.)

(३)

बापूजी की जयन्ती के उपलक्ष्य में एक विशाल खादी प्रदर्शनी की आयोजना की गई थी। उस में सब प्रान्तों के भिन्न २ प्रकार के चरखे, पिञ्जने, बेलन और खड्डी इत्यादि के नमूने उपस्थित किए गए थे। एक अलमारी में महात्मा जी तथा देश के अन्य नेताओं के हाथ का काता हुआ सूत दिखाया गया था। पर विशेष उल्लेखनीय भाग छात्रालय के विद्यार्थियों के कार्यों का था। उस में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित एक छोटे आकार का हवाई जहाज रखा हुआ था जिस के अन्दर के सब कल पुरजों का काम घड़ी के पुरजे कर रहे थे। आगे के दो पंख घड़ी को चाबी देने से फिरते थे। एक बार चाबी देने से हवाई जहाज़ २५ चक्कर लगाता था। एक कमरे में तारबर्की का सामान सजा कर रखा गया था। अपनी नई बनाई अक्षरमाला द्वारा दूसरे कमरे में स्थित व्यक्तियों से बातचीत करते थे। इस यंत्र के सब पुरजे विद्यार्थियों के हाथ के बने हुए थे। एक पनडुब्बी बनाने का भी यत्न उन्हों ने किया था पर सफल मनोरथ न हो सकने के कारण उस को प्रदर्शनी में नहीं दिखाया गया था। इसी प्रकार और भी चीज़ें विद्यार्थियों की बनाई हुई वहां प्रदर्शित की गई थीं।

सत्याग्रह आश्रम केवल चरखे के पुजारियों का आश्रम नहीं है। यहां पर अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञ तथा शिक्षार्थी और जिज्ञासु यहां विद्यमान हैं। देहरादून निवासी पं. सुरेन्द्र जी दस साल से वहां निवास कर रहे हैं। प्रातः ही दोनों समयों के लिए दलिया बना लेते हैं इसी दलिये पर आप गुज़ारा करते हैं। आश्रम का स्थिर निवासी होने के इच्छुकों को ३ मास तक टट्टियां साफ़ करने की शिक्षा बाधित तौर पर लेनी होती है। परन्तु आप आज तक इस काम को प्रेम से सम्पादन कर रहे हैं। वे इस काम में बड़ा आनन्द अनुभव करते हैं।

गतवर्ष से यूनाइटेड किंगडम के सेना विभाग के लैफ्टिनेण्ट कर्नल की पुत्री मिस स्लेड (मीरा बहन) आश्रम में रहती हैं। ९ नवम्बर को उनका एक साल पूरा हो जायगा। और उसी दिन मीरा बहन हिन्दी का उत्तम अभ्यास करने के लिए कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान कर देंगी।

सम्भावना की जाती है कि जनवरी में कुछ दिनों के लिए यहाँ भी आवे। उस का नाम मीरा बहन ठीक चुन कर रखा गया है। श्रद्धा और भक्ति की वह साक्षात् साकार मूर्ति है। गुजराती और हिन्दी न जानते हुए भी उस की प्रातः चार बजे की और सायंकालीन संध्या में एक भी अनुपस्थिति नहीं रही।

एक गुजराती नवयुवक आश्रम में निवास कर रहे हैं। आप यूरोप खण्ड की यात्रा कर चुके हैं। आप का नाम श्री बासाली है। आप का नाम विशेष कर उल्लेखनीय है। पहिले आपने पन्द्रह दिन का उपवास रखा था फिर आपने पच्चीस दिन का किया। मेरे वहां होते हुए आपने अपनी आध्यात्मिक उन्नति के उद्देश्य से बापूजी का आशीर्वाद लेकर चालीस दिन का उपवास आरम्भ किया। जिस के खुलने की तिथि पन्द्रह नवम्बर है। उपवास के साथ साथ आपने मौनव्रत भी धारण किया है।

२ अक्तूबर से एक अंग्रेज महिला मिस लेस्टर (Miss Lester) अपने भतीजे मि. हौग (Mr. Hogg) के साथ आश्रम में पधारी हैं। यह महिला अविवाहिता हैं। विगत २५ वर्षों से लन्दन के श्रमजीवियों की आप सेवा कर रही हैं। विद्यापीठ में आप का एक भाषण हुआ था जो कि अत्यन्त प्रभावशाली था। आप अपने को Passivist कहती हैं। यह लण्डन के उस सम्प्रदाय का नाम है जो महात्मा जी के निष्क्रिय-प्रतिरोध (Passive Resistance) के सिद्धान्त के अनुसार दूसरे से मार खा लेते हैं पर दूसरे पर आप हाथ नहीं उठाते। इस महिला का मेरे पास एक पत्र आया है कि आप २९ अक्तूबर को आश्रम से चल कर दो एक दिन दिल्ली में ठहर कर २ या ३ नवम्बर को गुरुकुल पहुंचेंगी। (आप अपने भतीजे के साथ ४ नवम्बर को यहां आ गई हैं)

एक चीनी युवक जो अब शान्ति नाम से आश्रम में प्रसिद्ध है - जिस का असली नाम मुझे ज्ञात नहीं, पहिले शांति निकेतन में रहता था - कुछ मास से बापूजी के पास आश्रम में रहता है। चीनी भाषा का प्रकाण्ड पण्डित है, आश्रम में रह कर हिन्दी और संस्कृत सीख रहा है। खद्दर की भिन्न २ क्रियाओं का भी अभ्यास करता है। उस ने मेरे जाने से पूर्व २० दिन का अनशन व्रत और मौन व्रत धारण किया हुआ था जिस को उस ने मेरे वहां होते हुए ही समाप्त किया। समाप्ति पर महात्मा जी से मिल कर उस ने निम्न मंत्र का जाप किया —

असतो मा सद् गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। और उस समय से उस युवक ने

बापूजी के चरणों में—

मनसा वाचा और कर्मणा सत्य पालन का व्रत धारण किया। एक पट्टिका पर सुन्दर शब्दों में सुलेख में इस व्रत को लिखकर उसके नीचे अपने हस्ताक्षर किए और साक्षी के तौर पर महात्मा जी ने भी अपने हस्ताक्षर किए। बापू जी का ~~विचार है~~ सम्भवतः आगामी जनवरी मास में इसे हिन्दी सीखने के लिए गुरुकुल भेजेंगे।

आश्रम का विद्यालय उन का मुख्य कार्य नहीं है। वह तो केवल आश्रम के कार्यकर्ताओं के बच्चों की शिक्षा के लिए चल रहा है। लेकिन विद्यालय में पढ़ने वाले उन बच्चों का भी अधिकांश समय चरखा चलाने तथा उस की अन्य क्रियाओं को सीखने में लगता है। आश्रम में जितने व्यक्ति रहते हैं उन के कार्य (Activities) दो भागों में विभक्त हैं। i. यंग इण्डिया, गुजराती नवजीवन, हिन्दी नवजीवन के सम्पादन तथा प्रबन्ध में कुछ व्यक्ति लगे हुए हैं। लेकिन यह भी उन का प्रधान कार्य नहीं कहा जा सकता। आश्रम वासियों का अधिकांश समय खद्दर और उन की भिन्न २ क्रियाओं का विकास, संगठन और संचालन में लगता है। अखिल भारतीय चर्खा संघ का दफ़्तर यहीं पर है। इस के द्वारा ही सारे देश की खद्दर संस्थाओं का संचालन होता है। नए चरखे, खड्डियां तथा धुनकने के नए नए यंत्रों के आविष्कार में पर्याप्त संख्यक दिमाग लगे हुए हैं। अभी हाल ही में बम्बई के एक मिल मालिक ने एक नए प्रकार का चर्खा महात्मा जी के पास भेजा है। इस से चार पांच गुना सूत कातने का दावा किया जाता है। वहां के विशेषज्ञ इस पर परीक्षण कर रहे हैं। देखें क्या परिणाम निकलता है। महात्मा जी इतने से ही सन्तुष्ट होने वाले नहीं हैं। नई किस्म के चर्खे के आविष्कार के निमित्त वे जर्मनी और अमेरिका के बड़े बड़े वैज्ञानिकों से पत्र व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार खद्दर को सस्ता करने के लिए जितने अन्य साधन और उपाय हैं उन सब के आविष्कृत करने और उन से लाभ उठाने का सतत प्रयत्न हो रहा है। उदाहरणार्थ पिञ्जन, खड्डी, सूत को पान करने के नई नई विधियां सोची जा रही हैं। इस की अन्तिम और निश्चित सफलता में मुझे रत्ती भर भी सन्देह नहीं है।

यह तो मैं ऊपर ही कह आया हूं कि आश्रम की सारी जमीन पर सड़कों को छोड़ कर कपास ही कपास उग रही है। सोमनाथ छात्रावास का आंगन भी इस से नहीं बच सका है। उसमें भी बारहमासी देवकपास के ऊंचे २ पौदे झूम रहे हैं। महात्मा जी अपना सारा समय इसी को अर्पण किए हुए हैं। देश के अन्य राजनैतिक विषयों पर

यदि कोई उन से बात करे तो उस की बात तो सुन लेते हैं। लेकिन न तो उत्तर देते हैं और न दिलचस्पी दिखाते हैं। रात को जब कभी स्वप्न आते होंगे तो खद्दर के ही आते होंगे। उन के पास प्रतिदिन अखबारों का ढेर लग जाता है। कुछ तो जैसे आते हैं वैसे ही बिना खोले बोरी में भर दिए जाते हैं। कुछ अखबार आश्रम के अन्य निवासी पढ़ते हैं। बापूजी भोजन करते करते केवल पन्द्रह मिनट के लिए दो तीन अखबारों को सरसरी नजर से देख जाते हैं। हिंदु मुसलिम समस्या, कौंसिल-आंदोलन तथा देश के अन्य आन्दोलनों में कोई भाग नहीं लेते। महात्मा जी की तन्मयता का एक और प्रज्वलन्त उदाहरण यह है कि उन्हों ने अपने समीप और दूर के सब सम्बन्धियों को भी इसी काम में लगा रखा है। महात्मा जी के चार लड़के हैं। उन में से सब से बड़े श्रीयुत हीरालाल गांधी स्वतंत्र रूप से व्यापार करते हैं किन्तु उन के दो लड़के (महात्मा जी के पोते) इसी काम में लगे हुए हैं। बताया कि महात्मा जी के चचेरे भाई के (जो स्वयमेव आश्रम में रहते हैं) तीन प्रौढ़ वयस्क पुत्र हैं। उन में से श्रीयुत मगनलाल चर्खा संघ के सर्वे सर्वा हैं। दूसरे भाई छगनलाल पर आश्रम के प्रबन्ध का भार है। तीसरे भाई नारायणदास खद्दर के कार्यालय में काम करते हैं। इन तीनों कार्यकर्ताओं के लड़के भी खद्दर की विभिन्न क्रियाओं में लगे हुए हैं। एक बार महात्मा जी ने बात करते [illegible] २ सुनाया कि चर्खा तो मेरे पास अनायास आया है। मेरे तो अब यही इष्ट देव है। मैं जितना अधिक इस के लिए काम करता जाता हूं उतना ही मेरा विश्वास और आनन्द अधिकाधिक बढ़ता जाता है। मैंने उन से विनयपूर्वक पूछा कि आपके आश्रम में स्थिर रहने से जो खद्दर विषयक काम हुआ है उस से क्या आप को सन्तोष है? उन्हों ने फौरन जल्दी से विश्वास और दृढ़ता युक्त वाणी से कहा कि "इस में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। लोग अभी इस की कार्य क्षमता, उपयोगिता, महत्व और इस वर्ष की सफलता को नहीं समझ सके हैं। जो कार्य हुआ है वह मकान की नींव के समान आंखों से ओझल है। लेकिन उस के ठोस स्थिर तथा उपयोगी होने में मुझे जरा भी सन्देह नहीं है। वह समय जल्दी आने वाला है जब कि लोग इस की उपयोगिता को अनुभव करते हुए इसे स्वभावतः अपनाएंगे और अपने जीवन का अंग बना लेंगे।

भावी कार्य क्रम — कानपुर कांग्रेस के समय उन्हों ने निश्चय किया था कि वे २० दिसम्बर १९२६ तक अहमदाबाद के अहाते से बाहर नहीं निकलेंगे। इसके अनुसार दिसम्बर मास में आश्रम से चलेंगे। वहां से चलकर वर्धा के सत्याग्रहाश्रम में विश्राम करके आसाम कांग्रेस के लिए गोहाटी जायेंगे। वहां से लौट कर गत वर्ष की प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हुए गुरुकुल की रजत जयन्ती में सम्मिलित होने के लिए १५ या १६ मार्च को हरिद्वार पहुंचेंगे। गत वर्ष से चीन से भी उन को निमंत्रण आया हुआ है। अप्रैल में वहां जाने का भी वे विचार कर रहे हैं। पर यह अभी अनिश्चित है। ईश्वर उन को शक्ति और स्वास्थ्य दे जिस से कि देश के कल्याण में सहायक हो सकें।

तन्त्री के तार

आँधी के बाद.

आंधी के बाद इन शब्दों में कितनी असह्य वेदना और करुणा का समुद्र बंधा हुआ है। इन शब्दों में विश्व-विजयी-वीर की अतीव असहायावस्था छिपी हुई है। जो वीर आँख की पुतलियों में बसा हुआ है जिसके चरणों की वन्दना संसार अपने हृदय की माला अर्पित कर कर रहा है वह कह रहा है कि अभी नहीं जब यह विषाक्त धूंआ दूर होजायगा तब बाल सूर्य की किरणें जिस प्रकार हिमाच्छादित चोटियों पर अपने चुम्बन से अनुरंजन करती हैं उसी प्रकार मेरा मधुर हास्य भारतीय गगन को अनुरंजित करेगा। क्या इससे निष्ठुरता नहीं टपकती ? पर निष्ठुरता में एक आशा है, एक भावी आनन्द की रेखा है यही भक्तों के लिये सान्त्वना है।

किसके गले में

माला गूंथी है, पर डालूं कहां, किसको पिन्हाऊं ? कारिगरी कुसुमों से अधिक सुगन्धित, कवि कल्पना से अधिक कमनीय, रत्नों की माला से अधिक बहुरूप, तारक माला से अधिक उज्ज्वल, आकाशस्थित बक माला की पंक्ति से भी माला से अधिक सजीव, गंगा की लहरियों की माला से अधिक चंचल, रेशम से ज्यादा सूक्ष्म स्नेह सूत में पिरोई पवित्र भावों की माला क्या यों ही हाथ में पकड़े ही पकड़े सूख जायगी ? हृदय को मथकर बनाई यह माला क्या व्यर्थ जायगी ? ढूंढते ढूंढते थक गया पर पता नहीं चला कि यह माला आखिर पिन्हाऊं तो किसके गले में ?

तट पर

कितनी देर तक अभी और खड़ा रहना होगा उस पार से तो अब आवाज आनी बन्द होगई। रुमाल हिलाकर अपने आने की बात कह रहे थे वे भी ओझल होगये। घाट पर नौकायें वैसी की वैसी बंधी है। मल्लाह भी चले जारहे हैं। इधर नदी में बाढ़ आने वाली प्रतीत होरही है। जल शीघ्रता से मैला होता जारहा है। क्या अब वह नहीं आवेंगे ? तो लौट चलूं; पर कदाचित आगये तो क्या कहेंगे ? अभी तो नावों के चलने का समय बाकी है। अंधकार घना होता जाता है उस पार अभी तक कोई बत्ती भी नहीं जली क्या वो लोग कहीं और चले गये हैं ? हां, आवाज तो कुछ आरही है। तो क्या अभी खड़े रहूं यहीं तट पर।

भावुक

गगनाङ्गण में

खिलाड़ी का आदर्श :— आदर्श खिलाड़ी कौन है? क्या हमारी खेल उस आदर्श की रेखा को भी छूती है? खेल का आदर्श क्या है? क्या उस आदर्श के अनुसार अपने जीवनों को हम ढालते हैं? इन प्रश्नों में से दो का उत्तर श्री प्रेमचन्द्र के निम्न शब्द देंगे और दो का उत्तर हमारी खेल या खिलाड़ी देंगे। श्री प्रेमचन्द्र जी सूरदास के मुंह से खिलाड़ी की व्याख्या करते हैं :— "बस बस, अब मुझे क्यों मारते हो, तुम जीते, मैं हारा। यह बाजी तुम्हारे हाथ रही, मुझ से खेलते नहीं बना। तुम मंजे हुए खिलाड़ी हो, दम नहीं उखड़ता खिलाड़ियों को मिला कर खेलते हो और तुम्हारा उत्साह भी खूब है। हमारा दम उखड़ जाता है, हांपने लगते हैं और खिलाड़ियों को मिला कर नहीं खेलते, आपस में झगड़ते हैं, गाली गलौज मार पीट करते हैं कोई किसी को नहीं मानता। तुम खेल में निपुण हो, हम अनाड़ी हैं। बस इतना ही फर्क है। तालियां क्यों बजाते हो, यह तो जीतने वालों का धर्म नहीं? तुम्हारा धर्म तो है हमारी पीठ ठोकना। हम हारे तो क्या, मैदान से भागे तो नहीं, रोये तो नहीं, धांधली तो नहीं की, फिर खेलेंगे, ज़रा दम ले लेने दो, हार हार कर तुम्ही से खेलना सीखेंगे और एक न एक दिन हमारी जीत होगी, जरूर होगी।" क्या कुल के खिलाड़ी उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान देंगे? क्या यह समझेंगे कि पराजय में हंसने में भी आनन्द है, मार खाकर शान्ति से हंस और गज की मस्तानी चाल चलने में भी मज़ा है।

स्वास्थ्य सचिव का संदेश :— गुरुकुल का शिष्ट मंडल बिहार के स्वास्थ्य विभाग तथा स्थानीय शासन विभाग के मंत्री बाबू गणेशदत्त सिंह से मिलने गया था। कुछ बातचीत के अनन्तर चलने के समय 'विजय वैजयन्ती' के संचालक महोदय ने उनसे कुल के लिये संदेश मांगा। आपने कहा कि ब्रह्मचारियों को मेरी ओर से कह देना कि प्रतिदिन कम से कम आध घंटे तक व्यायाम किया करें। दूसरी बात यह कि प्रत्येक ब्रह्मचारी महाभारत का पारायण करे। आपने कहा कि मेरी सम्मति में वास्तविक रूप से प्रत्येक ब्रह्मचारी को लिये महाभारत पढनी ही चाहिये। आपने इस प्रसंग में अपनी जीवनी तथा महाभारत पढ़ने के लाभ महाभारत की ही कहानी से बताया था। लिखित संदेश आपने देना मान लिया था परन्तु जिन सज्जन पर लाने का भार था वह नहीं लाये। अतः हम अपने पाठकों के सामने इस मौखिक संदेश की ओर ही ध्यान दिलाना चाहते हैं।

जय उत्पादो विषये :— हम अपने पाठकों का ध्यान बापूजी की जयन्ती के अवसर पर होने वाली खादी प्रदर्शनी की ओर खींचना चाहते हैं। यह बड़े परिताप की बात है कि जहां चर्खे की गूंज के सिवाय हमारा मन और कुछ कल्पना नहीं करता था वहां बापू पर तकलियां तय्यार की जाय और जहां साधन भवन हो विज्ञान के पंडित हो वहां इनके बनाने की ओर यत्न भी न किया जाय। क्या यह हमारे लिये लज्जा की बात नहीं है। इस वर्ष उत्सव पर प्रदर्शिनी होगी। हमें यत्न करना चाहिये कि प्रदर्शनी का अधिकांश भाग हमारी स्व निर्मित वस्तुओं से भरी हो। जयन्ती उत्सव के साथ २ अन्य वस्तुएं भी बनवाने का निश्चय करने की कोशिश करेंगे

गगनाङ्गण में

दूसरे छोर पर — पहाड़ के निकट जो लोग बसते हैं उनका यह स्वभाव बताया जाता है कि कभी वे मध्यमार्ग को अंगीकार नहीं करते हैं। या तो इस छोर पर या दूसरे छोर पर वह होंगे। पर भगवान बुद्ध के शब्दों में कुल किनारे के मार्ग में नहीं है अपितु बीच के मार्ग में है। हमारी परिस्थिति भी कुछ ऐसी ही है। इसके प्रमाण के लिये दूर तक जाने की ज़रूरत नहीं है। दिवाली के अवसर पर गत वर्ष और इस वर्ष होने वाली खेलों को देखकर आसानी से अनुमान किया जा सकता है। पिछले वर्ष जहां एक भी विदेशी खेल को स्थान नहीं दिया गया था वहां इस वर्ष केवल विदेशी खेलों को स्थान दिया गया है। यदि पिछले साल विदेशी खेलों का बहिष्कार था तो अब की बार देशी खेलों का बहिष्कार है। पलड़ा बराबर होगया पर इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि हमारा स्वभाव या तो सर्वथा गरम होगा या सर्वथा ठंडा होगा। क्या इस स्वभाव को बदलने का कोई इलाज है?

अपना मत क्या है :— बहुत से दर्शक आते हैं और वे पूछते हैं कि गुरुकुल में भारतीयता क्या है? इसका अपना मत क्या है जिसको हम कह सकें कि यह हमारे देश की मौलिक वस्तु है। हमारी पोशाक, हमारे रहने सहने का ढंग, हमारे कार्य करने के तरीके सब पाश्चात्य हैं। यहां तक कि स्नातकों का चोला भी पाश्चात्य फैशन ढंग का है। दूसरों के गुणों को अपनाना चाहिये। गुरुकुल के आदि काल में इस मनोवृत्ति को पाते हैं पर आजकल हमारी प्रवृत्ति है उसी रूप में अपनाने की है। भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता का कौनसा रूप है? जो हमें यहां दीखता है जिसकी ओर अंगुली से इशारा कर कहा जाय कि यह भारतीय सभ्यता और भारतीय संस्कृति का रूप है। कहा जा सकता है कि पूर्व और पश्चिम दोनों का यह संगम स्थान है और ये दोनों यहां आलिङ्गन कर रहे हैं। पर इतना गाढ़ आलिङ्गन भी तो न होना चाहिये कि हमारी अवस्था एक जल खान जैसी हो। नवीन भारतीय सभ्यता का निर्माण करने वालों में हमारा कुल एक है अतः हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिये कि अपनी प्राचीन कला के आधार पर — जो लाखों वर्षों से चली आ रही है — नई इमारतें खड़ी करें। ईंट यदि विदेशी हो और मसाला भारतीय कुछ स्वदेशी हो तो कुछ हर्ज़ नहीं पर यदि इसके उलट हो तो हमें इस अनोखी लहर का सामना करने के लिये खड़ा होना चाहिये जो कि प्राचीन भारत को मूर्त रूप देने के लिये उठाया गया है।

विदाई — वर्तमान कुलमंत्री आज के बाद प्रथा के अनुसार शीघ्र अवकाश ग्रहण करेंगे। हम, इस विदाई के अवसर पर उनकी सेवाओं का, उनकी तत्परता का और सर्वाधिक उनके त्याग का तथा उनके उस पवित्र भाव का जिसके कारण आज तक वे इस काम को निबाह रहे हैं सादर अभिनन्दन —

करते हैं। उन्होंने भावी कुलमंत्रियों के लिये बहुत सा मार्ग साफ कर दिया है। कुल का नामोत्सव आपके कारण हुआ और सफलता से सम्पन्न हुआ इससे कोई इन्कार न करेगा। आपके काल में ही कुलबंधुओं ने अपने ऊपर सौंपे गये काम को पूरा किया और पूर्ण किया सराहनीय तौर से। परन्तु इतना जोड़ने का और अधिकार चाहते हैं कि कुल का जीवन प्रवाह गतवर्ष से भी शिथिल रहा। कुलमंत्री महाशय की ओर से प्रकाशित होने वाला अखबार 'आजकल' के केवल २ अंक प्रकाशित हुए। गुरुकुल के वायुमंडल में जितना स्थान वर्तमान आन्दोलनों का था उतना भी नहीं रहा। एक पराधीन जाति के शिक्षणालय में राजनीतिक भावों का अन्य भावों से ज्यादा होना स्वाभाविक है। पर इस साल इसकी मात्रा कम होगई है। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह कुलमंत्री का दोष नहीं है क्योंकि कुलमंत्री तो केवल महाविद्यालय के अधिकांश विद्यार्थियों के विचारों की सजीव मूर्ति है। अतः तो गत कुलमंत्री अपने कार्य में - इस काल में जब जागृति पैदा करने वाले सब कारण एक २ करके दूर होते जाते हैं - सफल हुए हैं। हम इस सफलता पर विनम्र हृदय से कुलमंत्री महोदय को बधाई देते हैं।

भविष्यवाणी - अगला कुलमंत्री कौन होगा सबके दिमाग इस बात का उत्तर देने की चेष्टा कर रहे हैं। दो दो एक २ उम्मेदवारों के नाम अपनी अंगुली पर गिनते हैं। इस सम्बन्ध में भविष्यवाणी करना बड़े साहस का काम है। इस अवस्था में भविष्यवाणी करना भी सहज नहीं। पर अवस्थाओं को दृष्टि में रखकर कहा जा सकता है कि अगले कुलमंत्री वर्तमान उपकुलमंत्री ही बहुत संभव होंगे। हम अपने अनुमान की सचाई पर पाठकों को विश्वास कराने के लिये कहने का साहस नहीं करते।

अंग्रेजी का राज्य - कुल में अंग्रेजी का राज्य प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है। अंग्रेजी का अभ्यास करना उस पर प्रभुत्व संपादन करना स्तुत्य काम है। पर कुल के वातावरण को अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी से भरपूर करना कभी उचित नहीं कहा जा सकता अंग्रेजी के एक दो शब्दों के बिना प्रयोग किये किसी वाक्य का हमारे मुंह से निकलना हमारे लिये उचित नहीं कहा जा सकता। कहां तो पत्रों के पते भी हिन्दी में लिखे जाते थे कहां अब सर्वत्र विज्ञप्तियां, सूचनायें आज सब अंग्रेजी में धरे जाते हैं। कहां वह दिन था जबकि स्वा. देवदत्तजी सि.प. श्री डाकर जी से लड़ा करते थे कि "आप अपने सूचना पट्ट पर हिन्दी में लगवाईये। वरना न इनको न टांगिये। यदि कोई आपको लिखने वाला नहीं मिलता तो लाईये मैं लिखके या लिखवाके देता हूं।"

खुशी क्यों मनावें

(श्री पं. चन्द्रगुप्त जी. विद्यालंकार)

आज इस खुशी के दिन में एक बार गंभीर होकर विचार करने वाले व्यक्ति के मुंह पर हंसी और आंखों में आंसू आये बिना नहीं रह सकते। हम लोग यह खुशी क्यों मना रहे हैं? वैयक्तिक या पारिवारिक दृष्टि से इस गये गुजरे जमाने में भी अपनी इच्छाओं और उद्देश्यों के अनुसार हमारे लिये सुख अथवा दुःख के अवसर हो सकते हैं, परन्तु हमारी हतभाग्य जाति के लिये सामूहिक रूप से आज कौन सा खुशी का अवसर आ उपस्थित हुआ है, यह विचारणीय प्रश्न है। आज जब कि भाई भाई की खून का प्यासा हो रहा है, हम लोग गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं इस प्रकार हर्षोत्सव मनाना संगत नहीं कहा जा सकता।

सुनते हैं - आज के दिन हमारे पुरखा अपने अनन्त वैभव की प्रदर्शनी किया करते थे - सुनते हैं - आज के दिन हमारे देश का एक सर्वप्रिय सम्राट बहुत समय बाद अपनी प्रजा से दिल खोल मिला था। यह सब सत्य है; परन्तु आज इस घड़ी में उस अतीत को याद करने से क्या होगा? भला कभी कोई दिवालिया अपने प्राचीन वैभव को याद करके आठ आठ आँसू न गिरा कर खुश भी हुआ है।

तो फिर क्या हम लोग एक विजीविशम को ही सजा रहे हैं, एक खाली सन्दूक पर बड़े २ ताले जड़ कर उसे कुबेर का खजाना बनाने का यत्न कर रहे हैं - कुछ कागज के फूलों पर इतर डाल कर उन्हें सचमुच का प्राकृतिक सजीव फूल बनाने का यत्न कर रहे हैं। नहीं, इन सब का उद्देश्य किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न करने का नहीं है। हमारे आज के इस समारोह का उद्देश्य कुछ और ही है। आज का यह उत्सव अपने को खुश करने के लिये नहीं है आज हम लोग सचमुच रोने के लिये ही हंस रहे हैं, अगले वर्ष भर तक अपना पेट खाली रखने के लिये ही हम आज सहभोज कर रहे हैं इस सब का अभिप्राय है।

मूर्ख संसार समझता है कि आज के दिन हम आर्यजाति के लोगों की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहता। दुनिया देखती है कि आज के दिन हम लोग दीये जलाते हैं, अपने घरों को सजाते हैं, अच्छा भोजन करते हैं, नये वस्त्र पहिनते हैं। संसार के लिये ये सब प्रसन्नता के चिन्ह हैं।

परन्तु ये सब प्रसन्नता के चिह्न उन लोगों के लिये हैं जो साधारण अवस्था में हैं। हम लोग असाधारण दशा में हैं, कभी कभी हमारे रोने का अभिप्राय हंसना होता है और कभी २ हमारी हंसी रोने की अपेक्षा भी अधिक करुणाजनक होती है। आज हमारी स्थिति दिवालिये की सी है जो किसी विशेष अवसर पर स्वयं रोने के लिये अपने बड़े २ सन्दूकों की प्रदर्शनी

करता है जिनमें कि एक समय उनका अतुल धन रहा करता था। ठीक इसी प्रकार आज की दीपावलि का अभिप्राय भी कुछ और ही है। हम लोग कर्ज भर वचत करके आज जो वस्त्र पहिनते हैं कभी भर भूखा पेट रहकर आज जो स्वादु पदार्थ खाते हैं, उन सब का उद्देश्य भी केवल अपनी खुशी मनाना ही नहीं है।

दुनिया भर में मुकाबिला हो रहा है। हम लोग एक समय इस मुकाबिले में, इस बड़ी होड़ में, सबसे आगे थे परन्तु आज दुर्भाग्य वश हम लोग पिछड़ गये हैं। तो इस पिछड़ी दशा में जबकि हम में से 80 प्रति शत लोग अजीर्ण से ही नहीं अपितु साधनों की कमी से पेट भर खाना नहीं पाते, जबकि हम में से एक बहुत बड़ी संख्या तपस्या के भाव से नहीं परन्तु वस्त्रों की कमी के कारण सर्दी गर्मी सहती है — आज हम लोग दीये जलाते हैं, नये वस्त्र पहिनते हैं, उत्तम भोजन करते हैं; तो इसका अभिप्राय खुशी मनाना नहीं परन्तु अपने दिलों में उसी दिवालिये की तरह जलन पैदा करनी है।

आज इन भड़कीले साधनों द्वारा हम लोग फिर उस दिन जिस दिन कि हमारे पराक्रमी पूर्वज लक्ष्मी माता की पूजा किया करते थे जिस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अपनी कठोर प्रतिज्ञा पूरी करके अपने घर वापिस आये थे अपने हृदयों में एक कभी न बुझने वाली जलन पैदा करने चले हैं। ईश्वर करे कि आज का दिन हम सोते हुओं के लिये एक ठोकर का काम करे, हम अनुभव करने लगें कि सच्ची दीपमालिका मनाना गुलाम जाति का काम नहीं है। उस दीप मालिका के दिन की ओर हम तेज़ी से बढ़ें जिस दिन दीपों की — सच-मुच हमारी हार्दिक प्रसन्नता की द्योतक होगी।

अंचल में

स्विट्ज़र लैण्ड का रविवार

मैं भूमि के सौन्दर्य को देखने निकला भूमि रंग बिरंगे उपहार दे रही थी। इस सौन्दर्य मन ही मन सबको तुच्छ समझता था। ये सब अलंघ्य ऊंचाईयाँ, बिल्कुल सीधी ऊंची ज़मीन, उत्तुंग घाटियां, अजीब बर्फ़ीली टुकड़े, हिमाच्छादित पर्वतीय टुकड़े चोटियां ये मानो अविवेक का परिणाम थे।

सायं कालीन दृश्य.

आदित्य वार को उपासकों को बुलाने के लिये सतत नाद करने वाले गिर्जाघर का घण्टा हवा में गूंज उठा। प्रार्थना के रंगीन स्थल में जहां गान गाये जाते थे – वहां हमने पुरानी प्यारी गीतिका गाई जो होन के गान को स्मरण दिलाती थी। इंगलिश चर्च के संगीतने होने से बाहिर निकल कर विशेषतः इटली तथा स्विट्जरलेण्ड में मुझे बिल्कुल नहीं लुभाया। हमारे गान को सुनकर भूरी आँखों वाली स्विस लोग क्या कहते होंगे जबकि प्रत्येक स्विस और इटलियन अपने स्वर को मानता है। हम अपने को पापी समझते थे पर मैं इस की तरफ़ इतना ध्यान न देता था पापी तो मैं हो सकता हूं पर अभागा कभी नहीं। सूर्य जब तक सुनहरे रंग में चमकता है - प्रकृति जब तक प्रसन्न करती है तब तक यह बात नहीं हो सकती है।

तदनन्तर हमने राजकीय परिवार के लिए प्रार्थना की। फिर उस सुंदर संसार के सुंदर दिन के प्रति कृतज्ञता मयी प्रार्थना करी।

भोजन के अनन्तर वहां का आकाश हीरकाच्छादित तथा रविवार की पहिली अगस्त के दिन जिस दिन स्विस लोग राष्ट्रीय एकता मनाते हैं लाल सुनहरी लालटेनों द्वारा बड़ा ही जादू भरा था।

सभी पर्वत चोटियों पर वनाग्नि के समान वहां के लालटेनों का प्रकाश मालूम पड़ता था। पहाड़ों पर बसने वाले लोग लालटेनों को लेकर गलियों में परेड करते थे। अन्त में वे लोग एक होटल तक आकर ठहर गये और एक उपदेश दिया गया। फिर God save the Kings का भजन आकाश भेदी शब्दों में गाया गया पर मुझे वह बहुत दुःखी बना रहा था मैं सोच रहा था क्या कभी होन के समुद्र के चारों ओर के किनारों पर इसी प्रकार का प्रकाश होगा ?

बंगीय रंगमंच

स्टार थियेटर — प्रताप चन्द्र जौहरी ने इस नाटक के व्यापार से बहुत सा लाभ उठाया था इसीलिए गुर्मुख राय भी इसी व्यापार में कूद पड़े. इन्होंने स्टार थियेटर की स्थापना Beaudon Street में की जिस स्थान पर अब मोन मोहन थियेटर है। गुर्मुख राय इसके मालिक बने गिरीश चन्द्र इसके व्यवस्थापक बने और उसके अन्य साथी अमृत लाल मित्र और अमृत लाल बोस आदि इसके मुख्य अभिनायक बने। इसका प्रथम खेल 'दक्ष यज्ञ' हुआ। गुर्मुख राय जल्दी ही काल कवलित होगए। और उसकी जायदाद के स्वामी ने स्टार थियेटर को अमृत लाल बोस, हीरा प्रसाद बोस और अमृत लाल मित्र को बेच दिया। इस समय गिरीश बाबू सरलता से ही हिस्सेदार बन सकते थे पर इन्होंने इन्कार कर दिया और अपने ४ शिष्यों को व्यवस्थापक बना आप मैनेजर बन नीचे रहने लगे। एवं यह नाटक मंडली सफलता पूर्वक अपना काम करने लगी।

एमेरेल्ड नाटक मंडली — कलकत्ता के करोड़ रुपयों के मालिक गोपाल लाल सील ने उस समय 'स्टार थियेटर' को खरीदना चाहा और इसके बदले में बहुत बड़ी रकम देनी चाही परन्तु बड़े वाद विवाद के पश्चात् यह तय हुआ कि वह बेचा तो जाय परन्तु शुभ संकल्पों को नहीं और वे स्टार थियेटर के नाम से एक और रंगमंच का निर्माण करें। गोपाल बाबू ने इसका नाम एमेरेल्ड थियेटर रक्खा। उसका सबसे प्रथम खेल पाण्डव निर्वासन हुआ। यह खेल बाबू केदार नाथ चौधरी द्वारा उस समय लिखा गया था जब कि अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी, महेन्द्र नाथ मोतीलाल सूर आदि इसके मुख्य अभिनायक थे।

दुविधा — स्टार नाटक मंडली के पुराने मालिक ने कार्नवालिस स्ट्रीट में भूमि खरीद ली थी परन्तु गिरीश चन्द्र इसी में सम्मिलित होने वाले थे। इस समय गोपाल बाबू ने देखा कि मैं गिरीश चन्द्र के बिना इस व्यापार को चला नहीं सकता अतएव उसने २० हजार रुपये देकर भी गिरीश बाबू को रखना चाहा। गिरीश बाबू अब बड़ी दुविधा में पड़े. वे अपने शिष्यों को भी छोड़ नहीं सकते थे और दूसरी ओर वे गोपाल बाबू की आवाज़ से भी डरते थे। इस समस्या का हल इस प्रकार हुआ कि वो (गिरीश बाबू) एमेरेल्ड थियेटर में ही रहें पर अपने शिष्यों को जिनको कि धन की बड़ी आवश्यकता थी, धन से सहायता करेंगे॥

(असमाप्त)

आश्चर्य मय भारत

व्यवस्थापिका सभा के सदस्यों के सामने अपने विदाई वाले भाषण में लार्ड रीडिंग ने भारत को 'आश्चर्यमय' कहा था। वास्तव में भारत वर्ष कई तरह से आश्चर्य मय है भी, निस्संदेह उसकी आश्चर्यमयता ही उसके लिये विपत्ति का कारण बनती रही है।

भारत वास्तव में आश्चर्य जनक भारत है जिसके वस्त्र व्यवसाय को मारने के लिये (प्रोफेसर H.H. Wilson के शब्दों में) "अंग्रेज कारीगर राजनैतिक अन्याय रूपी शस्त्रों को प्रयोग में लावे और अन्त में उन्होंने उस प्रतिस्पर्धी के गले में फांसी लगादी है जिसके साथ वे समान शर्तों पर सम्मुख समर न होसकते थे।"

भारत 'आश्चर्यमय' देश है जिसका आन्तरिक व्यापारिक विदेशी व्यापारियों द्वारा विदेशी मूल धन से चलाया जा रहा है और इसीलिये व्यापार का लाभ भारत में न रह यूरोप चला जाता है।

भारत आश्चर्य मय देश है जिसके अत्यधिक खर्चीली प्रबन्ध करने वाली एजेन्सी न केवल उसके लिये ही लाई जाती है पर मि. गोखले के शब्दों में जो उन्होंने भारतीय खर्च पर बैठाये गये कमीशन के सामने कहे थे कि नैतिक बुराई है जो कि उससे बहुत अधिक है। आधुनिक प्रणाली से भारतीय जाति का एक तरह से शोषण होती जारही है। हमें अपनी सारी आयु के दिन तुच्छता के वायुमंडल में बिता देने होंगे और हमारे बड़े से बड़े आदमी को झुकना पड़ेगा ताकि वर्तमान प्रणाली की आवश्यकता आवश्यकता पूरी हो सके।

भारत वह आश्चर्य मय देश है जो कि सर हेनरी प्रेकनबरी के उपरोक्त कमीशन के सामने कथित शब्दों में हजारों इंगलैण्ड निवासियों को नौकरी देता है। भारत ब्रिटेन की करोड़ों रुपयों की पूंजी लगाता है और इसलिये भारतीय व्यापार ब्रिटेन के लिये बहुत लाभ का है।

भारत आश्चर्यमय देश है जिसकी भूमि कर प्रणाली जैसा स्व० श्री रमेशचन्द्र दत्त अपनी 'ब्रिटिश भारत का आर्थिक इतिहास' नामक पुस्तक में लिखते हैं — अपने कच्चे माल के निर्यात के लिये बाधित है जिसका बहुत सा भाग उसकी जनता के लिये आवश्यक है।

भारत आश्चर्यमय देश है जो अत्यन्त गरीब होता हुआ भी अपनी आवश्यकता से ज्यादा अनुपात में ब्रिटिश सैनिकों के पोषण के लिये बाधित है। और जिसको अनिवार्य अपनी आमदनी का ½ भाग खर्च करना होता है।

भारत आश्चर्य मय देश है जिसको लण्डन में इण्डिया हाउस बनवाने के लिये 2 लाख पौंड देने के लिये उदारता दिखलाई गई है जबकि ब्रिटेन की गवर्नमेन्ट उपनिवेशों की गवर्नमेन्ट से Colonial Office बनाने के लिये एक पैसा भी नहीं पा सकी और अपने खजाने से 100000 पौंड इसके निर्माण में दिये।

भारत वह आश्चर्य मय भूमि है जो कि भारत सचिव के दफ्तर के व्यय के लिये

सालाना देती है जबकि ब्रिटिश ब्रिटेन लंडन में कोलोनियल औफिस के लिये सब खर्चों को लिये अपने खज़ाने से चुकाता है।

भारत आश्चर्यमय भूमि है जहां कि नेता प्रति निर्धनत्व के करनों का सम्पता पूर्ण सिद्धान्त पालन करने की अपेक्षा लाड़ला अधिक अच्छा समझा जाता है।

भारत आश्चर्यमय भूमि है जिसको कि ६ किंग एडवर्ड VII के राज्याभिषेक के अवसर स्थानीय गवर्नमेंट द्वारा लंडन में निमन्त्रित किये हुए राजकुमारों और जागीरदारों के सत्कार का खर्च भारत के Secretary of State लार्ड जोर्ज हैमिल्टन को देने के लिये प्रेरित किया गया था.

भारत आश्चर्यमय देश है जिसके शासक कर्म प्रायः सर्वदाही राजकीय प्रतिज्ञाओं को कागज़ के टुकड़े की तरह रद्दी की टोकरी में डाल देते हैं।

भारत आश्चर्यमय देश है जहां प्रति आदमी की वार्षिक आमदनी दादाभाई नौरोजी के कथनानुसार २०) लोर्ड कर्ज़न के कथनानुसार २६) है जबकि इंगलैण्ड में प्रत्येक आमदनी की वर्तमान अधिकारियों की गणनानुसार ३३ पौंड है।

भारत आश्चर्यमय देश है जहां सर W. W. हन्टर के अनुसार ४ करोड़ आदमी एक समय बिना भोजन के गुज़ारा देते हैं या सर चार्ल्स इलियट के शब्दों में किसानों की जनसंख्या का आधा भाग सो साल में भर के एक दिन भी दोनों समय भोजन नहीं पाता।

भारत आश्चर्यमय देश है जहां शिक्षित जनों की संख्या जनसमुदाय का १५० साल में भी अधिक अभावपूर्ण ब्रिटिश शासन के बाद जनसंख्या ६ प्रतिशतक भी नहीं बढ़ी है जबकि इंगलैण्ड की जनता का ९६% शिक्षित है।

भारत आश्चर्यमय देश है जहां यद्यपि जनसंख्या में ७५ प्रतिशतक किसान हैं और राज्य का का मुख्य भाग भी कृषि से प्राप्त होता है तथापि वह अत्यन्त चीज़ों में से हैं जो राज्य की तरफ़ से उपेक्षित हैं।

भारत आश्चर्यमय देश है जिसके शासक उस दोष की परवाह करते हुए नहीं प्रतीत होते जो सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के (पूना सभा पतित्व की हैसियत से दिये गये व्याख्यान) के शब्दों में निम्नप्रकार से है -

"एक दरिद्रता में फंसी हुई जनता राजनैतिक आपत्ति को सूचित करती है जिसके परिणाम की अतिशयोक्ति करना कठिन काम है।"

भारत आश्चर्यमय देश है जिसके शासक को शोक से कहना पड़ता है कि "जनता में विश्वास और शर्मसता में निश्वास सफल साम्राज्य के विजय का रहस्य है।" परन्तु इन बातों को भूल जाते हैं।

जननी.

जननी ।।

जय जय जननी भारत जननी ।
जयति भव-भय भूरि भंजनि, दुःख दारुण हरणि ।
जयति जय जय भुवन-मोहनी, जयति मंगल करणी ॥ जय ॥

जयति जय जय मुंड मालिनी, जयति अरि-दल-दलनि ।
जयति जय जय शक्ति-प्रसविनी, जयति सरसिज शयनी ॥ जय ॥

जयति जय अघ भूल नाशिनि, जयति तारण तरनि ।
पद्मपद-रज देहु अपन   अशरण शरणि ॥ जय ॥

जाते समय

ज्वार उतर गया है, तीव्र धूप जिसने हमारे जीवनों को उथल पुथल करदिया हमारे मार्ग की दिशा बदल दी थी गुजर गया है। प्रबल वायु का झोंका जिससे जीवन स्रोत उद्वेलित होरहा था मन्द पड़ गया है असाधारण अवस्था समाप्त होगई है। अब फिर यथा पूर्व निश्चय के अनुसार साधारण जीवन में साधारण अवस्था में प्रवेश कर रहे हैं। एक प्रकार की गर्मी जो शरीर में व्याप्त होगई थी अब उतर गई है। क्षुब्ध वातावरण शान्त हो रहा है। जब सब अपने जीवन के दैनिक कार्यों में प्रवृत्त होरहे हैं 'विजय वैजयन्ती' इस समय सादर आप भाईयों से, सहयोगियों से और हृदय वासिनी मूर्ति से विदाई मांगती है।

अपने कार्य की समालोचना करना हमारा कार्य नहीं है। जो कुछ किया आपकी प्रसन्नता के लिये किया। यदि आप प्रसन्न हैं तो हमारा यह सौभाग्य है। आपने "वैजयन्ती" को अपनाया है इसी कारण आज इन निर्बल हाथों में होकर भी आकाश चूम रही है इसके लिये हम आभारी हैं।

'विजय वैजयन्ती' को जिन्होंने अपना अंग बना लिया है 'विजय वैजयन्ती' जिनकी है उनको धन्यवाद देना उनका अपमान करना है। हम हृदय से अपने कुशल कवियों के, चित्र-दक्ष चित्रकारों के जिनकी बदौलत 'वैजयन्ती' इस रूप में प्रकट होसकी है। हमारा हृदय कृतज्ञता से झुका हुआ है। इसी विनम्र-हृदय से हम उनका सादर धन्यवाद करते हैं। आशा है कि 'वैजयन्ती' को आप अपनाये रहेंगे। जिन्होंने उत्साह दिलाकर उसको पुष्ट करके भी निरुत्साह किया है हम उनके भी आभारी हैं।

व्यवस्थापक

परमेश

जयति

जय जय जय अखिलेश

जयति सुरेश, जयति गणेश, मंगल करण महेश

जन मन-रंजन, भवभय भंजन, कलि मल दहन दिनेश।

जय जय जय अखिलेश

भारत मां यों दुःखित हुई क्यों ?

गलित सुवेश, मलिन विशेष, बिखरे कुंचित केश,

हरे कहां आके ना नागर, भारत पति भुवनेश।

जय जय जय अखिलेश।

माला

आओ! माला मनोहर बनावें

बेला गूंथे, जूही गूंथे। आओ।

चुन चुन कर अंचल भर भर, कलियां सुकोमल लावें

प्रेम के तागे में उनको सजावें। आओ।

भक्ति भरे ले युगल करों में खड़ी रहें हरसावें।

भारत माता को आके पिन्हावें॥

आओ माला मनोहर बनावें

बेला गूंथे जूही गूंथे। आओ।

क्रान्तिकारी के चरणों में—

आज भारत के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक प्रान्त में प्रत्येक दिशा में क्रान्ति की धारा तीव्र वेग से बह रही है। प्राचीन और अर्वाचीन सभ्यताओं में पुरातन और नूतन विचारों में प्राचीन और नवीन संस्कारों में तथा पुराने और नए जगत् में एक तीव्र संघर्षण हो रहा है। दोनों एक दूसरे का स्थान लेने का यत्न कर रहे हैं। क्रान्ति की चिनगारियां प्राचीनता की शानदार अट्टालिका को भूमिसात् करने में प्रयत्न शील हैं। आज जो भट्टी जल रही है जिसका आलोक दिग्दिगन्त में फैल रहा है उस भट्टी को प्रज्वलित करने वाले इस क्रान्ति युग की सूचना देने वाले अग्रदूत क्रान्तिकारी दयानन्द! तुम्हीं हो कारण आज तुम्हारे चरणों में युवक भारत सादर प्रणाम करता है।

× × ×

आज हिन्दु जाति ने करवट बदली है उसने आंखें खोलनी आरम्भ कर दिए हैं, नवीन हिन्दू जाति को जन्म देने आज को पुग जा रहा है। उसकी पहली ठोकर लगाने वाले उस पर प्रबल प्रहार करने वाले तुम्हीं हो। जिसके फल स्वरूप आज हिन्दू जाति अपने को जाति समझने के योग्य हुई है। यह सत्य है कि तुम्हारे इस कार्य का गुरुत्व हम अबोध बालक समझ नहीं पाए पर 'युग प्रवर्तक ऋषि' इस प्रदीप्त भट्टी की ज्वाला से शुद्ध होकर निकली विशुद्ध संस्कृत हिन्दू जाति तुम्हारे चरणों में अवश्य शीश झुकाएगी और तुम को क्रान्तिकारी दयानन्द कह कर दिशाओं को तुम्हारे जय-जयकार से व्याप्त करेगी।

× × ×

आज भारत का कोई परिवार सुखी नहीं है। प्रत्येक नगर अशान्ति की क्रीड़ाभूमि बन रहा है। प्रत्येक भारतीय हृदय जातिगत वैमनस्य, साम्प्रदायिक ईर्ष्या द्वेष का क्रीड़ा स्थल हो रहा है। शान्ति के स्थान धर्ममन्दिर और हृदय की अशान्ति को बुझाने वाले धर्म आज विकृत होकर, नया रंग और नवीन रूप धारण कर इस पवित्र भारत भूमि को रणभूमि बना रहे हैं। इस रक्त धारा के बीच हत्कुण्डों के शोर के बीच दिल्ली में बैठी तुम्हारी मूर्ति स्मरण हो आती है। मज़हब ने उस समय ऐसा भयङ्कर रूप धारण न किया था जैसा नग्न रूप उसने आज धारण किया हुआ है पर उस समय तुम्हारे विश्वासों ने उस स्वर्गीय युग को खो दिया। यदि उस समय कोई सूत्र ढूंढ निकालते, यदि उस समय कोई मार्ग निकाल लेते।

विजय- वैजयन्ती

यदि तुम ने उस समय 'एक ईश्वर पर विश्वास' 'वेद ईश्वरीय ज्ञान है' के मसलों को विचारकों का विवाद समझ कर छोड़ दिया होता तो निःसन्देह उसी नगरी में संसार के सर्व श्रेष्ठ मनुष्य को निराहार व्रत न ग्रहण करना पड़ता, न सारे भारत के दिमाग और भारतीय समाज के शत शत हृदयों द्वारा शान्ति की झण्डी हिलाने पर भी, जगह जगह पर रक्त के फव्वारे छुटते न उस समय ही पतिहीना पुत्रहीना माताओं के दारुण चीत्कार से दुःखी हो आकाश रो पड़ता और सूर्य भगवान बादलों की चादर के पीछे मुंह छिपाते। कदाचित् तुम्हारी दूरदर्शी बुद्धि ने आज के विचारों और दृश्यों को अपनी कल्पना से समझ लिया हो इस कारण तुम ने 'एकता सम्मेलन' बन्द कर दिया। आज एकता के प्रेमी तुम्हारी उस एकताभिलाषी हृदय के सामने नम्र भाव से शीश झुकाते हैं।

X X X

आज भारतवर्ष ज्ञान की अलौकिक शक्तियों से आलोकित हो रहा है। इसके सुदूर प्रान्तों में भी किरणें पहुंच रही हैं। ज्ञान आज लोहे के मज़बूत सन्दूक में बन्द नहीं है, जिस की ताली एक विशेष प्रभुत्वशाली सम्प्रदाय के पास हो। आज वह ज्ञान का स्रोत निरवच्छिन्न रूप से प्रवाहित हो रहा है। प्रत्येक प्राणी जिस में ताकत है ज्ञान सरिता में गोता लगाकर आनन्द प्राप्त कर सकता है। लोहे के गढ़ में सुरक्षित ज्ञान भण्डार को सर्वसाधारण में वितीर्ण करने वाले ज्ञान सरिता के प्रवाह को बांधों के बन्धनों से मुक्त करने वाले दयानन्द! आज इस दीपमाला से आलोकित भारतवर्ष आन्तरिक ज्योति पाकर तुम्हारे चरणों में सादर प्रणिपात करता है। ब्राह्मणों के प्रभुत्व को उन के माया जाल को, उन के द्वारा फैलाए हुए अन्धकार को और उन द्वारा स्थापित गुरुडम के शानदार प्रसाद को अपने प्रबल प्रहार से ढहाने वाले दयानन्द! स्वतंत्रता प्रिय मानव समाज आज तुमको भक्तिभाव से नमस्कार करता है।

X X X

अन्ध श्रद्धा के दृढ़ गढ़ को तर्क के तीरों से सर करने वाले, अन्ध विश्वास की अन्धकार पटली को तर्क सूर्य की प्रखर किरणों से छिन्न भिन्न करने वाले, निर्बोध सरल समाज को तर्क का तीक्ष्ण खड्ग देने वाले दयानन्द! विचार-स्वतंत्रता के जन्मदाता हो पर उस को तुम ने सर्वथा बन्धन रहित नहीं कर दिया है, उस की उच्छृंखलता के लिए प्रतिबन्ध उपस्थित कर दिया है। इस बीसवीं शताब्दी में जब रेशम के सूत का बन्धन भी लोहे की जंजीर समझी जाती है, तब तुम्हारा इतना बड़ा बन्धन लगाकर नए युग के लोगों के लिए मैदान का क्षेत्र सीमित करना हमें आश्चर्यजनक प्रतीत होता है।

विजय वैजयन्ती.

इस का रहस्य तुम्हारी अन्तर्भेदिनी दृष्टि ही जान सकती है। पर आज यह बन्धन समाज-शरीर को रोगों का घर बना रहा, यह बन्धन नई क्रान्ति को जन्म दे रहा है, इस बांध से जल गदला होता जा रहा है, इस बांध को तोड़ने के लिए वेगवती लहरें टक्करें मार रही हैं अतः क्रान्तिकारी दयानन्द! आज क्रान्ति के उपासक तुम्हारे सामने मस्था नवाते हैं और क्रान्ति की चिनगारियां चारों ओर रवबेर कर तुम्हारे शुद्ध उद्देश्य को पूरा करने जा रहे हैं। स्वर्ग से तुम्हारी अन्तरात्मा उन पर दैवीय भावों की पुष्प वृष्टि करे।

× × ×

जड़वाद भोगवाद और नास्तिक वाद के गढ़ पर अध्यात्म वाद की झण्डी फहराने वाले आज तुम्हारी आत्मा इन दिव्य दीपों के उज्वल उजाले में, संसार के बन्धनों को काट कर मृत्यु के जाल को छिन्न भिन्न कर मुक्त हो गई, अमर होकर भारत के नाम को और इन दीप शिखाओं को अमर कर गई। भारत का सन्देश जिस को तुमने हिमालय के हृदय को भेद कर बहने वाले झरनों के संगीत में और भारतीय वनों में तरु-पल्लवों से सुना था उस आत्मा की अमरता का पवित्र सन्देश तुमने अन्तिम सांस के साथ सुनाया है। आज वह सन्देश ही भारतीयों के लिए पवित्र मंत्र है। जिस मंत्र से दीक्षित होकर भारतीय नवयुवक सूली पर हंसते २ चढ़ना सीख रहे हैं, तोपों को गोलों के सामने, मैशीनगन की बौछार के सामने खड़ा होना सीख रहे हैं। जो मंत्र उन की भुजाओं में सत्याग्रह का अमोघ अस्त्र पकड़ने की क्षमता स्वातंत्र्य-पताका थामने की अद्भुत शक्ति पैदा कर रहा है उस पवित्र मंत्र के दाता आचार्य दयानन्द! नवयुवक भारत शिष्य भाव से तुम्हारे चरणों में अपना माथा नवाता है।

× × ×

क्रान्ति के अग्रदूत! यह नितान्त सत्य है कि तुम्हारी क्रान्तिकारी कल्पनाओं को, तुम्हारे क्रान्तिकारी विचारों को, उलट पुलट पैदा करने वाले कार्यों को हम ने नहीं अपनाया। तुम्हारी स्मृति में विगत वर्ष इकट्ठे होकर हमने क्रान्तिकारी दयानन्द को तुम्हारी गुरुभूमि में ही दफना दिया है। आज हम तुम्हारे नाम और आर्य समाज के पुजारी बनकर अपना जाल फैला रहे हैं। अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहे हैं। हमारी दृष्टियां इतनी उदार और विस्तृत नहीं हैं कि उस पार के दृश्य को देख सकें। तुम्हारी उठाई क्रान्ति पताका आज हमारी हीनता के कारण झुक गई है और धूल में लोट रही है। आज क्रान्ति की प्रदीप्त भट्टी श्मशान हो गई है उस के दहकते शोलों को राख ने ढक लिया है यह भी सत्य है पर यह सब अन्धविश्वास युक्त अडा अन्ध दृष्टि भक्ति तुम्हारे प्रति जो हमारे हृदय में मूर्तिमान होकर स्थित है उसी का फल है। जिस दिन हम भी अन्तर्ज्योति के प्रकाश से प्रकाशित हृदय दीपक

बालकर आत्म साक्षात्कार करेंगे उस दिन फिर यह क्रान्ति की लाल पताका गगन में फहराती नज़र आएगी।

× × ×

आज श्रद्धाभरे हृदय से दी हुई पुष्पाञ्जलि को चरणों में स्वीकार करो। ताकि वह समय जल्दी आए जब हम तुम्हारी क्रान्ति की प्रतिमा के दर्शन कर सकें, हम सच्चे क्रान्तिकारी सिद्ध हों।

महात्मा जी का हिन्दी-प्रेम :— हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने में महात्मा जी का कितना बड़ा हाथ है यह किसी से छिपा नहीं है। महात्मा जी गुजराती हैं पर आप मद्रासियों और नवागन्तुक विदेशियों से केवल अंग्रेजी में बोलते रहना बजाय गुजराती में या हिन्दी में सर्वदा बोलते रहते हैं। यदि आपको किसी अंग्रेजी शब्द की हिन्दी नहीं मालूम होती तो आप रुक जाते हैं और पहिले उस शब्द की हिन्दी पूछकर बोलते हैं। एक बार महात्मा जी हमारे अर्थशास्त्र के उपाध्याय जी से बातें करते थे कि सहसा रुक गये और बोले कि Sub Institution के लिये हिन्दी में क्या शब्द है। उपाध्याय जी ने उपसंस्थायें इसके लिये उपयुक्त शब्द बताया। शब्द जान लेने के उपरान्त महात्मा जी ने वाक्य शुरू किया और आगे बात चली। प्रतिदिन ऐसे बीसियों उदाहरण उनके चरणों में बैठने वाले को मिलते हैं। क्या कुलवासी महात्मा जी के इस हिन्दी-प्रेम को अपने हृदय में स्थान देंगे जिस पर कि हमारा अधिकार भी है।

विजय चिन्ह — महाविद्यालय वाग्वर्धिनी सभा की ओर से वार्षिकोत्सव पर वादविवाद सम्मेलन होने लगा है। इस समय के लिये एक 'विजय चिन्ह' बनवाने का परामर्श श्री पं० सत्यकेतु जी ने दिया था और उन्होंने इसके लिये परिश्रम भी किया था। पिछले साल इसके लिये एक उपसमिति भी बनाई गई थी कि 'विजय चिन्ह' का क्या स्वरूप हो। जहां तक हमें ज्ञात है कि उपसमिति किसी निर्णय पर पहुंच गई थी। जितने रुपयों की ज़रूरत थी उतने सभा के पास न थे और गुरुकुल से रुपया भी न मिला अतः यह विचार कार्यरूप में परिणत न हुआ। पर अब जब कि सभा के पास इस फण्ड में काफ़ी रुपया है आगया है सभाओं के कार्यकर्ताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिये। जत-जयन्ती के समय अन्तर्विद्यालय वादविवाद सम्मेलन होना कठिन नहीं है। यह काम ऐसा है जिसकी ओर सभा के वर्तमान अधिकारियों को इस ओर ध्यान देना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि इस फंड में आया रुपया दाता महोदय वापिस मंगाना आरम्भ करें।

गुरुकुलीय.

चतुरंगी सान्मुख्य समाप्त.

—: वॉली बॉल के फाइनल में पटियाला दल पराजित :—

क्रीड़ा क्षेत्र में "मुकुर" और "हीरक" दलों की वीरता

दोनों दल समान ही रहे !!

आज प्रातः काल एक क्रीड़ा सान्मुख्य में "हीरक" और "मुकुर" दल की स्पर्धा थी, खिलाड़ियों में अपूर्व उत्साह और महत्वाकांक्षाएँ थीं। दर्शकों की हर्ष ध्वनि से व्योम भर गया। खिलाड़ियों ने हाथ दिखाए। अन्त में दोनों दल समान ही रहे। पश्चात् सब खेल समाप्त हुए।

किंवदन्ती है कि एक पाद कन्दुक का बड़ा सान्मुख्य होने वाला है। खिलाड़ियों के नाम भी घोषित हो चुके हैं।

—:o:—

आज सायंकाल - महाविद्यालय के आंगन में

दीपमाला

के उपलक्ष्य में कुलवासियों की बृहत् सभा होगी श्री आचार्य सभापति के आसन पर विराजित होंगे।

रात को

अग्निक्रीड़ा होगी तथा गुब्बारे छोड़े जावेंगे खेलों का भी प्रबन्ध किया गया है
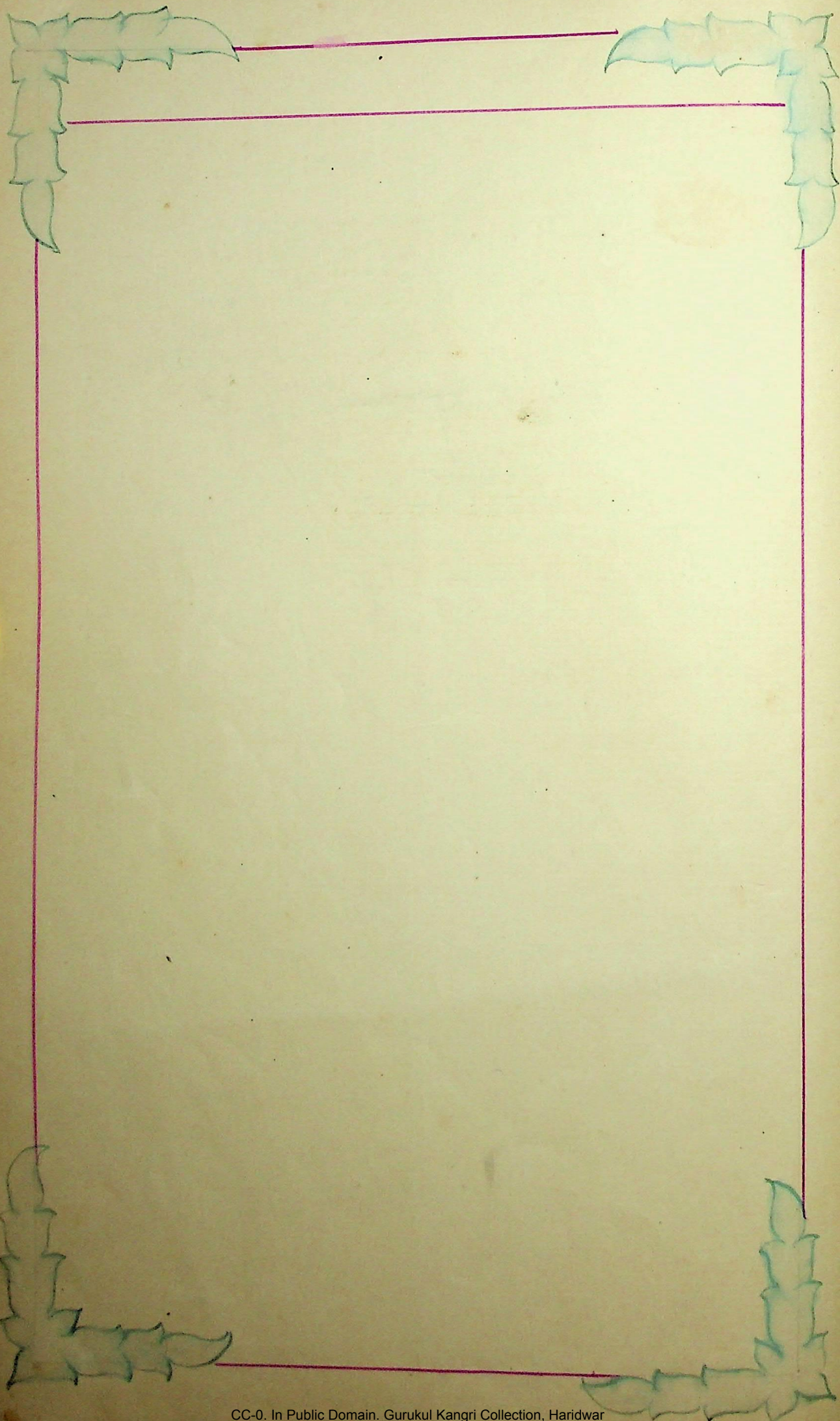
फ्री ट्रेड

फ़्री ट्रेड

प्रोटैक्शन पक्षपाती हैं लगा देते सभी पर कर।
दबाते सब को कर से हैं ये दिल में लोभ पैदा कर॥
न ये हैं चाहते कि दूसरों का भी भला होवे।
बस अपनी चार दीवारी में ही केवल मज़ा होवे॥
अहो इन की नज़रों में न कोई और देश आता है।
बस अपना पेट भरने के सिवा क्या और आता है॥
सभी भाई परस्पर हैं नहीं इनको ये भाता है।
बस अपने देश के हित में सभी का हित समाता है॥

सभी सामान पैदा हो इन्हीं के देश में केवल।
विविध हों कारखाने बस इन्हीं के देश में केवल॥
न खेती और खाने हो होएं इस देश में केवल।
मगर दुनियां की सब चीज़ें रहें इस देश में केवल॥
कोई है वेद में अच्छा कोई दर्शन समझाने में।
न सो वेद में अच्छे न दर्शन सब समझाने में॥
इसी ही भान्ति सब देशों में सब चीज़ें नहीं होतीं।
अधिक है खान गर इसमें तो उसमें धान की खेती॥
अर जैसे निल्हाने से गधा घोड़ा नहीं होता।
तो वैसे ही प्रोटैक्शन से नहीं निर्धन धनी होता॥
अगर अपनी शरबत भूमि में तुम केसर हो चाहते हो।
तो बस समझो कि तुम सिर पर गधे के सींग चाहते हो॥

अगर झूठी लगान से भला निज राष्ट्र का समझो।
~~खरीददारों से भरपूर हो~~
तो बस बलिहारी तुम पर है न कुछ आगे का तुम समझो॥

युगान्तर

खरीददारों से गर पूछो तुम्हारी क्या भलाई है।
तुम्हें क्या लाभ है इससे कहां तक प्राप्ति पाई है॥
कहेंगे क्या सुनावें हम यहां तो खाक पाई है।
ये ड्यूटी क्या लगाई है बला हम पर लगाई है॥

गये हैं बढ़ सभी चीजों के पूरे दाम अपर तक।
बस अब तो पूंजीपतियों की रही भर जेब ऊपर तक॥
प्रोटैक्शन छोड़ दो अब है भला फ्री ट्रेड करने में।
खुले होकर निरन्तर अब लगो व्यवसाय करने में॥

विनय को है यही अच्छा कि अब वह और न बोले।
न कविता पर कहीं तेरी लगावें टैक्स ये भोले॥

श्री अर्थ सचिव लौट आये
विरोधी दल में निराशा

हमारे कल के 'युगान्तर' में अर्थसचिव के जाने की सूचना पढ़कर विरोधी दल खुशी के मारे फूल उठा था। किन्तु हमारे सहयोगी 'नया' में यह पढ़कर कि श्री अर्थसचिव राजेन्द्र जी लौट आये हैं। विरोधी दल में खलबली मच गई है। क्योंकि मिनिस्ट्री में श्री राजेन्द्र जी का एक वोट कम होगया है और श्री दिलीप जी के हम में आजाने से एक वोट बढ़ गया है। परन्तु शोक से लिखना पड़ता है अब उन्हें श्री राजेन्द्र के आजाने से उन की मिनिस्ट्री के वोट को कम होने की आशा न करनी चाहिये। साथ ही हमें विश्वस्तसूत्र से पता लगा है कि श्री दिलीप चन्द्र जी उदासीन होगये हैं। वे भी विरोधी दल की ओर हाथ उठाने का कष्ट न करेंगे। ऐसी अवस्था में हम श्री विरोधी नेता के प्रति सहानुभूति प्रकट करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

इस आकस्मिक निराशा से आपके हृदय में जो चोट पहुँची है, उसके लिये हृदय से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यह आकस्मिक आघात उन के किसी कार्य में बाधा न पहुंचाये।
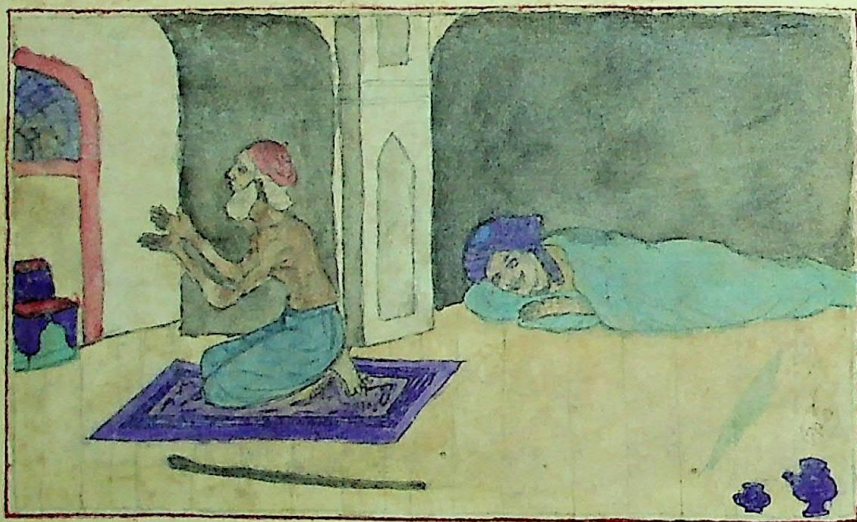
खुदा से दुआ

बेचारे एन्टीमिनिस्ट्री के गरीब मरीज़ को निर्बल और निराश देख कर 'भगत जी' खुदा से दुआ मांग रहे हैं कि "या खुदा! इसमें कुछ ऐसी ताकत पैदा कर कि यह पार्लमेन्ट में कुछ हाथपैर मार सके।

खुदा से दुआ

"बेचारे इन्टीमिनिस्ट्री के गरीब मरीज़ को निर्बल और निराशा देख कर 'भगत जी' खुदा से दुआ मांग रहे हैं कि 'ए खुदा! इसमें खुद ऐसी ता-कत पैदा कर कि यह पार्लमेन्ट में खुद हाथपैर मार सके।

फ़रियादे 'भक्त'

फ़रियादे 'भक्त'

सुनो ए शायरो हम आज कुछ ताज़ी सुनाते हैं।
क्षमा करना, न घबड़ाना, करें क्या, ऐसी बातें हैं॥

नज़र आता है अब तूफ़ान हम पर कोई आता है।
जिधर देखो, जिसे देखो, छुरी हम पर चलाता है॥

'नया' का सुनते हैं कोई नया फ़रमान निकला है।
कुचलने शायरों को अब नया सामान निकला है॥

जिसे समझा था गुलशन है वह बीयाबान निकला है।
'नया' है पता कोई या महज़ अरमान निकला है॥

'भगत' जी अब समाधी तोड़ कुछ सुन लो हमारी भी।
न पीसे जाएँ हम बेकार सुध लेना हमारी भी॥

अभी तो अध खिली यह खिल रही हैं चन्द कवि-कलियाँ।
मतंगज की तरह करना न इनसे यों हि रंगरलियाँ॥

बहादुर हो तो कुछ लेकर ज़रा मैदान में आओ।
न यों पर दूसरों पर टीका ही टीका करे जाओ॥

हैं हम नादान बच्चे ही औ देखो हैं अभी कलमें।
न जाने लिखते कैसे हैं न लाना रंज कुछ दिल में॥

भगत होकर भी कुल्हाड़ चलाओगे अगर हम पर।
बताओ तुम हो जाओगे कहाँ तब तीन हम बचकर॥

सूचना ~

साम्यवादी दल तथा प्रजावादी दल के सब सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आज रात के सवा आठ बजे यज्ञशाला पर दलों की बैठक होगी जिसमें सब सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है। क्योंकि उसमें दल की नीति निर्धारित कीजायगी। आशा है कि सब सदस्य यथासमय और तथा स्थान पधारने की कृपा करेंगे।

सहयोगी नया

सहयोगी नया

नया कहता है कि मैं नई शान से निकला हूं जरा कसौटी पर कसिये। मियां मिट्ठू की यह बात कहां तक ठीक है। अफ़वाह बहुत दिनों से जोरों पर थी कि नया निकलने वाला है। लेकिन हम प्रतीक्षा करते २ उकता गये आखिर आज वृहस्पति वार को निकल ही गया। नया नाम रख कर भी इतनी जल्दी निकल जाना नये के लिये मामूली बात है।

नया के दर्शन पाते ही हम तो मारे प्रसन्नता के फूलकर कुप्पा होगये। क्योंकि उसका टाइटल पेज (मुखपृष्ठ) खूब शानदार रंग बिरंगा भड़कीला तथा सजीला था जो देखते ही ग्राहकों के मन को मोह लेता था। तितलियां रह रह कर उस पर आती थीं। खैर उसे खोलकर देखने से तो हमारा आनन्द सीमा को भी लांघ गया। हमारा आनन्द निम्न लिखित बातों को देखकर असीम हो उठा।

(१) लेख, मसालेदार तथा चटपटे थे कि मुंह से लार टपकने लगी।

(२) तार तथा खबरें इतनी शुद्ध देता है कि हद्द कर देता है। लिखता है कि सम्मिलित दल की बैठक में सिर फुटौअल होगयी और सभापति भाग खड़े हुए यदि 'युगान्तर' में से ये समाचार उतारा गया है तो 'उतरौआ' की आंखों में सुरमा डालने की जरूरत है। यदि मनमौजी ही लिख दिया है तो कुछ कहने की आवश्यकता नहीं 'हां' एक बात नया को समझा देनी उचित है जो उसे पता नहीं प्रतीत होती। प्रायः जितनी भी कौन्सिलें वा बैठकें होती हैं उनमें चतुर सभापति दंगा होने पर कुर्सी छोड़ ही दिया करता है यही विवाद बन्द करने का नया तरीका है। यही सब सभ्य देशों में प्रथा रूढ़ व प्रचलित है।

युगान्तर

नये की एक बात से बहुत प्रसन्नता हुई इसने समालोचना में बहुत ही जल्दी तथा ताज़ीवरी है। प्रजातन्त्र लोकमत नवयुवक तथा नवयुगादि निकले कितने ही महीनों होगये और जब युगान्तर की धूम दिखाई सी देने लगी तब विचारा 'नया' निकला और महीनों के पुराने अखबारों पर समालोचना कर दी। वास्तव में नया ने नये फैशन को अपनाया है ऐसा प्रतीत होता है कि ये समालोचनायें तथा लेख वगैरह पहले से ही तय्यार कर रक्खे होंगे।

'नया' देखने से कैसा प्रतीत होता है —

(१) न स्याही उत्तम न कागज उमदा

(२) न इसके पास लेखक तथा सम्पादक अवैतनिक प्रतीत होते हैं।

(३) कार्टून कैमाल के बनाता है यहां तक कि पृष्ठ सफ़ेद का सफ़ेद रह जाता है।

(४) संपादक पानी के रंग में रंगा प्रतीत होता है फिर भी नया नये रूप में आया है। इसका स्वागत करना उचित है नहीं तो विचारे का शीघ्र ही स्वर्गवास होने का डर है। आशा है कि नये के सम्पादक युगान्तर की इस प्रशंसात्मक समालोचना को अपने पत्र में उद्धृत कर लेंगे। जिससे कि नया का सर्वत्र प्रचार होजायेगा।

बालादपि गृहीतव्यम्,

युक्तमुक्तं मनीषिभिः ॥

आज कल हिन्दी संसार कवि तुक्कड़ों और लेखकों से भरा हुआ है साथ ही समालोचकों से भी। काव्य कला के कलेवर पर कलम कुल्हाड़ा' शीर्षक के लेखक खुद तो कवि नहीं हैं नहीं पर चले हैं कविताओं पर समालोचना करने जिसने कभी काव्य रस का स्वाद नहीं चखा वह काव्य कला के मर्म को कैसे जान सकता है। 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद' हम अपने में सबसे बढ़ अनुभवी नया को यह जतलाना चाहते हैं कि जबर्दस्ती हर एक काम में टांग न अड़ानी चाहिये। ऐसा प्रतीत होता है कि अब वे बुड्ढे हो गये हैं अतः भक्तजी को पूजा पाठ के लिये छुट्टी ले लेनी चाहिये।

सम्पादकीय टिप्पणियां

१- सुना जाता है कि साप्ताहिक नवयुग पार्लमेन्ट तक मासिक रहेगा। क्या यह सच है ?

२- हमारी सम्मति में 'नया' में सिवाय 'कविता-काव्य-कला पर कलम कुल्हाड़ा' आदि कोरी समालोचनाओं के, कोई गम्भीर लेख नहीं है। भगतजी! या तो पूजापाठ करिये और या फिर इन पत्रों में पूरी तरह से ध्यान दीजिये। को न हो कि—न फ़कीरी मिली न तो तख्त मिला न इधर के रहे न उधर के रहे।

३- सुनते हैं कि सिन्धु-नदी में बाढ़ आने वाली है। भगवान से प्रार्थना है कि वे जल्दी ही कोई अगस्त्य का अवतार अटक पर उतारें जो वहां के अटके पानी को सटक कर अटक और कटक के सब कण्टक दूर करें।

४- मन्त्री मण्डल की तरफ से कोई पत्र नहीं निकल रहा है। उनको देश के विषय में इतना बेफ़िक्र नहीं होजाना चाहिये।

५- 'नया' की नीति से ज्ञात होता है कि वह फ्रीडिङ्ग के पक्ष में है।

६- 'व्यवसाय संरक्षण समिति विधान' के मसविदे को पढ़ कर आशा होती है कि भावी में देश का इससे कल्याण होगा।

७- मालूम होता है कि 'नवयुग' के संरक्षण के नुम्बर को देख कर 'नया' का दिल दहल उठा है, और इसी से शायद उसने दूसरी नीति अख्तियार की है। भाई! इसमें उसका भी क्या दोष है आखिर नया ही ठहरा !!

गुरुकुल-समाचार

(१) कल रात को वाग्वर्धिनी सभा के प्रतिष्ठित सदस्य श्री-बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार का दुर्गा-पूजा पर प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। खलबत जोरों पर थी।

(२) सरस्वती यात्रा— सुना जाता है कि इसबार कुछ ब्रह्म-चारी शिमला, कलकत्ता, काश्मीर लैन्सडाउन तथा बंगलौर जायेंगे। हमारी शुभकामना है कि उनकी यात्रा निर्विघ्न हो।

(३) कन्सेशन— N.W.R के ट्रैफिक सुपरिन्टेण्डेण्ट ने शिमला जाने के लिये प्रेषित कन्सेशन को देने से इन्कार कर दिया है और निम्न उत्तर दिया है,—

"I regret to say that I can not give you con-cession according - our rules."

(४) कलकत्ते के लिये भेजे गये कन्सेशन का अभी तक कोई उत्तर नहीं आया है। हमारे कल-कत्ता के संवाददाता ने E.I.R के ट्रैफिक मैनेजर से बातचीत की है। उन्होंने आशा दिलाई है कि कन्सेशन स्वीकृत होजायगा।

(५) क राष्ट्र-प्रतिनिधि सभा के मन्त्री कुर्सियों के इन्तजाम में लगे हुवे हैं। हमारे संवाददाता ने तार दिया है कि कुर्सियां शनिवार की सायंकाल तक ज्वालापुर से गुरुकुल में आ-जायंगी।

(६) आचार्य जी के आज के पत्र से मालूम हुआ है कि वे पार्लमेन्ट के ~~आगामी~~ उस अधि-वेशन में न आसकेंगे।

१९२६

राम देव

ॐ

वन्दे मातरम्

दैनिक विजय-वैजयन्ती।

४ नवम्बर गुरुवार

(४)

आज के विशेष लेख पढ़िए —

१- साबरमती की यात्रा -
२- डायरी के पन्ने -
३- गगनाङ्गण में -
४- अञ्चल में -
५- पंखड़ियाँ —
६- क्या किया जाय -

संपादक - नरेन्द्रनाथ, शंकरदेव

प्रबन्धकर्ता = अमरसिंह

"वैजयन्ती" मुद्रणालय में श्री देवनाथ द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित.

विजय वैजयन्ती
दैनिक
७म वर्ष.
मुखसंपादक - नरेन्द्रनाथ
संपादक - शंकरदेव
अंक २५.
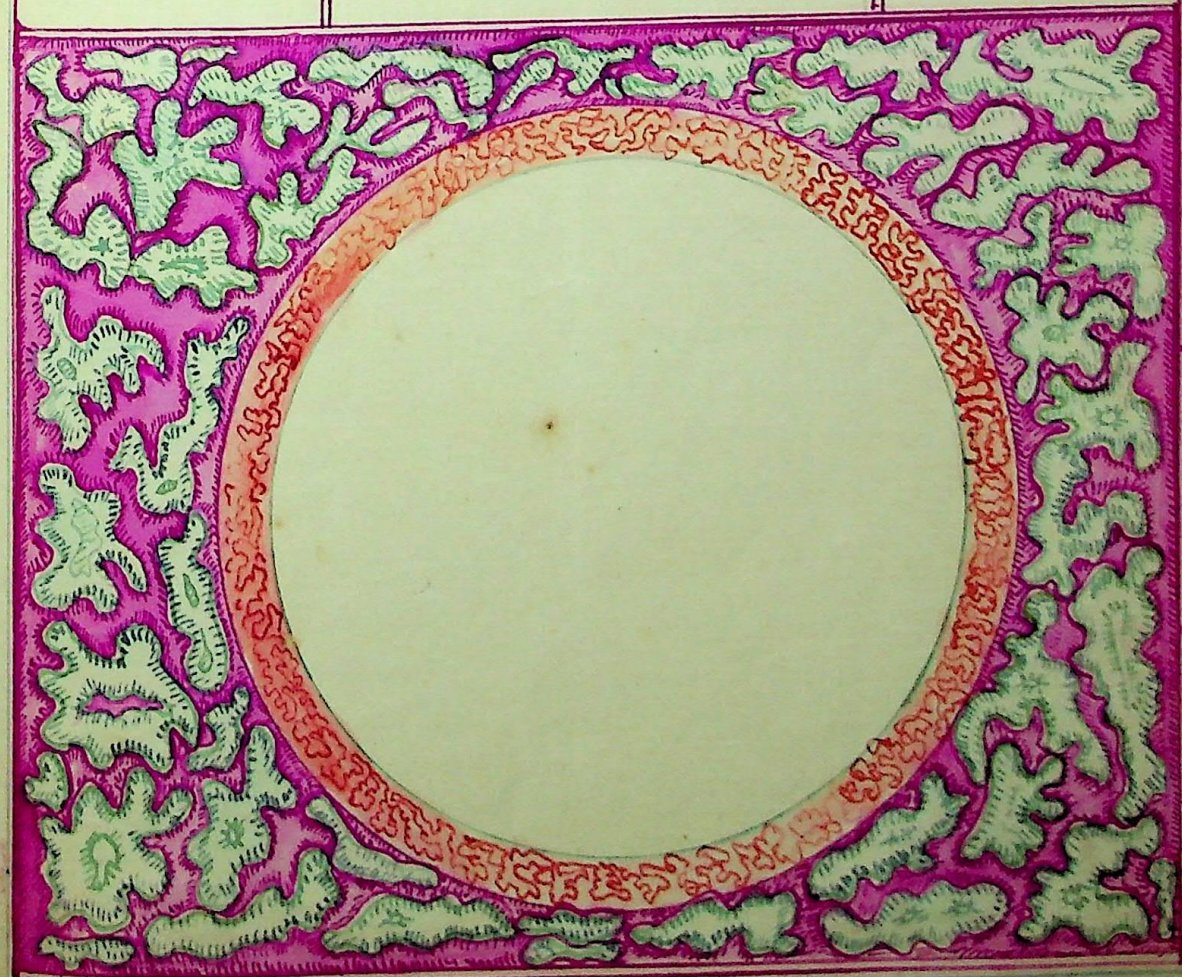
विजय-वैजयन्ती

४ नवम्बर १९६६ शुक्रवार.

माँ के आँचल में ~

आज एक वर्ष के पश्चात् फिर मां ने अपना आंचल पसारा है पुत्रों के मनोरथों को पूर्ण करने के लिये भव्य रूप में प्रगट हुई है। उसका सुवर्णाकृति दिव्य रूप आनपुत्रों के उल्लास को बढ़ा रहा है। आज उल्लास का गंगा समुद्र चारों दिशाओं में बांध तोड़ कर बह रहा है। आनन्द सरिता का प्रवाह उमड़ उठा है। मां के दर्शन पर सब अपने आप को भूल कर नाच उठे हैं जिस प्रकार कृष्ण की बांसुरी पर गोप बालायें मगन होकर झूम कर नृत्य करने लगी थी। मां के पांव धोने के लिये रक्त की नदियाँ बहाई जा रही है। यह पूजा का मार्ग पुराना है। सब लोग घर के मार्ग द्वार खोल कर मां के आने की बाट जोह रहे हैं। रात और दिन जाग कर अपने घरों की सफाई की है। केवल मां के कृपा कोर की प्राप्ति के लिये। व्रत लिये हैं मनाई है चढ़ावे चढ़ाये हैं क्या यह सब सफल होगा?

आज पूजा का दिन है। पूजा के लिये बकरी के रक्त दान की आवश्यकता है नहीं अपितु अपने रक्त दान की आवश्यकता है। आज माता का वक्ष खेत है इस को अपने रक्त से रंजित करने वाले पुत्रों की आवश्यकता है। मां की छाती पर लटकने वाला हीरक मोतियों का हार लुट गया है। आज कण्ठ हार से मां की छाती शून्य है। मां को तारक के समान उज्ज्वल मोतियों का आकर्षण भाता नहीं अपितु भक्त पुत्रों से अर्पित की जाने वाली नरमुण्डों की माला की है। मां की वेणी खुली हुई है मां के मांग में सिन्दूर नहीं पड़ा है। क्या मां के लाल अपने आप को अर्पित करेंगे कि मां सन्तुष्ट होकर वेणी को बांधे और मांग में सिन्दूर डाले।

आज इस हिमालय के आंचल में खेलने वाले लाख भारत के प्रतिनिधि कुल माता के पुत्र क्या अपने कर्तव्यों से मां के विषाद से मलिन और खिन्न चेहरे को प्रसन्नता व्यंजक हास्य से खिले वदन में परिणत करने में आगे बढ़ेंगे? आज जो उत्साह का स्रोत उमड़ा पड़ता है क्या यह स्रोत सदा ऐसा ही रहेगा? आज जो बल मनोरंजन करने में दिखाया जा रहा है क्या वह बल भारतीय विजय-वैजयन्ती को ऊंचा आकाश में रखने में आगे बढ़ेगा? जो भावना आज अपने दल के गौरव को बढ़ाने के लिये प्रेरणा कर रही है क्या वही भावना भारतीय राष्ट्र की रक्षा के लिये प्रेरणा करती रहेगी? आज जो मूर्ति हृदय में विराज रही है वह क्या अहर्निश विराजमान रहेगी? मंगल मय भगवान् करें कि हमारे शीश जिन पर झुके हैं सदा झुके रहें मां हृदय में विराजमान रहो

सत्याग्रह आश्रम और हम —

पाठक अन्यत्र सत्याग्रहाश्रम का वर्णन पढ़ेंगे। उनको पढ़ते हुए कई बातें मनन योग्य हैं जो छिपी न रहेंगी। हमारे और सत्याग्रहाश्रम में क्या अन्तर है जहां आश्रमवासी एक निश्चित उद्देश्य को लेकर अपने आप को तय्यार कर रहे हैं वहां हम लोग किस प्रकार और किस उद्देश्य से जीवन बिता रहे हैं यह प्रत्येक कुलवासी अपने आप अपने हृदय को टटोल कर देख सकता है। सत्याग्रहाश्रम जहां आज सारे देश के लिये ही नहीं अपितु सारे संसार के लिये तीर्थ स्थान बन रहा है। आज राष्ट्रीय आन्दोलनों का केन्द्र आश्रम बना हुआ है क्या यह संभव नहीं कि हमारा कुल राष्ट्रीय आन्दोलनों का मार्ग दर्शक हो।

परिताप की बात तो यह है कि हिन्दी और संस्कृत सीखने के लिये विदेशी यात्री आश्रम में आते हैं जो गुजरात प्रान्त में स्थित है जहां कि मातृभाषा हिन्दी नहीं अपितु गुजराती है। क्या हम कुल को जो हिन्दी भाषा भाषी प्रान्त में स्थित है, जहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी है और संस्कृत के पुनरुद्धार और प्रचार का कार्य करने के लिये स्थापित हुआ है ऐसे शिक्षार्थी विदेशी विद्वानों का केन्द्र बना सकते हैं? हमने सर्व प्रथम भारत को मार्ग दर्शाया कि अपना काम आप करना चाहिये। संस्था का खर्च संस्था स्वयमेव पूरा करदे। हमने अपने हाथों से मकान भी उठाये पर आज वह भाव कहां है? क्या यहां फिर आने पर हम कह सकते हैं कि इसके अन्दर हमारा रक्त छिपा हुआ है। यह हमारी गाढ़े पसीने की कमाई है? स्वावलंबन का पाठ पढ़ाने वाला आज परावलम्बी बना हुआ है क्या यह शोचनीय परिस्थिति नहीं है?

महात्मा जी ने जन्मोत्सव पर संदेश देते हुए कहा था कि ब्रह्मचारी शौच जाते समय खुरपा अपने साथ ले जांय और मल पर मिट्टी डालें जंगल में जाने का सवाल नहीं है। महात्मा जी अपने संकल्पों की पूर्ति इसकी आशा इस कुल से करते हैं। क्या ब्रह्मचारी इस वर्ष महात्मा जी के उपदेश को अमली जामा पहिना कर संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष का स्नेह भाजन और आशीर्वाद पात्र बनने का यत्न करेंगे? जयन्ती के अवसर पर महात्मा जी आवेंगे। क्या हमारे व्यवहार उनके संदेश के अनुसार — जो सिद्धान्त विरुद्ध न हो — होंगे?

हम पहिले भी कह चुके हैं कि कुलपति जी इस अवस्था में पहुंच गये हैं कि उनका जन्म दिवस समाजों में नहीं तो कम से कम गुरुकुल में अवश्यमेव मनाना चाहिये। उनकी जन्मतिथि प्रति वर्ष नवीन जीवन और नवीन उत्साह दान करेगी। क्या हम सत्याग्रहाश्रम से वीरपूजा तथा बड़ों की वन्दना करना सीखेंगे?

बच्चों की शिक्षा के संबन्ध में भी हमारा कुल सत्याग्रहाश्रम को अपना आदर्श बना सकता है। क्या हमारा कुल भी उन आदर्शों की ओर — जिन की कभी उसने घोषणा किया करता था चलने के लिये आतुर होगा।

विजय बैसपनी.

क्या किया जाय

गुरुकुल रजत-जयन्ती की अर्थसमिति ने हम पर २० हज़ार इकट्ठा करने का भार सौंपा था क्या ही अच्छा होता यदि यह निश्चित स्वर्णजयन्ती करते पर यह न होना था पर इस राशि को बढ़ाना हमारे हाथ है। हम अपने पिछले दिनों के सम्मिलित यत्न द्वारा इसमें बहुत कुछ सफल हुए हैं। यदि और भी समय दिया गया तो निस्संदेह हम पूर्ण सफल होंगे। पर प्रश्न यह है कि इस धन राशि का क्या किया जाय इसको किस उपयोग में लगाया जाय जिससे ब्रह्मचारियों के परिश्रम की यादगार बनी रहे।

इसमें किसी को भी विप्रतिपत्ति नहीं है कि जो कुछ बनाया जाय वह श्री कुलपति के चरणों के नाम से बनाया जाय। प्रश्न केवल यह है कि वह चीज़ क्या हो?

किसी बड़े आदमी के नाम पर चीज़ बनाने का समय सर्वप्रथम उसकी इच्छा का विचार रखना चाहिये। उनके क्या स्वप्न थे, क्या उच्च इच्छायें थीं जिन को अपने काल में वह महानुभाव पूरा नहीं कर पाया हो और ~~उसके पूर्ण~~ जिसको पूर्ण करने और देखने की लालसा उस तपस्वी के हृदय में हो। उसी को उसके भक्तों और अनुयायियों को पूरा करना चाहिये।

दूसरा यह है कि जो काम हम कर रहे हैं उससे कितनों को लाभ होगा? क्या इसके सिवाय और कोई काम नहीं जिसमें अधिक से अधिक लाभ संभव हो?

तीसरा, चीज़ ऐसी हो जो चिरस्थायी हो और बनाने वाले के और उस को एवं जिसके लिये बनाया जा रहा है उन दोनों के महत्व को बढ़ाने वाली हो।

इस आधार पर एतत्सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने पर हम इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि सभा भवन ऐसी चीज़ नहीं है जो पूज्य कुलपति जी का स्वप्न हो, कोई प्रिय वस्तु नहीं जिसका संपादन कर हम प्रेमपात्र बनने का यत्न करें। सभाभवन का महत्व यद्यपि कुल के जीवन में बहुत ज़्यादा है पर इस सभाभवन ने बनना अवश्य है। अतः इसके लिये हमारा परिश्रम करना कोई अर्थ नहीं रखता।

फिर दूसरा प्रस्ताव शील्ड का है। इस में सन्देह नहीं कि शील्ड का निर्माण कुलत्व के भाव को बढ़ायेगा। पर इसकी हमारे पास क्या गारंटी है कि शील्ड को हमेशा बादबल सदा गुरुकुल में बनाये रखने में समर्थ रहेगा। हमारी शील्ड का हमारे घर में से ही दूसरों के द्वारा जीता जाना कितनी लज्जास्पद बात है।

फिर क्या किया जाय, सवाल वैसा का वैसा ही बना हुआ है। हम समझते हैं कि प्रत्येक भाई ने अनुभव किया होगा कि गुरुकुल में व्यावसायिक शिक्षा का अभाव है। बहुत से मां बाप इसी लिये अपने लड़कों को नहीं भेजते कि गुरुकुल में व्यावसायिक शिक्षा का अभाव है। हमारे से धन मांगने जाने पर प्रत्येक पूछता था कि वहां कौन सा हुनर सिखलाया जाता है। आज देश में बेकारी की समस्या प्रबलरूप धारण कर रही है, हमारे सन्मुख भी यह समस्या आती है। इसके द्वारा जहां हम स्वतंत्रजीवि बन सकेंगे वहां कुल भी स्वावलम्बी बन सकेगा। श्री पूज्य कुलपति जी की इच्छा थी कि कुल स्वावलम्बी बने। व्यावसायिक कालेज के लिये उन्होंने यत्न भी किया था। अतएव इस स्वप्न को पूरा करना हमारा कर्तव्य है। इसमें जहां हमारा लाभ होगा वहां आगे आने वाले भाईयों का भी भला होगा। यदि कालेज की बनने की सम्भावना नहीं तो ~~कालेज~~ स्कूल की स्थापना तो असंभव नहीं।

साबरमती की यात्रा

बापूजी के श्री चरणों में—

मेरे तीन सप्ताह

(ले॰ श्री उपा॰ देवराज जी सेठी M.A.)

(२)

बापूजी की दिनचर्या— सायंकाल लगभग छः बजे बाहर घूमने जाते हैं। उस समय प्रायः बच्चे ही उन के साथ होते हैं। मुझे भी कई बार उन के साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बापूजी का बच्चों के साथ बिलकुल बच्चा होजाना देखकर मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती थी। बच्चों से गप्प शप्प लगाने, हंसी मखौल करने कराने और विविध प्रकार की बच्चों वाली शरारत करने में ज़रा भी संकोच नहीं करते। राह में चलते-चलते दो बच्चों के कन्धों पर हाथ रख कर झूलने लग जाते हैं। उन के चेहरे पर सारे दिन भर मुस्कराहट रहती है। हर कोई व्यक्ति उन से खुल्लम खुल्ला सब प्रकार की बातें, हंसी मखौल और चुटकले करने की भी आज़ादी रखता है। एक दिन एक जर्मन महिला दोपहर को आई और कहने लगी—

जर्मन महिला- Bapu, I have brought something for you.

बापूजी- (खुशी के साथ) Hallow, what is it. Let me see it.

वह महिला केले और पपीते की बनी मिठाई लाई थी और उसने कहा—

जर्मन महिला- Bapu, you will have to it.

बापूजी- I can not take it.

पर महिला ने इस उत्तर की परवाह न की और चमचा लाकर बापूजी को जबर्दस्ती खिलाने लगी। बापूजी भी कब दबने वाले थे। उन्होंने भट चम्मच छीन कर उलटा उस बाई के मुंह में देना शुरू कर दिया। इस पर बापू का बैठक खाना हंसी से गूंज उठा।

बापूजी के घर का भोजन- बापूजी के घर में नित्य प्रायः १५, १६ आदमी भोजन करते हैं। भोजन बनाने इत्यादि का सब प्रकार का काम उन की सहधर्मिणी—जिसे सब आश्रमवासी बा कहते हैं—स्वयमेव अपने हाथों से करती हैं। इस काम में आश्रम की एक और देवी उनका हाथ बटाती है। पर नौकर या नौकरानी पाकशाला में कोई नहीं है। सुबह छः बजे से लेकर शाम ७ बजे तक वह अनथक बा किसी न किसी काम में लगी रहती है। जिस स्नेह, प्रेम, और उत्सुकता से बा भोजन बनाती और खिलाती थी उसे देखकर प्रतिदिन मुझे यही भान होता था कि मेरी प्यारी मां ही मुझे खिला रही है। बाहर के बापूजी की पाकशाला में खाने वाले एक दो नहीं दर्जन के लगभग थे। ये सब लोग एक ही प्रान्त के या एक ही रुचि के न थे परन्तु भिन्न भिन्न प्रान्तों के भिन्न भिन्न रुचि के लोग थे। गुजराती, पंजाबी,

मद्रासी, कानपुरिये और यूरोपियन सभी तरह के लोग थे। बिचारी 'बा' का सारा दिन इन्हीं बातों में लग जाता है, परन्तु वे कभी उकताती नहीं हैं। खाना भी ऐसा वैसा नहीं उत्तम प्रकार का (Rich Food) बनता था।

आश्रम की सफाई — आश्रम बड़ा लम्बा चौड़ा है। आबादी और क्षेत्रफल की दृष्टि से गुरुकुल से कम नहीं है। सब प्रकार की सफाई यहां से बहुत अच्छी है। किन्तु बड़े आश्चर्य की बात यह है कि महकमा सफाई में न कोई भंगी है और न कोई नौकर। शौच और मूल के लिए पक्की टट्टियां बनी हुई हैं। यहां की तरह जिस किसी झाड़ी या वृक्ष की ओट में आश्रमवासी पेशाब करने नहीं बैठ जाते। हरेक टट्टी में दो बाल्टियां रखी होती हैं। आगे वाली मूत्र और पानी के लिए दूसरी में केवल मल पड़ता है। शौच कर चुकने के बाद पास रखी हुई मट्टी खुरपे से उठा कर ऊपर डाल देते हैं। इस के फलस्वरूप न वहां बदबू आती है और न ही मक्खी मच्छर भिनभिनाते हैं। हां, आठ बजे खेत में गढ़ा खोदकर सब बाल्टियों को मल को और आश्रम का कूड़ा कर्कट डाल कर सारे को मट्टी से पाट देते हैं। और बालटियों का दूसरा सैट जो पहले दिन धूप में सूख चुका होता है टट्टियों में रखा जाता है। इस प्रकार से सफाई खूब रहती है और दूसरे भूमि को सब से उत्कृष्ट खाद मिल जाता है। आश्रम की शेष सफाई का काम आश्रमवासी बारी बारी से करते हैं। इस सारे काम में केवल ८-१० व्यक्तियों का एक घंटे से भी कुछ कम समय खर्च होता है। जितने दिन मैं आश्रम में रहा उतने दिन बाल्टियों को उठा कर गढ़े तक पहुंचाने का काम मेरे सुपुर्द था। प्रतिदिन मैं यह अनुभव करता था कि सेवाभाव और नम्रता लाने के लिए यह काम बहुत सहायक है।

बापू जी शारीरिक श्रम को बड़ा उच्च पद देते हैं। वे केवल अक्षर ज्ञान और पुस्तक ज्ञान की बहुत कदर नहीं करते। उनकी यह धारणा है कि आज कल की प्रचलित शिक्षा प्रणाली में केवल पुस्तकीय ज्ञान होने से अजीर्ण हो जाता है; विद्यार्थी की मौलिकता सर्वथा नष्ट हो जाती है। उस को विकसित करने के लिए न उचित प्रयोग मिलता है न उचित समय मिलता है और न ही अनुकूल परिस्थितियां मिलती हैं। उन्होंने स्वयमेव बहुत किताबें नहीं पढ़ी हैं। जो कुछ उन्होंने पढ़ा है वह सब रेल यात्रा, जहाज़ की सफ़र और जेल खाने में पढ़ा है। अफ्रीका में बापू जी ने एक टोल्स्टाय फार्म स्थापित किया था जो अब तक चल रहा है। उस का एक एक कमरा बापू जी के हाथ का बनाया हुआ है। एक बार अदालत में गवाही देते हुए इस प्रश्न के पूछे जाने पर कि 'आपका क्या पेशा है?' बापू जी ने स्वाभाविक रीति से कहा कि मैं पेशे से जुलाहा और किसान हूं।

बापू जी की जयन्ती — सौभाग्य वश आश्रम में पहुंचने के कुछ दिनों के बाद मुझे बापू जी की जयन्ती में सम्मिलित होने का अवसर मिला। २ अक्तूबर रविवार के पुण्य दिन प्रात:काल से ही

श्रद्धालु नर नारियों ने पुष्पों की माला तथा मुड्डों के हार बापू जी को पहिनाना प्रारम्भ किया। प्रार्थना के बाद सब आश्रम वासियों ने महात्मा जी की चरण रज ली। (वहां आश्रम वासी प्रतिदिन महात्मा जी को मिलने के समय चरणों में प्रणाम या अन्य आदर सूचक अभिव्यक्ति नहीं करते। एक घर में जैसे छोटे बड़े रहते हैं। वहां औपचारिकता की बू भी नहीं आती) इस चरण रज ग्रहण से आश्रम वासी मूक जबान से बापू जी को ७८ वें जन्म दिवस पर बधाई दे रहे थे। इस के उपरान्त महात्मा जी ने अपने चचेरे भाई और उनकी धर्मपत्नी के पैर छुए तथा उन का शुभ आशीर्वाद ग्रहण किया। ८½ बजे सभा प्रारम्भ हुई।

सभा में ईशस्तुति के बाद विद्यालय के मुख्याध्यापक ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट दी। रिपोर्ट पढ़ी जाने के बाद महात्मा जी ने आध घण्टे तक भाषण किया। तदन्तर आश्रम वासियों ने बच्चे बूढ़े जवान सब ने मिल कर तकली और चरखे पर दो घंटे तक सूत काता। मध्याह्न के बाद दूसरी बैठक हुई। इस सभा का कार्यक्रम बड़ा लम्बा चौड़ा था। संगीत, देवियों का रास, वादित्र (International music) परस्पर सम्भाषण (Dialogue) के अतिरिक्त तीन नाटक हुए। प्रह्लाद, जीसस क्राइस्ट और जयद्रथ वध नाटक खेले गये। इस में प्रह्लाद नाटक अभिनय की दृष्टि से, जीसस क्राइस्ट भाव की दृष्टि से अनोखे थे। विशेष पोशाक तथा अन्य सामग्री के अभाव के साथ दिन में खेले गए थे। शहर के प्रतिष्ठित वहां पर्याप्त संख्या में उपस्थित थे। नाटक में भाग लेने वाले प्रायः छोटी उम्र के लड़के थे। तब भी सब प्रभावित हुए। सायंकाल प्रीतिभोज हुआ। जिस में आसपास के गांव के सब अछूत आदि सादर निमंत्रित थे। जी खोल कर मुक्तहस्त से मूंगफली और किशमिश बांटी गई।
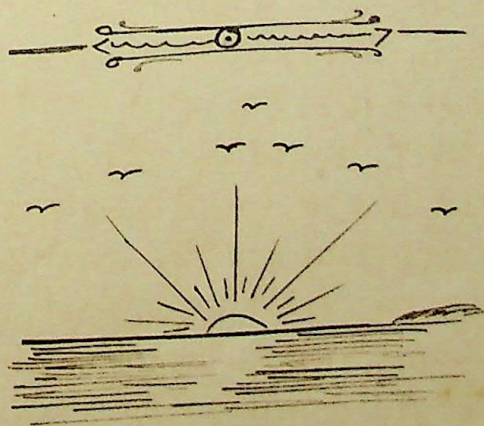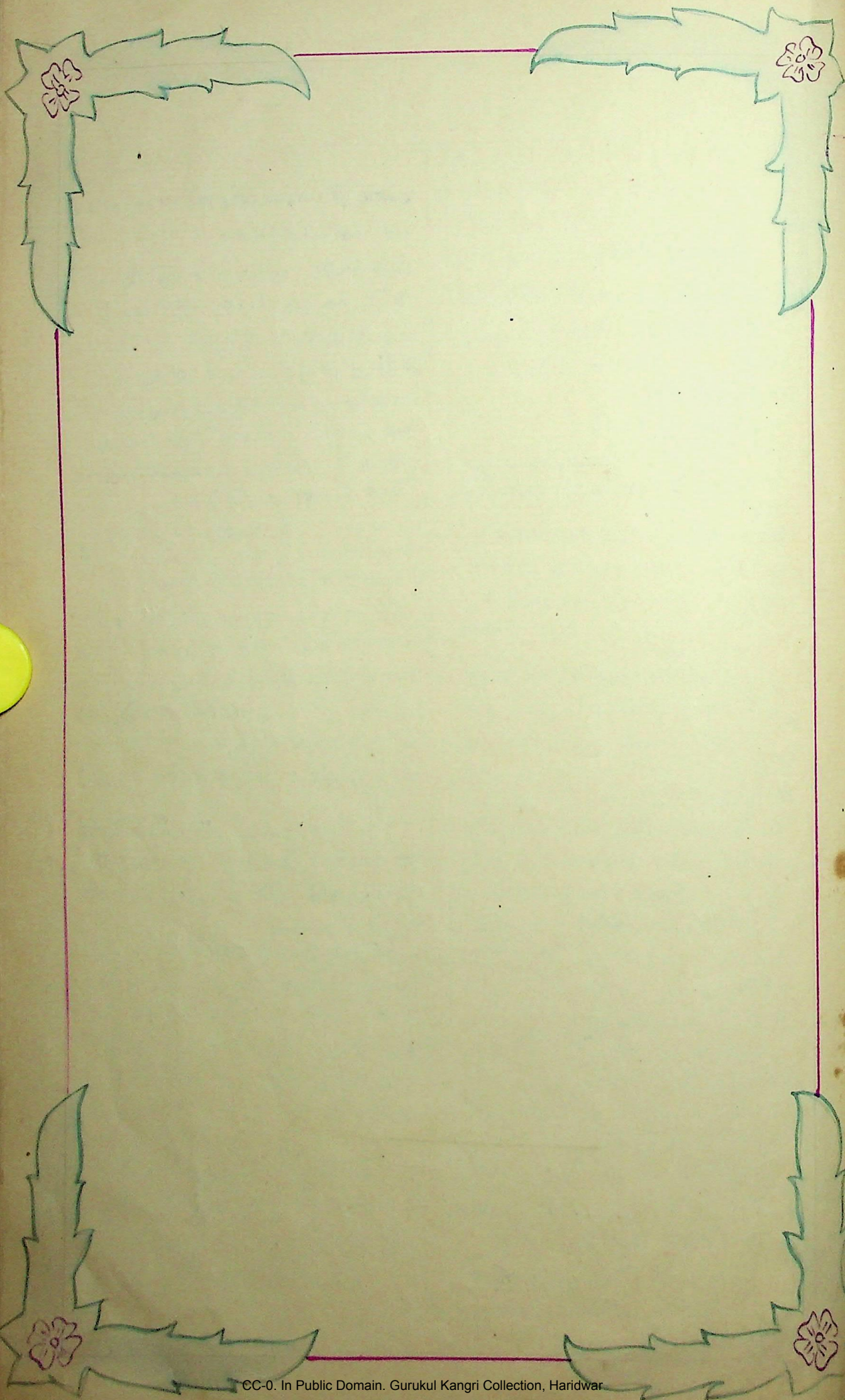
बड़े आदमी

बड़े आदमी कौन है ?

अजी वही जो सवेरे शाम हम शिमले की सड़क को पर देखा करते थे। बढ़िया सूट पहिनकर हाथ में बेंत लिए और सिर पर टेकरी कैप लगाकर चलते थे।

भला उनकी खूबी क्या है ?

वाह! क्या कहना, चाल ढाल, बोल चाल, रंग ढंग निराले हैं। बस निराले का नाम ही तो बाबू है।

मेरे साथी ने कहा - जरा ठीक २ समझाइये - इतने ही में चाचाजी आते हुए दीखाई पड़े मैंने कहा - गोपाल! मेरे साथ चलो। (Restuarant) Block No 15/quarter No. 79

चाची कमरे में बैठी थी, नीचे से खटपट सुन चौंकी, और से सके रने लगी - जब चाचाजी ने प्रवेश किया - बोली - आगये - सारी दुनिया के धर्मात्मा, अपना तो कुछ सिलवाना नहीं तो सोम का क्यों नहीं सिलवाते। एक निकर के लिये ही कहा है - जैसी 'सन्तोष' पहिनता है। अभी सन्तोष की मां शाम आई थी और कहती थी कि "खद्दर आजकल सब छोड़ रहे हैं"। राजा के घर में भी बढ़िया नावी कट (Navy cut) आचुका है तुम अपने घरों भी तो बढ़िया सामान मंगवाओ न।

चाचाजी - तुमने क्या कहा ?

"कहना क्या था अभी बच्चे के लिये ऊंचे सूट नहीं लिये, जरा सी निकर सिलवादी हो तो तब भी कहने को कुछ हो जाता - सारे बच्चे मिल कर खेलते है उनमें सोम - देखो है गरीब सा लगता है।"

चाचा - (थोड़ी देर ठहरकर) आत्म सम्मान पूर्वक बोले - निक्कर बड़े आदमियों की फैशन है। ऐसा बड़ा आदमी हमने नहीं बनना। सोमनाथ की तबीयत क्या खराब है - बढ़िया खिलाने का ध्यान लगा था उसी की बनी है न।

चाची बोली - आपको खिलाना ही सूझ पड़ा है। क्या कुछ और भी देखा है, १० आने गज की नीली जीन ही ले आते इस खद्दर ने तो घर से भी निकलना बन्द कर रखा है - क्या पहिन कर कहीं जाऊं। प्रकाश की माँ क्या कहेगी ? वे तो नये फैशन का सामान रखती है - उनके बाबू भी मना नहीं करते वे भी Secretariat में है न।

बात काट कर मैं बोल पड़ा - चाचाजी एक निक्कर सिलवा दीजिये - छोटों को खूब फबती है पुरा रहते है इतने में है ही क्या ?

इसका प्रभाव पड़ा; उदास मेरे मुख मन्तिक से कहने लगे "नहीं मेरे भाई !!! क्या कहते हो आप नहीं जानते, पहले निकर बनाने, फिर उसके साथ गैलिस भी होने चाहिये, फिर कोट भी चाहिये, इसके बाद बूट और कैप तो जरूर चाहिये। क्या गुरुकुल में पढ़ जाते हैं ?"

इतने में सोमनाथ और सन्तोष खेलते हुए आगये। सोम बोला - "चाचाजी! पैर दिखाकर। इसमें थोड़ी सी घिसड़ लग गई थी।" ~~मां ने~~

मां ने चाची नाथी नाम से बड़े प्यार से पुकार कर गोद में उठा लिया और कहने लगी - "यह है इट न देने का फल।" फिर अन्दर से रबड़ के Boot लाकर पहिनाये और थपी दी और कहा - जा बच्चे ! सन्तोष से खेल।

(२)

रोटी का समय आगया रात हो चली थी। ७ बजे थे, अंगीठी के सामने बैठ गये, कोयले दहक रहे थे और गरम गरम भोजन उतर रहा था। चाचाजी उसका

अपने ख्याल में मस्त थे। हम दोनों खाने बैठे। चाची ने भोजन परोसा। मैंने चाय के लिये कहा, घर में चाय बनाना मना था – अच्छा कह कर चाचीने सांस भरी और कहने लगीं कि पता नहीं इन्हें क्या होगया है। सारे बाबू कहते हैं कि न कभी अच्छा कपड़ा पहिनता है। खद्दर का पजामा पहिन दफ्तर में आजाता है। गला बंद कोट और सिर पर पगड़ी रख फिरता रहता है। पर क्या मेज़ के बूट देखो तो छोटी २ एड़ीवाले होंगे। हां दस जोड़े जूते कोने में डाल रखे हैं। नालदा बाबू चर्जी राम भी कहते हैं कि Club में चन्दा दे देते हैं पर टेनिस की खेल में कभी शामिल नहीं होते। अखबारों के लिये भी चन्दा दे देते हैं। दीन दुःखियों के लिये आप द्वितीय कर्ण है। खाने पीने को देखो तो घर में घी दूध की कमी नहीं है पर कपड़े वोही फटे हुए पहिनते हैं। इम्तिहान की परीक्षा में तो ऐसे बन कर गये थे कि साहब ने बड़ी खुशी से नौकरी में ले लिया फिर अब क्यों ढोंग रचते हैं।

गोपाल मजे से रोटी खा रहा था उसके दिल इनके प्रति श्रद्धा का आविर्भाव हो चुका था चाय के लिये उसे भी शौक न था इसलिये उसने कहा कि भाभी जी! चाय तो नशे की चीज़ है हां एक आध दफ़ा कोई पीले तो कोई हर्ज नहीं। हां आपने यह बजा फ़रमाया कि आजकल बड़े आदमी इनकी तरह नहीं रहते। बड़े आदमियों की तो कुछ और ही निशानी है। हां जी, बड़ा बनने के लिये ज़रूर नया फ़ैशन पहिनना चाहिये। शिमले जैसे शहर में पुराने ढंग का क्या काम, असली बड़े न सही तब नकली बड़ा तो ज़रूर बनना चाहिये।

चाचीने अपने पक्ष में गोपाल को देख एक C.I.D के समान कार्य करना शुरू किया और कभी कान में धीरे से कभी ज़ोर से ऊंचे २ बोल कर बात पक्की करनी चाही कहना शुरू किया – "सन्तोष का पिता कैसा बनठन के रहता है, सारे उसकी कद्र करते हैं; हमेशा चुस्त दिखाई पड़ता है। मांस वांस खा लेता है, उस की क्या बात (मुझे देखकर) बलराम जी! उससे तो कोई फ़र्क नहीं आता तुम खाना शुरू करदो थोड़े थोड़े दिनों बाद चुस्त होजाओगे और क्या।"

मुझ पर आपत्ति देख गोपाल ने कहा – "आप इनसे क्या पूछते हैं। ब्रह्मचारी जी को क्या मतलब – अजी मेरी समझ में बड़ा बनने के लिये आदमी को अवश्य मेव प्रयत्न करना चाहिये, और कुछ नहीं, शकल सूरत तो ठीक रखनी चाहिये न, सवेरे १० बजे अंगड़ाई लेकर फ़ौरन उठे और शीशे के सामने खड़े हो तेल आदि लगा Breakfast कर जल्दी २ सूट पहिन लम्बे २ डग बढ़ा चलदिये और ऑफ़िस में जा टप टप टाइप करने लगे क्या इससे अधिक भी कोई मौज है। खाना खाने से वहीं रोटी मंगा कर खाली और शाम को दोस्त मंडली में विचरते रहे। भाभी जी ठीक है न। उन्होंने भी हां कहा और कहा 'मेरे दिन पता नहीं कब फिरेंगे रोज रोज घर में रोना रहता है" बीसदफ़ा कहा अपनी इज्जत रखो, बाबू तुम्हारी मखौल करते हैं – साहब हाथ नहीं मिलाते

फिर भी न जाने क्या होगया है।

गोपाल - (मेरी तरफ़) भाई देखो तो आज कल के बड़े २ नाम धारी साहबी ठाठ से रहते हैं हरेक खुशामद करता है। जेब में ४ पैसे भी न हो पर बड़े २ साहूकारों की परवाह नहीं करते। दिल्ली-दिल में बिल्ली से भी डरते हैं पर अकड़ की बहार शेरों से कम नहीं।

तारीफ़ तो यही है :-

बड़े आदमी की बड़ी शान है।
बड़े आदमी की बड़ी आन है।
बड़े आदमी का बड़ा नाम है,
बड़े आदमी का बड़ा काम है॥

चाचाजी (दूसरे कमरे से) बलराम जी? यह क्या गारहे हो। मेरी समझ में नहीं आया। मैंने कहा इधर आइये। बहस की बात है वे अबतक सोमनाथ को खिला रहे थे साथ में उसे ले आये।

चाचाजी - क्या झगड़ा होगया है?

मैं - चाचीजी बिल्कुल ठीक कहती हैं कि बड़ा बनने के लिये पजामे की जगह पतलून और कुरते पर टाई कॉलर और कोट रखने चाहिये अजी मेरी समझ में अच्छी तरह क्यों न बड़े बन जाय

चाचाजी - कैसे कहो?

मैं - अजी पहिले कोट बूट सूट पहिनना चाहिये। रास्ते में चलते हुए बच्चे को कभी गोद में न लेना चाहिये चाहे वह रोवे Lady साहिबा को शाम सवेरे घूमने ले जाय। गरीब आदमी को दो ठोकर और २० गाली सुनाये। राम का नाम भूलकर भी न ले। इसके बाद लगातार का रुपया गुल छर्रे में उड़ाये, कई २ फैशन हुए। फैशन के लिये Times को खूब पढ़ा करें यही पढ़ाई लिखाई चाल ढाल हो तब बड़ा बन सकते हैं।

चाचीजी मैंने तो इसे कई बार समझाया इस प्रकार तो ये मानते ही नहीं। हमेशा बूट धड़ी और फीतो के लिये लड़ा करती है। तुम्हीं मनावो।

मैं - चाचाजी? मेरी समझ में तो बड़ा बनने के लिये कोट बूट की जरूरत है आजकल तो इसी तरह बड़े बन सकते हैं।

चाची - यह तो ठीक कहते हैं। मैं तो ब्रह्मचारी जी से सहमत हूं।

चाचा - अच्छा - मैं इस साल सोमनाथ को गुरुकुल पढ़ने भेज दूंगा। मुझे चालाक बनाने की जरूरत नहीं सीधा ही भला है। नौकरी के टुकड़े की जगह आजादी की रूखी रोटी चाहिये।

चाचाजी ने आज की बात पर विचारना शुरू किया और आज रोटी भी न खाई। इसके बाद सोमनाथ गुरुकुल के २० वें वार्षिकोत्सव पर दाखिल होने के लिये भेज दिया गया।

बहुत दिनों बाद एक बार फिर उनका समाचार मालूम पड़ा। सन् १९२४ के दिन थे। गर्मियों का मौसम थी और वही शिमला शैल था।

(२)

सन् १९२४ का अगस्त महिना था शिमले में बड़े २ आदमी हवा बदलने के लिये आये हुए थे। मैं भी कालिका की train से शिमला पहुंचा। सोचा कि चाचा जी से मिलूंगा।

यह क्या! गाड़ी Station पर पहुंची। एक डब्बे से ४, ५ खद्दर धारी व्यक्ति उतरे उनमें से एक के गले में हार लदे हुए थे।

स्टेशन, बाबू नाम धारियों से भरा था। Band बज रहा था गाड़ी के पहुंचते ही एक आवाज़ गूंज उठी "बोलो श्री सोमनाथ जी की जय" वन्दे मातरम्!!!

मैं सोमनाथ का नाम सुन कर चौंक उठा इन दिनों विदेश में रहने से मुझे उस नाम का स्मरण न रहा था। ऊंची स्टेज पर खड़े होकर मैंने भी देखा - वही मेरा चचेरा भाई सोमनाथ था। आगे बढ़ कर मैंने भी वन्दे मातरम् की। सोमनाथ जी ने पहिचाना

साथ ही चाची ने बाहर आकर (मेरा) भी स्वागत किया। सोमनाथ को गुरुकुल जाने का दिन भी याद आ गया। वह चाचा जी के साथ हो लिया

— धीरे २ ऊपर बाज़ार में जुलूस पहुंचा वहां सोमनाथ पुस्तकालय, सोमनाथ भवन आदि कई स्थान देखे। इसके बाद वाद्य वन्दन समाप्त हुए और हम भी गुरुकुल आर्य समाज में पहुंचे।

देश के विजय में सोमनाथ जी से विविध बातें हुई इसके बाद अन्य लीडर लोग नाथ जी Town Hall में कुछ कथन करने आये। मैं तो थका होने से न गया।

भोजन के बाद बातों ही बातों में मैंने चाची से पूछा कि बड़ा आदमी कौन होता है। सोमनाथ तो खिलखिला गया (खूब हंसी हुई)

आज चाची जी ने समझा कि 'बड़ा आदमी' कौन होता है।

—— ६०३ ——

भारत के दस महान् पुरुष.

भारत के दस महान् पुरुषों के नाम ढूँढ़िए।
महत्ता में उनकी लोकप्रियता का ही प्रमाण
—— : होना चाहिए : ——

— : नाम क्रमशः होने चाहिएँ : —

शीघ्र
ही
वै
ज
य
न्ती
—— कार्यालय में पहुँचाइए ——

पंखड़ियाँ

उषा.

आशा की गलियों में वह दूर,
जहाँ रजनी का साथी नूर ॥१॥

(२)

हरवाली है शालि लता में—
सुर-चरण में फूल लिए—
कमल नयन का हार बनाकर,
भक्त भाव से है भरपूर ॥२॥

(3)

जीवन मन्दिर की वेदी पर,
तेज अर्घ्य की थाली है।
इच्छित फल को लाने वाली,
अक्षय वट की डाली है ॥3॥

(४)

सूर्य देव के दिव्य भवन में-
पवन राज के हिण्डोले में-
चन्द्र किरण के मन्द हास में-
बाल उषा दिख पाली है ॥४॥

"श्री चन्द्रकान्त"
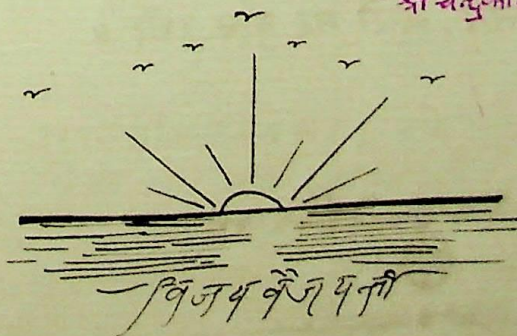
॥ विकसित कुसुम ॥

ललित मालती का यह विकसित कुसुम है॥
चपल चंचरीकों के चंचल चितों को,
लुभाने में अनुपम ये विकसित कुसुम है॥
गुलाबों की काँटे भरी डालियों से,
तुम्हें बींध लेता ये विकसित कुसुम है॥
न पहुँचे जहाँ लाल नीलम औ' मोती,
उन्हीं केश पाशों में विकसित कुसुम है॥
हुई हार हीरों की हारों में हरि के,
मगर कण्ठ माला में विकसित कुसुम है॥
जो भगवान् के सीस तक आ विराजा,
जगत् में वही "प्रेमी" विकसित कुसुम है॥

"प्रेमी"

श्री राम !

आज्ञा पिता तुम्हारी मैं सीस पैं धरूँगा।
तन मन तेरे चरण पर अर्पित सभी करूँगा॥
बलिहारि जाऊँ बेटा निस्वार्थ तव वचन पर।
यह पाप का जो पुतला चीरूँ इसे छुरी धर॥
मत बात ऐसी कहिए, मुझ से मेरे पिताजी,
गोदी में जिसकी खेला उसको यह दान क्या जी॥

❀ ❀ ❀

ऐ राम मेरे प्यारे माता के ऐ! दुलारे!
रघुवंश के सितारे, काटो यह दुख हमारे॥

"श्री योगीराज"

मयूर

साँझ की धूलि घनी होते ही जब,
वाटिका का मोर मेरा बोलता।
भूल जाता शोक की सब ग्रन्थियाँ,
श्राल इस संसार की मिटती व्यथा॥

क्यों न फिर हे विश्व के तुम राहियो!
वाटिका में बैठकर आराम लें।
क्यों न सुनकर मोर की मीठी ध्वनि,
खोल लेते दुःख की सब ग्रन्थियाँ॥

"बाल"

वसन्त

सज धज आज वसन्त है आई।
रम्य ध्वजा उत पीत उड़ा इत-
कानन कोकिल कूक सुहाई॥
फूल रही सर्षप मदमाती—
पीत प्रसून से डाल लजाई॥
सुरभित सुमन सुवास सना यह,
पावन पवन बहे सुखदाई॥
देख वसन्त का अन्त सन्त जन,
हिल मिल मंगल होरी मचाई॥

"कोई"

मेधा

अमर लोग जिसे बहु पूजते,
पितर और ऋषी जपते जिसे।
जगतपालक हे हमको वहाँ,
सुमति दे मतिमान करो हमें॥१॥
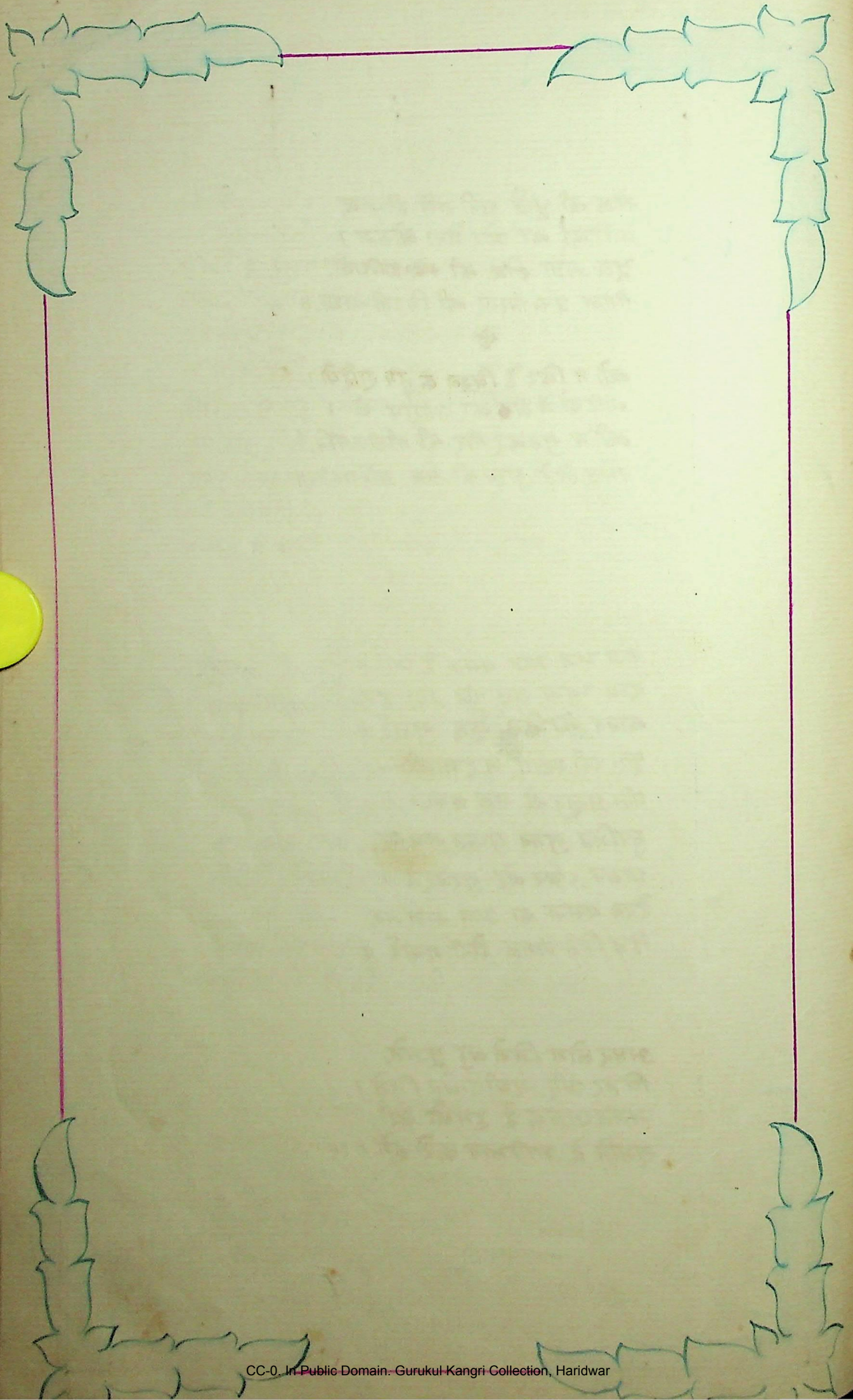
"छात्र"

वॉली बॉल के नज़ारे

श्री उपेन्द्र जी के सौजन्य से

डायरी के पन्ने.

२६ अगस्त का दिन था। आकाश बादलों से घिरा था। रिम झिम वर्षा हो रही थी। आधे से ज़्यादा साथी अम्बाला जा चुके थे शेष वहां जाने को उत्सुक और व्यग्र थे, आकाश की रंगत अस्थिरात्मा पुरुष के विचारों की तरह से प्रतिक्षण बदल रही थी। आकाश के समान हृदय भी आशा-सूर्य के प्रकाश से शून्य हो रहा था, पर निश्चय था कि आज यहां से चले ही जाना है चाहे बिजली गिरे आकाश फटे। हमारे दृढ़ निश्चय के सामने इन्द्रदेव ने सिर झुका लिया। हम लोग कालिका पहुंचे पर प्रखर धूप में। कालिका में जो दृश्य देखा हृदय टूक टूक हो गया और इस के साथ यह भी सुना कि यह नज़ारा प्रतिसाल यहां नज़र आता है। चारों ओर अशिक्षित मज़दूर बैठे हों और हम शिक्षित लोग उन की मजदूरी का फैसला न कर सकें; सब का कहना और समझना व्यर्थ जाय। यहां से दिल में प्रश्न उठा कि वस्तुतः हम स्वराज्य के पात्र हैं?

आंखें फेरीं तो देखा कज्जल के समान काले मेघ गर्जते आ रहे हैं, क्षण भर में पृथिवी पानी पानी हो गयी; सिर छिपाने को कहीं जगह नहीं। अपने को बचायें या अपने सामान को? किश्ती का पता नहीं। डेढ़ दो घन्टे बाद वर्षा थमी। गंगा पार हुए, हम ने सीधे दिल्ली जाना था। हमने साढ़े दस की गाड़ी से जाना था पर हम स्टेशन पर सात बजे से ही बैठे थे। यह पहिला अवसर था कि हम स्टेशन पर सामान के साथ दो तीन घन्टे बेकार बैठे हों और वो भी रात के समय। रह रह कर हृदय धड़क उठता था। आंखों में नींद थी पर सोने के लिए दिल न मानता था। गाड़ी आई पर आशानुकूल स्थान नहीं था; धक्कम धक्के से दूसरों के सामान पर खड़े हुए। गाड़ी ने दिल्ली में सुबह उतार दिया।

गुरुकुल से जाने का उद्देश्य गुरुकुल के लिए धन इकट्ठा करना था। गुरुकुल का प्रचार गाड़ी में बैठते ही शुरू हो गया। हमारी शक्लों और पहिरावे ने लोगों की आंखों को हमारी ओर खींचा। क्या आप गुरुकुल के ब्रह्मचारी हैं? आपके muscles उन्नत नहीं, आप हृष्ट पुष्ट नहीं, आप के चेहरे पर तेज नहीं; आप में और कालेज के विद्यार्थियों में क्या अन्तर है? इत्यादि प्रश्नों की बौछार होने लगी। राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थक ने लाला लाजपतराय का नाम सुनते ही पंजाबी शिक्षित जवान आवेश में गर्ज उठा। लाला जी को यदि पाता तो कच्चा ही खा जाता। लाला जी ने उस के जीवन के साथ कितने नौजवानों के जीवन

का साक्षात्कार किया है यह सब किस्सा एक सांस में कह गया। हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब सुना कि लाला जी सारे पंजाब का दौरा करते हैं पर उस शहर में - जहां का वह निवासी है - जाने का साहस नहीं करते; क्योंकि वहां के नवयुवक लाला जी की जान लेने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं। उस के हाव भाव बता रहे थे कि यदि लाला जी उस के सामने आ जायं तो उन के प्राण सही सलामत न बचेंगे। हमारा आश्चर्य और हमारी उत्सुकता बढ़ती जाती थी पर वह नौजवान बोला लाला जी का नाम न लीजिये मैं अपने को क़ाबू में न रख सकूंगा। उस ने कहा कि गुरुकुल के लड़के कायर और डरपोक होते हैं उसने कहा कि यह निश्चय करने का अवसर अनुकूल है। उसने कहा कि पास के डब्बे में एक अंग्रेज़ और इंगलिश महिला बैठी हैं; डब्बे में और कोई नहीं डब्बा भी III का है, आप जा के दिखाइये। पर जाने से पहिले बूट पहिन कर जाइयेगा वरना बूट की ठोकरों से लहू लुहान कर देगा। आप कहें तो मैं जा कर दिखाऊँ। बिना कारण लड़ाई न ठाननी चाहिए कि कि-लासफ़ी को वह पहां कब सुनने वाला था। फिर खद्दर पर बातचीत चली इस प्रसंग के चलते ही एक और सज्जन बीच में कूद पड़े। दोनों सज्जन अपनी ऐतिहासिक विद्वत्ता का परिचय दे कर दूसरों को मूर्ख बताने लगे। लक्सर में उन्होंने डब्बा बदल लिया, तब हमें भी शान्ति मिली। बर्ताव सभ्यतापूर्ण था। इन्हीं सज्जन से पता लगा कि एक मुसलमान मोटरकार को आगे खड़ा हो कर रोकता है और वह अमृतसर तमाशा दिखाने जा रहा है।

भारत की प्राचीन और अर्वाचीन समय की राजधानी दिल्ली में पहुंचे जिस भूमि का प्रत्येक रज कण विशेष गौरव से पूर्ण है और जिस नगर की चप्पा २ भूमि भारतीय वीरता और कमनीय कीर्ति कहानी को कह रही है, जिस शहर की प्रत्येक ईंट भारतवासी के लिए संदेश रखती है उस शहर में पैर धरते ही हृदय विशेष आनन्द से आन्दोलित हो उठा पर मुगलों की विलासमयी नगरी की सुन्दरता को परखना दो चार दिनों का काम नहीं है।

× × × ×

कानपुर के सामने ट्राम ने उतार दिया श्री पं॰ जन्मेजय विद्यालंकार के कल्प तरु औषधालय के देखते ही हृदय उमड़ आया यहां अनुभव किया कि गुरुकुल के आदमी अपने होते हैं मेरे आकस्मिक आगमन ने उन्हें चकित कर दिया गुरुकुल के स्नेह का मूल्य कुलबन्धुत्व प्रेम का गौरव सामने नाच रहा था। कुल में ४, ५ बरस हो रहने वाले अपने जीवन व्यापार में फंस जाने पर भी गुरुकुल के साथियों को देखने के लिए तथा गुरुकुल आने के लिए किस प्रकार तरसते रहते हैं, यह प्रतिक्षण सामने आ रहा था। पर इस आनन्द और उल्लास की धारा के बीच में करुणाजनक वेदना छिपी हुई थी। वह थी एक भाई की करुण कहानी। अनमेल विवाह से उंचे भाई का अपनी पत्नी को तलाक़ देने की कानूनी बातों की चर्चा सुन कर दिल मसोस कर रह गया। भारत में कितने परिवार ऐसे होंगे जो इस मर्मान्तिक वेदना को मरण पर्यन्त सहेंगे और अंतिम दम तक दुःख उठायेंगे इस के सर्वथा विरुद्ध दूसरा चित्र था जिस का नाम नहीं है एक बड़ा भाई भी है।

पिता की मृत्यु के साथ सारा ऐश्वर्य लुप्त हो गया पर अपने पसीने की कमाई से उस ऐश्वर्य को पाया और किसी चिंता में फंसे नहीं हैं। गुरुकुल की शिक्षा के साथ दृढ़ निश्चय और साहस की जरूरत है तभी यहां के विचार फलदायक होंगे दोनों सज्जन गुरुकुल में एक श्रेणी में थे एक आध साल के अंतर से गुरुकुल छोड़ा पर एक का चेहरा निस्तेज था चिन्ता और उदासी से मलिन था पर दूसरे का चेहरे पर रोग से उठने पर भी हास्य से परिपूर्ण था। धनाधिक्य सुख का कारण नहीं न व्यापार की सफलता दिल को संतोष देती है जीवन सुख कहीं और है और रस का वहां प्रतिक्षण प्रत्येक बैठा व्यक्ति कर रहा था।

× × × ×

गांव पंडित जी का कार्यक्षेत्र है। गांवों में वैदिक धर्म का सन्देश सुनाना उन का पुण्य व्रत है। उन का घर क्या है मानो समाज मन्दिर है। जहां हर समय सत्यार्थ प्रकाश पर विचार होता रहता है। समाज के सिद्धान्तों पर विचार होता रहता है। गांव के लोग पंडित जी की हस्तलाघवता तथा वैद्यज्ञान पर आस्था रखते हैं। भाग्य से उस दिन समाज का दिन था। अधिवेशन में ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य और सत्यार्थ प्रकाश की कथा से काम चलाया गया था। आर्य समाज किस ओर जा रहा है, इस का आभास कुछ कुछ मिल गया। हिन्दु मुस्लिम वैमनस्य अपनी उच्च सीमा पर पंहुच गया है यह सत्यार्थ प्रकाश की कथा के बीच में सुनाई जाने वाली कथाओं और वाद की चर्चा ने स्पष्ट कर दिया। आर्य समाज इस में पीछे नहीं, आगे ही है। यह देख कर हसन निजामी और अली बन्धुओं का कथन स्मृति में घूम गया कि मुसलमानों का दुश्मन आर्यसमाज है

× × × ×

पंडित जी के कार्य का आर्यसमाज स्थापना बाह्य रूप है। उन के कामों की गहराई तक पंहुचने के लिए रात की प्रतीक्षा करनी पड़ी। गांव भर के लड़के इकट्ठे हुए। पंडित जी सभापति बनाए गए। गुरुकुल की सभाओं का दृश्य सामने आ गया। बोलते समय सभा का संचालन कैसे करना चाहिए, पर उस में यह फर्क था कि यद्यपि वे लड़के काफी उमर के थे पर सभा का संचालन कैसे करना चाहिए, बोलते समय सभापति को किस प्रकार सम्बोधन करना चाहिए इत्यादि प्रारम्भिक बातों से भी सर्वथा अपरिचित थे। सभापति महोदय को ये बातें बार बार बतानी पड़ती थीं। गांव के वृद्ध लोग बच्चों को उत्साह बढ़ाने को, उन को मार्ग दिखाने को उपस्थित थे। ये बातें साधारण अवश्य हैं पर इस अवस्था को लाने में पंडित जी ने कष्ट सहे हैं। बहिष्कार तक का कष्ट आप ने सहन किया है। कूपों से पानी भरने न देना, इन के साथ कोई समान न बेचना, धोबी का कपड़े धोना छोड़ देना, लोगों का घर पर ढेले बरसाना इन सब से गुजर कर आज पंडित जी यहां अपने मित्र चरणों की सहायता से पंहुचे हैं। गुरुकुल का स्नातक दुनिया पलट सकता है, जनता को अपनी इच्छानुसार चला सकता है यह देखना हो तो वहां जाइए।

× × × ×

गांव से बाहिर मनुष्यों की ध्वनि से दूर खेतों में रात का घूमना शीघ्र भूली जाने वाली चीज़ नहीं है। कुल में साथियों के साथ सब की आंखों से नजर बचा कर घूमने की स्मरण दिला रहा था साथ में एक ब्रह्मचारी जी थे इन का चांदनी रात में एक स्नातक भाई के साथ घूमना प्रश्न बेढब था क्या वेदों को इसी रूप में परमात्मा ने दिया था इस का क्या सबूत है क्या ऋषियों ने उस में परिवर्तन नहीं किया है? वेद के ईश्वरीय ज्ञान के सिद्ध करने का भार मेरे ऊपर था मेरे लिए यह सचमुच कठिन काम था। जिस पर स्वयं विश्वास न हो उस पर दूसरे को संतुष्ट करना सहज काम नहीं, वहां युक्तियों को [illegible] नहीं थी जो आचार्य जी की पुस्तक बताती है, मैस्मरेजम के उदाहरण से उन को समझाया गया मुझे निश्चित सीमा में रखने का काम पण्डित जी कर रहे थे।

× × ×

देहली एक्सप्रेस प्लेटफार्म पर आई सारा प्लेटफार्म "अल्लाह हो अकबर"
के नाद से गूंज उठा सारा प्लेटफार्म हाथ में माला लिए तुर्की लाल टोपी पहिने
नरमुंडों से भरा हुआ था उतरे यात्रियों को निकलने के लिए और चढ़ने वाले
यात्रियों को डब्बे तक पहुंचने के लिए बीच में से इस भीड़ को पार करना
कठिन था। मुस्लिम धर्म का उत्साह से सारा स्टेशन गूंज रहा था। हाजियों
के स्वागत के लिए इस उमड़ते जोश और उल्लास ने अन्य यात्रियों के उतरने
पर उन का स्वागत किया। छाती से छाती लगा कर मिलना यह दृढ़ प्रेमालिंगन
माला और फूलों की वर्षा देखकर दिल सोचने लगा कि बदरिनाथ के यात्रियों
का भी हम क्या ऐसे ही स्वागत करते हैं मुसलमानों के ऐक्य और हिन्दुओं के अनैक्य
का कारण समझना कठिन न था। हिन्दु समाज के अंदर ऐसा कोई अवसर नहीं जब
सब हिन्दु अपने ऊंच नीच, अमीरी और गरीबी के भेद भाव को भूलकर आपस में मिलें
हिन्दुओं का संगठन असम्भव है जब तक कि जातपांत इसी तरह बने रहेंगे।

x x x x

सौभाग्य से जिस डिब्बे में बैठा था उसी में ४, ५ हाजी और बैठे थे। पर ठीक भी वह मेरी भाषा
अच्छी तरह नहीं समझ सकते थे न उन की भाषा मैं समझ सकता था। बोल चाल की बंगला
समझना बंगला पुस्तकों के पंडित भी नहीं समझ सकते थे। तिस पर तुर्रा यह कि वे सबके सब
बूढ़े थे और अशिक्षित थे। उन का पहिरावा भी बता रहा था कि वे कोई धनी और उच्च कुलो-
त्पन्न नहीं थे। सर अब्दुर रहीम का यह प्रयत्न कि बंगाली मुसलमानों की शिक्षा का माध्यम
बंगला न होकर उर्दू हो जहां भारतीय राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से लाभजनक हो सकता है। क्योंकि
उर्दू और हिन्दी एक भाषा है केवल लिपि का अंतर है, पर वहां के बंगाली मुसलमानों पर हो
अत्याचार होगा उर्दू उन के लिए वैसी ही है जैसी हमारे लिए बंगला या अन्य प्रांतीय भाषायें।

x x x x

हिन्दु मुस्लिम भावों का गाड़ी में अच्छा परिचय मिला। डब्बे में एक बंगाली साधु आये आते ही
पैरों की बात इन्होंने छेड़ी सब हिन्दुस्तानी हां में हां मिलाकर मुसलमानों को बुरा भला कहने
लगे संयासी को नेता पाकर सब हिन्दु छुप कर दिखाने को उत्सुक थे डब्बे में बैठे बूढ़े हज्ज या-
त्रियों की ओर नज़र गई। ये लोग करांची से आ रहे थे इन का सोना स्वाभाविक था पर संयासी
की नजरों में यह पाप था कि कोई मुसलमान सोये टेउ बैठक कर हमारे सामने नमाज पढ़े।
सोते हुए आदमी को उठाने के लिए दो हिन्दु राजपूत जवान उस पर चढ़ बैठे पर वह भी
पत्थर बने पड़ा रहा राजपूत जवान निराश हो कर उतर गए इसी समय दृश्य ने पलटा
खाया दूसरे हज यात्री ने बंगला में कुछ कहा। यू. पी. के हिन्दु जहां इस को समझते थे कि
हम को यह गाली दे रहा है वहां बंगाली साधु का बंगला भाषा एक बंगाली के मुंह से सुन स्वदेश प्रेम
जाग उठा। नमीं से साधु महाराज बातें करने लगे। जब नेता ही पलट गया तब हिन्दु लोग अपने २ कामों
में लगे। पर इ टही में जाने वाले मुसलमानों को तंग करने में कोई कसर नहीं रक्खी गई। पर हां।
साधु महाराज अब बढ़ावा नहीं दे रहे थे न उत्साह दान करते थे इस में भी मज़े की बात यह कि
यह सब लोग बूढ़े मुसल्मानों को तंग कर रहे थे जो इन की भाषा समझ नहीं पाते थे पर यू. पी.
के मुसलमान से बोलने का साहस तक न करते थे। उस के पास एक बेंच खाली थी उसने आराम
से नमाज पढ़ी। दो तीन फब्तियें भी उन को बताई मेरे लिए सारा दृश्य दुःखदायी था हिन्दु
संगठन यदि इस का नाम है तो यह न हो तो अच्छा है हिन्दु लोगों की प्रवृत्तियां किधर जा रही हैं
यह दिखाने के लिए यह घटना लिखी है इन प्रवृत्तियों को उकसाने वाला कौन है यह यहां विचार-
णीय नहीं है।

x x x x

पिछले दोनों मासों में मुसल्मानों का धर्म प्रेम सचित्र दिखाई दिया। हम उस धर्म से घृणा कर
सकते हैं, उस के आदर्श को न करने की दृष्टि से देख सकते हैं पर यह मानना होगा कि जहां भी
कोई मुसलमान होगा नमाज का वक्त आने पर नमाज के समय नमाज करेंगे से न
चूकेगा गांव में सब से पहली आवाज मुसलमान के बांग की सुनाई देगी। क्या
हम हिन्दू लोग भी अपने धर्म से ऐसा ही प्रेम रखते हैं ?।

x x x x

बंगाली रंगमंच

स्त्री पार्ट पुरुषों द्वारा – 'राष्ट्रीय नाटक मंडली' में स्त्रियों के भाग को खेलने वालों में निम्न व्यक्तियों नाम ध्यान देने योग्य हैं :– बाबू अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी, बाबू अमृत लाल बोस, बाबू क्षेत्र मोहन गंगुली इत्यादि इन्होंने स्त्रियों का Part बड़ी चतुरता से किया - बेल बाबू क्षेत्र बाबू का सहयोगी था। 'लीलावती' के रिहर्सल के समय बाबू गिरिश चन्द्र घोष को क्षेत्र बाबू का परिचय नगेन्द्रनाथ बनर्जी ने करवाया था और ये भी स्त्रियों के भाग के लिये चुने गए। बाबू क्षेत्र मोहन गंगुली स्त्रियों के नाटक मण्डली में प्रवेश करने के उपरान्त भी वीरांगनाओं का पार्ट करते रहे।

महान राष्ट्रीय नाटक मण्डली – बाबू धर्मदास सूर और बाबू भुवन मोहन न्योगी का बंगाली नाटक के अधिकारियों के साथ छोटी बात पर तकरार हो जाने के कारण इस महान् राष्ट्रीय नाटक मंडली का जन्म हुआ जो Beadon Street में खड़ा किया गया जहां पर कि इस समय मिनर्वा नाटक बना हुआ है। बाबू भुवन मोहन न्योगी इस धन से सहायता देते थे और बाबू धर्मदास सूर ने इसका निर्माण किया जो कि पहिले प्रबन्धक रह चुके थे। इस थियेटर की व्यवस्था करने में बाबू योगेन्द्रनाथ मित्र ने भी सहायता की थी। इसमें सान्याल घर के राष्ट्रीय नाटक मंडली के अवशिष्ट नर भी इसमें पार्ट करते थे। यह Great National theatre १८७३ की ३१वीं दिसम्बर को स्थापित हुआ।

स्त्री नटी – यद्यपि बाबू गिरिश चन्द्र घोष प्रारंभ में प्रत्यक्ष तौर पर इसमें सम्मिलित नहीं थे परन्तु अप्रत्यक्ष तौर से इससे संबन्ध रखते थे। 'मृणालिनी' नाटक १८७४ की १४ फर्वरी को उनके द्वारा खेला गया जिसमें कि उन्होंने 'पशुपति' का पार्ट लिया। कुछ महीनों बाद 'कपाल कुण्डला' नाटक खेला गया स्त्री नटियों ने इसमें उसी वर्ष की १९वीं सेप्टेम्बर को प्रवेश किया जब कि 'सती कलंकिनी' का खेल हुआ। इसके बाद उस थियेटर का व्यवस्थापक बाबू प्रताप चन्द्र जौहरी जो कि मारवाड़ी व्यापारी थे, बने और मैनेजर का पद गिरिश बाबू ने अलंकृत किया और इसी समय से बंगाली रंगमंच उनके पूर्ण रूप से हाथ में आ गया। वह ही सब खेलों का कर्ता था अतः बंगाली स्टेज का पिता गिरीश बाबू को कहा जाता है।

विजय वैजयन्ती

गिरिश बाबू का 'सधवा वध' नामक नाटक सबसे पहिले राष्ट्रीय नाटक मंडली में खेला गया।

गिरीश और उसके सहायक – कुछ सालों बाद गिरिश चन्द्र ने अपना संबन्ध प्रतापलाल जौहरी और उनकी नाटक मंडली से तोड़ दिया। उसी के साथ २ अमृत लाल मित्र, अमृत लाल बोस, हरीप्रसाद बोस और देश्चरन घोष आदि थे जो उन्हीं के साथ ही राष्ट्रीय नाटक मंडली में प्रविष्ट हुए थे उसको छोड़ कर चले गये।

Bangali theatre – सान्याल घर के National theatre के खेलों से प्रभावित होकर बाबू शरत्चन्द्र घोष ने बाबू बिहारीलाल चटर्जी से मिल Bangali theatre १८७३ अगस्त में खोला और उसी साल ही Beandon Streets में 'शर्मिष्ठा' नाम का खेल हुआ और उसके बाद ही 'मायाकन्या' का अभिनय किया गया।

महन्त की घटना – तारके श्वर के महन्त और एलोकेशी के आन्दोलन से प्रभावित हो बाबू जादू गोपाल चटर्जी ने 'महन्त एलोकेशी' नाम का ड्रामा लिखा। महन्त का पार्ट विहारी बाबू ने किया। बाबू बंकिम का 'दुर्गेशनन्दिनी' भी बड़ी उत्तमता से खेला गया शरत्चन्द्र घोष ने 'जगत सिंह' का हरीबोस ने 'उस्मान' का विहारी बाबू ने 'अभिराम स्वामी' का पार्ट लिया। Bangali theatre के स्थापना दिवस से - १८७३ से १८९१ तक बाबू विहारी लाल चटर्जी इसके व्यवस्थापक रहे और यह भी Bangal theatre की मृत्यु के बाद २ सप्ताह के भीतर ही बन्द होगया।

बाबू शरत्चन्द्र घोष की असामयिक मृत्यु के बाद विहारी बाबू ही Bangali theatre के जीवन थे, वे कवि थे, नाटककार थे एवं उन्होंने बहुत से बंगाली नाटक लिखे जो कि Bangali theatre में खेले गये। बंकिम बाबू के अपने नाटक भी Bangali theatre में खेले गये।

राजकीय नाटक मण्डली – १८७० में जबकि H.R.H. एल्बर्ट कलकत्ता पधारे थे तब Bangali theatre में उनके सम्मान में नाटक खेला गया। इसके बाद से ही इसने 'राजकीय नाटक मण्डली' नाम धारण किया। विहारी बाबू शेक्सपीयर के विद्वान और रिचर्डसन के शिष्य थे। आपका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था।

Royal Bangali theatre के बाद अन्य बहुत सी कंपनियों ने वहां पर अपने नाटक किये पर वे सफल न हुए। इन सब के नष्ट हो जाने के बाद नयी इमारत खड़ी करके Beandon square post office बना दिया गया है।

(असमाप्त)

वॉली बॉल के दृश्य

mera
Turn gharab ho-gia
out!
on the line!
goal
Hawn - 6. Oclock
Kuch parwah नहीं
too high
'ng 'ng 'ng
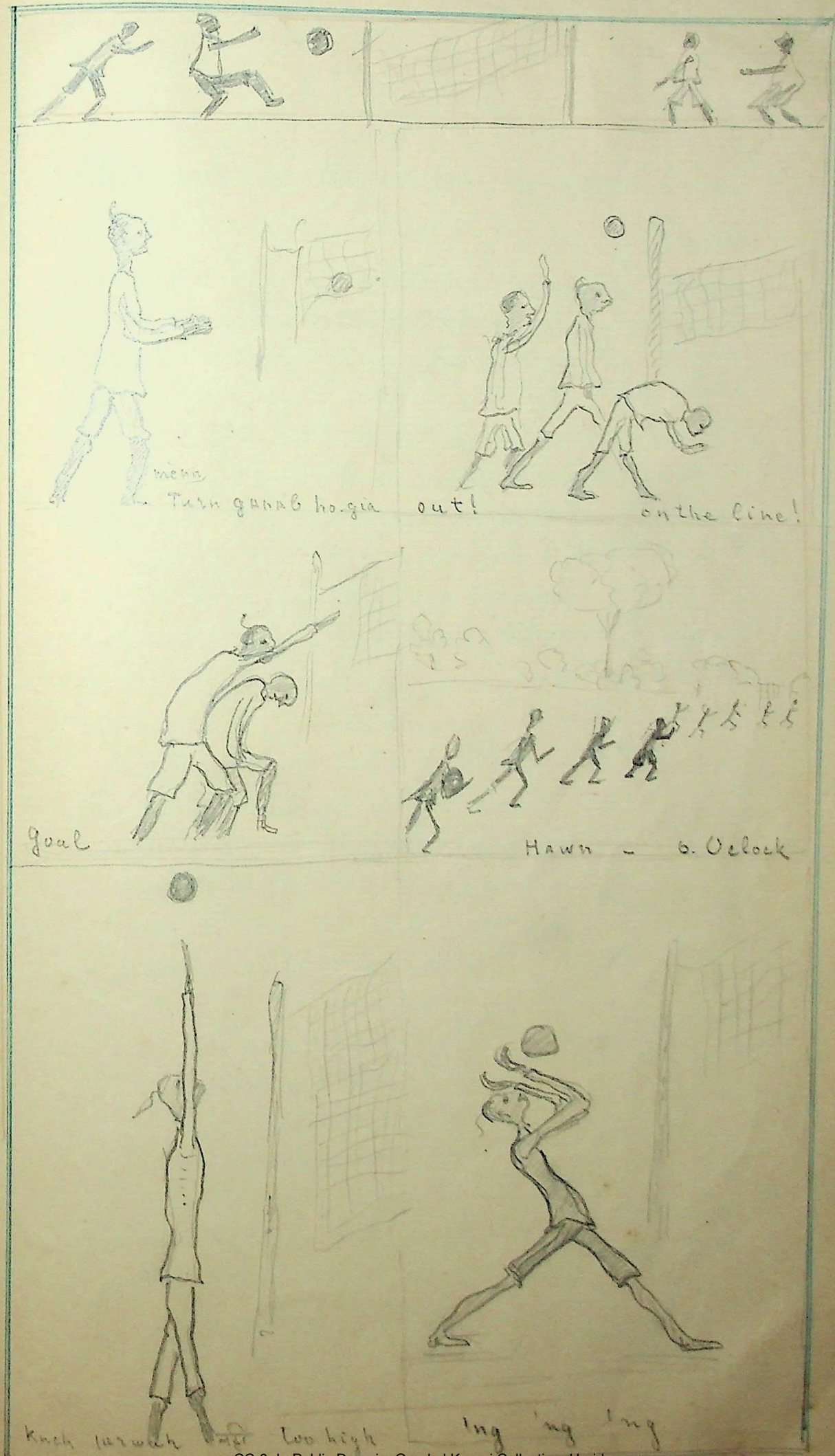
स्वराज्य क्या है।

स्वराज्य क्या है.

हम स्वराज्य प्रेमियों को मन, वचन, कर्म से सब पर साबित कर देना है कि हम हिन्दू राज्य या मुसलमानी राज्य नहीं चाहते। इसलामी सभ्यता को मिटाकर वैदिक सभ्यता कायम करना या किसी एक सभ्यता या संप्रदाय, किसी एक फिर्का या श्रेणी का दूसरी सभ्यताओं संप्रदायों, फिर्कों और श्रेणियों को मिटाना या दबाना यह स्वराज्य का अर्थ नहीं है।

स्वराज्य तो वसंत की हवा है जिसके चलते ही जमीन का ज़र्रा ज़र्रा निखर जाता है पत्ता पत्ता संवर जाता है, रंग बिरंगे फूल खिल उठते हैं और रग रग में खून दौड़ जाता है। वसन्त की हवा से एक ही रंग के फूल नहीं खिलते बल्कि यह सारी चेतन सृष्टि पनप उठती है। उसी तरह स्वराज्य में भी सब धर्मों और संप्रदायों की बहार आवेगी। अब वे दिन नहीं रहे कि किसी स्वतंत्र देश में एक धर्म अथवा एक श्रेणी के लोग दूसरे को दबा सकें। स्वराज्य ही परस्पर स्वार्थ और अन्याय से और अन्य देशों के हमले स्वार्थ और अन्याय से हमें बचायेगा।

"श्री संपूर्णानन्द"

क्या यह उचित अभिमान है-श्री स्टेनले राइस महोदय एशियाटिक रिव्यू नामक पत्र में शासक देश से शासित देशों पर लिखते हुए भारत के बारे में लिखते हैं :—

"शासक देश से शासित देशों के उदाहरण सम्मुख रखते हुए धर्म बाधा रहित है, विचार बन्धन विहीन है, व्यापार मुक्त है। भूमि वहां के निवासियों के अधिकार में है शिक्षा ने आश्चर्यजनक उन्नति की है। अन्तिम, पर सर्वाधिक महत्व पूर्ण बात यह है कि भारत से लौटा हुआ ऐसा कोई अंग्रेज नहीं है जो भारत भूमि के लिये प्रसन्नतादायक स्मृतियां साथ न लाया और अपने प्रेमी मित्र वहां न छोड़े। उसके लिये भारतीय किसानों के लिये बड़ा ही प्रेम भरा है। स्वातंत्र्य इच्छा के अतिरोध ने इस चमकीले दृश्य को धुंधला कर दिया है पर अब भी भावपूर्ण आदर्श व्यक्तिगत संबन्ध सहयोगमय हैं। हम भारतीय शासन की रिपोर्ट किसी अन्तर्राष्ट्रीय समिति के सामने नहीं पेश करते परन्तु हम संसार के पंचों के फैसले के सामने खड़े होने को उद्यत हैं। यदि और सारे शासक देशों का प्रबन्ध भारत की तरह किया जावे तो भारतीय शासन प्रबन्ध में शिकायत की गुंजाइश न रहेगी।" श्री राइस पूर्वीय अफ्रीका और भारत की तुलना करते हुए यह भूल गये कि भारत अफ्रीका नहीं है जैसा उन्होंने आगे कहा है कि "इस देश की सभ्यता प्राचीन है और प्रत्येक अंग्रेज को स्वराज्य देना चाहिये।" पर अफ्रीका का शासक देश अभी कुछ अनभी इस साल भी नहीं हुए हैं और भारत का शासन अंग्रेजों के हाथ में १२० वर्ष

विजय-वैजयन्ती.

साल से ज्यादा हो गये हैं। इस अरसे में पढ़ने या लिखने वाले कुल मिलाकर १ करोड़ २० लाख आदमी हैं जहां की आबादी ३३ करोड़ लोगों की है। यह शिक्षा की आश्चर्यजनक उन्नति है। धर्म की स्वतंत्रता, प्रयाग की रामलीला का बन्द होना बता रहा है। किसानों के लिये शासकों के हृदय में कितना प्रेम है यह सर चमन लाल के इस कथन से स्पष्ट पता लगता है कि ४० लाख आदमी एक समय आधा पेट खाकर गुज़र करते हैं। गुरु द्वार व्यापार भारत का है और अभी तक कच्चा माल पैदा करने वाला बना हुआ है। इन डेढ़ सौ सालों में भारत ने कितना पाया है और कितना खोया है, यदि इसके आंकड़े इकट्ठे किये जांय, तो पता लगेगा कि ब्रिटिश प्रभुत्व कितना भारत के हक में नुकसान पहुंचाने वाला है। ब्रिटिश शासन के द्वारा जो नैतिक पतन हुआ है वह इस हिसाब से परे है। क्या इसी पर अंग्रेज लोगों का नाज़ है।

जननी

भुवन मन मोहिनी जग-जयिनी

जयति जय जय भारत जननी ॥

देह कटि और सुविशाल, हिमाचल अंबर चुंबित भाल
जाह्नवी जमुना उरमणि माल, अनिल-कंपित-अंचल धरणी ॥ भुवन ॥
रवि धनु लसित छत्र घनश्याम, शुभ नक्षत्र हार किरीट ललाम।
दक्षिण कच्छ, गंग भुज वाम, चारु हासिनी शुचि शशिवदनी ॥
श्याम वन उपवन कुंचित केश, सुधा स्रावक कुच कलश अशेष।
जानु युग सिंधु कूल सुविशेष, नीरनिधि सिंहासन करणी ॥
जयति जय मुक्ति-भुक्ति-दातार, पुण्य प्रतिमा प्रतिभा अवतार।
भद्र भाविनी - समृद्धि भंडार, देवि कमला सरसिज शयनि ॥
जयति जय कलिमल-दलनि कराल, भीम रूपिणी युग लोचन ज्वाल।
विधृत कर दश-पाणि प्रखर कर-बाल, मुंड-मालिनी, अरि दलिनी ॥
सुचिर कल्याण मयि माँ, धन्य, शक्ति स्वातंत्र्य-स्वरूप अनन्य।
ज्ञान-गौरव-गरिमा-संपन्न, वीर प्रसविनी, भव-भय-हरिणी ॥

(स्वर्गीय श्री शिव प्रसाद गुप्त 'कुसुम' के अप्रकाशित नाटक से)

विजय-वैजयन्ती.

गगनाङ्गण में—

कुमार प्रेस में विजय-वैजयन्ती — हम अपने पाठकों के पास यह समाचार बड़ी प्रसन्नता के साथ पहुंचाना चाहते हैं कि विजय-वैजयन्ती के ३ पिछले पत्र गुजराती "कुमार" के संपादक महोदय ने अपने कार्यालय में रख लिये हैं। कुमार में 'विजय वैजयन्ती' हुबहू अनुदित हो कर निकलेगी प्रकाशित होगी। अद्यावधि यह सौभाग्य अन्य गुरुकुलीय पत्रपत्रिकाओं को अभी नहीं प्राप्त हुआ है। इस प्रथम सौभाग्य पर यदि विजय वैजयन्ती के कार्यकर्ता अपने परिश्रम को सफल समझें तो अनुचित न होगा।

मिल गई — ब्रह्मचारियों को यह सुन कर हर्ष होगा कि ५०० बीघे जमीन हरिद्वार स्टेशन से लगभग २ मील दूर और ज्वालापुर शहर से १¼ मील पर गुरुकुल के लिये मिल गई है। यहां से नहर २½ मील दूर है। दीवाली के दिन जमीन मिलने का समाचार का मिलना शुभ है। नई जमीन की नई लहरों की कल्पना कुलवासियों में उठनी स्वाभाविक है। परमात्मा उन कल्पनाओं को मूर्त रूप दे यही हमारी हार्दिक इच्छा है।

तथ्य क्या है :— यह सुनते रहते आए हैं कि कुल में जीवन नहीं है। कुल का जीवन प्रवाह इस समय ठहरा हुआ है। हजारों वायु के झोंके भी लहरें भी इस जल को आन्दोलित करने में समर्थ नहीं है। पर क्या यह वास्तव तथ्य है? हमारा कहना है कि जीवन है पर बंधा हुआ है। हमारे में इच्छा करने की शक्ति है पर कार्य की लगन नहीं है। हम उत्तरदायित्व को अनुभव नहीं करते। उत्तरदायित्व लेने से हम में से प्रत्येक बचना चाहता है। जो कोई लेता है उसको फिर हम स्वतन्त्र समझ छोड़ देते हैं। जरा सी गलती पर तिल का ताड़ बना दिया जाता है। यह नहीं सोचा जाता कि इसमें हमारा भी हाथ है। यदि यह काम खराब हुआ है तो क्या हम उसके लिये जवाबदेह नहीं। एक सभा का मंत्री जहां जवाबदेह है किसी काम के लिये, वहां सभा के सभ्य भी उतने ही अंशों में उस काम के लिये जवाबदेह हैं। जब तक हम यह नहीं अनुभव करेंगे तब तक कुल के जीवन में परिवर्तन होना संभव नहीं है। हमारा सहयोग निर्वाचनों तक रहता है उसके बाद मंत्री को अकेला छोड़ दिया जाता है। इस के अलावा हम लोग किसी दूसरे के नीचे रहना सर्वथा पसंद नहीं करते। एक बाहर वाले आदमी के नीचे हम खुशी से रहते हैं पर अपने आदमी के नीचे रहने को हम तैयार नहीं हैं। जब तक यह मनोवृत्ति बनी हुई है तब तक कुल के जीवन में परिवर्तन की आशा करना बिल्कुल बेकार है। अनुशासन और नियंत्रण के बिना समाज का जीवन संघटित और व्यवस्थित नहीं रह सकता। हम में इन दोनों का अभाव है पहिले भी ये दोनों बातें हम में न थी पर उस समय हमारा ध्यान दूसरी ओर था। सब शक्तियां हमारी उधर लगी रहती थी आज जब उधर का कोई झमेला नहीं तब हम आपस में उन शक्तियों का उपयोग कर रहे हैं। हम वैध उपायों और वैध प्रणाली का मार्ग ग्रहण करना पसंद नहीं करते। चाहे जैसे हमारी इच्छा पूरी होनी चाहिये। जो लोग आजकल मुख्य हैं क्या वे लोग कभी लोकमत की परवाह करते हैं? पर आश्चर्य यह है कि जो लोग लोकमत की उपेक्षा कर उपद्रव करते हैं वही हमारे अगुआ

बनते हैं। हमको इन बातों पर गंभीर विचार करना चाहिये वरना आगे भी यही सुनते रहेंगे कि कुल में जीवन नहीं है।

कारण क्या है — कुल में जीवन-प्रवाह के शिथिल हो जाने के कारणों में सभाओं का भी शिथिल हो जाना है। सभायें जब शिथिल हुई है तभी जीवन प्रवाह मन्द हो गया है। सभाओं का जीवन शिथिल क्यों है यह सोचने के लिये बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं। सूचनायें निकल जाती है और कोरम हो जाती है और अधिवेशन नहीं होता न उद्योजित कार्य होता है क्योंकि इन बातों को हम उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। हम सप्ताह में २, ३ घंटे भी अपने सामाजिक जीवन को बनाये रखने के लिये देने को उद्यत नहीं हैं। जब तक यह हालत है तब तक कुछ अधिक की आशा करनी व्यर्थ है।

आगामी निर्वाचन — दिवाली के बाद सभाओं के कार्यकर्ताओं और कुल मंत्री का चुनाव होने वाला है हम इस अवसर पर कुल बन्धुओं से कहना चाहते हैं सभाओं के कार्यकर्ताओं के चुनाव करते हुए यह ध्यान रखियेगा कि ये सज्जन दिलचस्पी लेते हैं या नहीं। केवल योग्यता काम नहीं देती। जो लोग रात दिन पसीना बहा कर तल्लीन होकर कार्य करते हैं वे लोग हमारे विचार मानने के अधिकारी हैं। हमारे हाथ में एक अपने भाई का सत्कार करने का केवल यही तरीका है। इस शक्ति को हमें खूब सोच विचार कर उपयोग करना चाहिये। कई ऐसे सज्जन कार्यकारिणी में पहुंच जाते हैं जो कभी साधारण अधिवेशन में दर्शन तक नहीं देते। कार्यकारिणी में भी कई बार बुलाने पर आते हैं। कई सज्जन अधिकारी बनने तक कार्य करते हैं असहयोग कर लेते हैं। इन सब बातों पर विचार करके अपनी वोट का उपयोग करना चाहिये। यदि सचमुच जीवन के शैथिल्य को दूर करना चाहते हैं तो यह हमारे हाथ में है कि हम अपने वोट का उपयोग ठीक तौर से करें। हमें सभाओं के पुराने कार्यकर्ताओं से कहना है कि आप लोगों को अपने स्थान नये लोगों के लिये खुशी से छोड़ देने चाहिये। आपकी शोभा इसी में है कि आप अनुशासन का उत्तम आदर्श नये सदस्यों के सामने रखें। हमें विश्वास है कि ये बातें जिस भाव से लिखी गई हैं उसी भाव से ली जायगी।

एक प्रस्ताव — कुल मंत्री का चुनाव दिवाली के बाद होगा। कौन उम्मेदवार है और इन उम्मेदवारों में कौन वोट पाने के अधिकारी है इन बातों की चर्चा हम लोग नहीं चलाना चाहते कि कुल मंत्री का चुनाव करते समय 'रजत जयन्ती' को न भूलियेगा। हम समझते हैं कि जिस प्रकार से इस समय चुनाव होता है वह उपयुक्त नहीं है। हम चाहते हैं कि कुल मंत्री का चुनाव इस हिसाब से हो कि इतने वोटों में से जो इतने वोट पायेगा वह कुल मंत्री-पद का अधिकारी होगा। चाहे वह संख्या कुल मतों की १/२ हो या १/४ हो या ३/४ हो। इससे यह लाभ होगा कि कोई ऐसा व्यक्ति कुल मंत्री न हो सकेगा जिसको कॉलिज का बहुमत नहीं चाहता। वर्तमान प्रणाली में यह संभव है कि जैसा कि गत वर्ष हुआ था। कॉलिज के केवल १/४ वोटों से कुलमंत्री चुना गया था अन्य उम्मेदवारों की अपेक्षा ज्यादा वोट जरूर थे पर कॉलिज का बहुमत उधर न था। इससे पीछे से कुलमंत्री को

गगनाङ्कुर में

जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है उनसे कुलमंत्री बच जायगा और किसी को असन्तुष्ट होने का भी मौका न मिलेगा।

दूसरा प्रस्ताव यह है कि क्रीड़ामंत्री का चुनाव इसी समय दीवाली के बाद हुआ करे। इससे जहां क्रीड़ामंत्री इससे आराम कर सकेगा वहां अगले साल में होने वाले क्रीड़ामंत्री को सामान के अभाव का मुकाबिला न करना पड़ेगा। आशा है कि हमारे इन प्रस्तावों पर विचार किया जायगा

आवश्यकता है

१- वैजयन्ती के लिए चतुर कार्टून कारों तथा स्केच कर्ताओं की, जो प्रतिदिन गुरुकुलीय खेलों के चित्र दे सकें॥

× × ×

२- सन्देश हरों तथा संवाद दाताओं की जो प्रतिदिन गुरुकुलीय खबरें शीघ्र पहुंचा सकें।

× × ×

३- आशु कवियों की जो गुरुकुलीय ओलिम्पस की खेलों की काव्य-मय मनोरंजक रिपोर्ट वैजयन्ती में प्रतिदिन दे सकें। पुरस्कार की आयोजना है।

४- यात्रियों के अनुभव तथा अन्य प्रकार के बोधप्रद लेख छापने के लिए "वैजयन्ती" के कालम खुले हैं- जो भाई देना चाहें शीघ्र ही देवें।

प्रबन्धकर्ता
दैनिक "विजय की वैजयन्ती"

कल की ख़बरें।

वॉली बॉल में ~~पटियाला दल~~ धीर दल विजयी रहा।

— चौरंगी हॉकी सान्मुख्य की धूम —

—— क्रीड़ा क्षेत्र में हॉकी का जंग ——

दलों का अपूर्व उत्साह :: वाह वाह की धूम

हीरक दल विजयी हुआ !!!

— दर्शकों की भीड़ —

एफ़. यू. सी. पराजित हुई !!

मुकुट

और :-

हीरक दल फाइनल में पहुंचे !!

५ नवम्बर शुक्रवार प्रातः काल को

— फिर चतुरंगी मैच होगा —

ओ३म्

आईये !! आईये !!

गु० कु० चौरंगी सान्मुख्य

राम देव

वर्ष ४ | सम्पादक – अङ्गिरा श्रीमाल, आदि. | अङ्क १.

कविता तथा विनोद.

नाचत हियौ मेरो सुनि सुनि जय राम की ।

बाजति हैं भेरी शहनाई, घर घर मङ्गल होति बधाई ।
सब मिलि बोलें जय रघुराई, जय जय सुखमा धाम की ॥ नाचत हियौ०
दशकन्धर को मारि गिरायौ, पापताप को नाम मिटायौ
धर्म 'वैजयन्ती' फहरायौ, जय जय पूरण काम की ॥ नाचत हियौ०
मुकुट धरौ जग का सिर ऊपर, रवि कुलकुमुद कमल शशि दिनकर
बिलसैं मुक्ता माल पहिर कर जय जय सीय ललाम की ॥ नाचत हियौ मेरो० ।

श्री पु. आनन्द

विजय वैजयन्ती.

विशालता

१.

ज़मीन और आसमान.

…नीले आसमान को देखता हूं तो मुझे संसार में यही एक सब [illegible] चीज़ दिखाई देती है। इस विशाल गम्भीर नीले आसमान में [illegible] का खज़ाना भरा हुवा है। न जाने कौन कौन से मधुर संगीत हरवक्त इस में से निकल कर दिग्दिगन्त में फैलते रहते हैं। मैं उन तानों को सुन कर मुग्ध रह जाता हूं। जब मैं इस की विशालता का अनुभव करता हूं तो मैं सोचने लग जाता हूं कि क्या संसार में और भी कोई वस्तु इतनी विशाल है।

~~फिर~~ इस ज़मीन को भी तो देखो, यह भी कितनी विशाल है। इसे इसी लिये पृथवी कहते हैं क्योंकि यह फैली हुई है। इस हरी हरी विशाल भूमि और इस नीले आसमान में कितनी समानता है। मैं जितनी दूर दृष्टि दौड़ाता हूं यह समता मुझे बराबर बढ़ती हुई ~~सा~~ नज़र आती है। वह देखो, वह दूर, अनन्त दूरी पर किस प्रकार ये दोनों एक दूसरे से मिल रहे हैं। मैं जब भूतल और स्वर्ग के इस दिग्दिगन्त में व्यापक अनुपम मेल को देखता हूं तो मेरी दृष्टि वहीं गड़ जाती है। प्रकृति की इस विशाल समता को मैं ~~अनुभव~~ हृदय में नहीं समा सकता. क्यूं? अनुभव के लिये विशाल हृदय चाहिये, ओह! मेरा हृदय इतना विशाल नहीं.

आज क्या है कल क्या होगा ?

(एक गल्प)

आज [illegible] चांदनी में मेज़ के पास मौज उड़ रही है। मित्रों की गप्पाष्टकें आसमान से बातें कर रही हैं, हर एक के दिल बांसों उछल रहे हैं। चेहरे की मुस्कराहट प्रत्येक के अनुपम आनन्द की छटा को प्रदर्शित कर रही है, न जाने आज कौन सा ऐसा आनन्द है जिस के उपलक्ष्य में कोई किसी की कुछ सुनता ही नहीं। सब अपने ही में मस्त हैं, अपने ही राग की धुन में हैं। उन्हें दूसरे की कुछ परवाह नहीं।

किसी को मालूम न था कि अब क्या होगा. एक दम सामने [illegible] बार फायर हुवे के आदमी वहीं उछले [illegible], कुछ एक ने शोर मचाया, शेष की जो हालत [illegible] होगी, पाठक स्वयं उस का अनुमान कर लें। कोई मेज़ के नीचे छुप रहा, कोई आराम के नीचे घुसा, तो कोई किसी किसी कोने में जा दुबका. हर एक ने किसी न किसी प्रकार अपनी रक्षा की. सचमुच रंग में भंग हो गया, आनन्द में दुःख समा गया. आगे लिखते हुवे हाथ कांपता है, जी घबराता है, लेकिन फिर भी पाठकों की उत्सुकता के अनुरोध से लिखना ही होगा.।

अभी देर न हुई थी कि पुलिस मय कप्तान के वहां आ धमकी। इस समय सवेरा होने को था तारे झिलमिला रहे थे, मानों आंखों की पलकें मार मार कर एक दूसरे से इशारे में बातें कर रहे थे कि चलो चलें अब हमारा समय हो चुका. इसी समय पुलिस ने अपनी तहकी[illegible] शुरू की. [illegible] धीरे धीरे पर्वत के एक कोने से विद्युत के समान तीक्ष्ण प्रकाश आकर वहां पड़ने लगा. धीरे धीरे प्रकाश बढ़ता गया, कुछ समय बाद सब की आंखें चौंधियाने लगीं। पुलिस और कप्तान असमंजस में पड़ गये कि क्या करें। यहां तो इस के सिवा कुछ दीखता ही न था. हताश हो पुलिस लौट पड़ी। धीरे धीरे प्रकाश भी लुप्त हो गया.

मैं एक वृक्ष पर बैठा हुवा यह सब कुछ देख रहा था, न जाने ईश्वर ने मुझे ऐसी शक्ति कहां से दी थी. इतना साहस इस समय न जाने कहां से आ गया, कि मैं इस सारे [illegible] को देखता रहा बेहोश होकर नीचे गिर न पड़ा। थोड़ी देर बाद फिर फौज के साथ पुलिस के सिपाही आते दिखाई दिये। इतने ही मालूम नहीं किस तरफ से फिर पहिले का सा प्रकाश हुवा, पर कुछ समय बाद प्रकाश हट गया और अंधकार शुरू हुवा. इस पर पुलिस वालों ने बिजली की बत्तियां जला लीं। पर आश्चर्य यह कि ज्यों ज्यों वे बत्तियां बढ़ाते जाते थे अंधेरा भी उतना घना होता जाता था। मैं तो चक्कर में आ गया था कि यह क्या माजरा है। मैं डरा, कहीं मुझ पर ही आफत न आ जाय. आज [illegible] होगी, श्वास भी बन्द होने लगा. पुलिस इसी बीच में लौट गई। चारों ओर फिर प्रकाश हो गया. होगा ? मैं वृक्ष पर पेट के बल पड़ रहा. कुछ देर बाद मारे डर के

मेरी उत्सुकता बढ़ गई। मैंने सोचा, [illegible] किसी प्रकार मालूम करूं कि यह सब क्या गोरखधन्धा है। दिल में कौतूहल था, चाहता था जाकर कुछ पूछूं, पर दिल धड़कता था. बहुत देर यों ही बैठा रहा. इस समय भी वहां कुछ लोग बैठे थे। मैं भी [illegible] एक भोली सूरत के पास गया. लेकिन [illegible] ही नज़र से मैं तो [illegible] से ज़मीन पर गिर पड़ा। उसे कुछ दया आ गई। उस ने [illegible] बड़ी नर्मी से पूछा —— तुम कौन हो? यहां क्यों आये हो? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि इस [illegible]

मैं अपना या इसे देखना हथेली पर जान रखना है। बस तुम चले जाओ, नहीं तो — "

मेरी आंखें उस के प्रकाश से चकरा गईं; मैं बोलना चाहता था, लेकिन बोल न सका, चुपचाप हाथ जोड़े खड़ा का खड़ा रह गया। —

उसने फिर कहा — " चले जाओ, नहीं तो अब की बार — "

मैं पत्थर की तरह अचल था, कुछ भी न कर सका। उसने अब की बार लाल प्रकाश की किरणें फैंकते हुवे कहा, "क्या तुम नहीं जाओगे? अब की बार तो अवश्य ही — " पर बताइये मैं क्या करता, डर के मारे मेरे कदम न आगे उठते थे न पीछे, आंखें न खुली रहना चाहती थीं, न बन्द हो सकती थीं। मैं ज्यों का त्यों खड़ा रहा.

उस के सामने लाल रंग का मिला प्रकाश मुख पर पड़ने लगा। उस ने झट से ऊपर को हाथ किया. फि. उस के हाथ में मुझे एक पतली रस्सी सी दिखाई दी। उसने मुझे बांधना शुरू किया. अब तो ग़ज़ब हो गया, आफ़त का पहाड़ आ टूटा। मेरे सब अंगों में एक एक अंग से भी ऐसी मज़बूत जकड़ गई, मानों सब अंग अभी टूट जावेंगे। उस हालत को आज याद करते भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं, आंखों पर अंधेरा छा जाता है।

उस ने अपना हाथ मेरी आंखों पर फेर दिया, मुझे दिखना बन्द हो गया. फिर झट से उसने अपना हाथ जोर ज़मीन पर मारा। न जाने वह किस रास्ते, ज़मीन के अन्दर होकर मुझे कहां उठा ले चला। अभी मुझे दिखता भी न था. उस ने मुझे एक लोहे के तख्त पर ला बिठाया मैं चुप रहा, बोलता तो जान का खतरा था. बोलने की शक्ति भी तो नहीं थी। तीन दिन इसी तरह रहा, न कुछ खाया न पीया.

चौथे दिन मुझे फिर वहीं पहुंचाया गया और उसी प्रकार फिर उसने मुझे कहा —
" अब तो चले जाओगे न? "

मैं फिर अवाक् रह गया, पीछे मुड़ कर के देखा तो फ़ौज के झुंड के झुंड जमा थे. उन लोगों ने इस जगह को दो तीन मील तक घेर रखा था। इस समय उस आदमी के साथ एक और भी भोली भाली शक्ल थी। उस ने ताली बजाई; इस पर मेरे देखते ही देखते मिनट भर में सारी फ़ौज रसातल में चली गयी। इस के बाद फ़ौज की तो कोई बात मुझे याद नहीं, अब कुछ उन लोगों के विषय में तथा अपनी हालत के बारे में कहूंगा ॥

— शेष फिर.

मियां मौलाबख़्श की सवारी

काश्मीर की अन्नुबात के अन्दर ~~मियां~~ भी मियां मौलाबख़्श का वर्णन न हुआ तो काश्मीर की यात्रा ही क्या रही! निशात और शालामार के फव्वारों में वह सौन्दर्य नहीं, हार्वन और मानसबल की झीलों में वह अनूठा पन नहीं जो इस दो पैर के पुतले के अन्दर था। आपके पैर बाइसिकल की तरह सड़क पर रिड़कने वाले थे। इनका काम केवल जम्मू से श्रीनगर और श्रीनगर से रावलपिण्डी के पड़ाव देखना था। बटोत के दृश्य, पीरा के स्वर्गीय झरने की अपेक्षा पड़ावों की बन्द काली कोठरियां इन्हें ज्यादा पसन्द आती थीं।

जिस समय मैं वैरीनाग के चश्मे पर बैठा हुआ अपने को भूल गया था, जब उस स्वर्गपुरी में बैठ दुनिया के झंझटों को भुला चुका था, जब आकाश से भी नीले, बर्फ से भी ठंडे चश्मे में मछलियों का रम्य कल्लोल देख रहा था उस समय इस हवाई ख़्याल ने हाथ पकड़ कर कहा 'चल, जल्दी चल श्रीनगर भी पहुंचना है ~~कि~~ नहीं'। मैंने आह भर कर कहा खुदा! क्या बहिश्त में भी इन मियां से पिण्ड न छूटे। ये Mile stone गिनने वाले स्वर्ग में भी आ पहुंचे हैं।

जब बटोत की चोटी पर अवर्णनीय दृश्य को देख रहा था। जब सूर्योदय के समय रश्मियां ओस के बिन्दुओं पर अपना नाच कर रही थीं जब चोटी पर चीड़ के वृक्षों से धीमी २ बयार सां सां कर रही थी, ठंडे झरने स्थान २ पर बह रहे थे उस समय यह ~~जानवर~~ मियां पड़ाव की काली कोठरी देखने के लिये सबसे आगे दोनों आंखें मूंदे दौड़े जा रहे थे। पास प्रकृति के रम्य कुञ्जों की फुलवारियां खिल रही थीं पर इन घुड़सवार को पगडण्डी के सिवाय कुछ नहीं दिखाता था।

जब मानसबल की शान्त, पर्वतमाला से घिरी हुई सुहावनी उल को देखा था जी में आया था कि इस बहिश्त के नज़ारे को घड़ी भर देख लूं मिंया साहब ने ~~श~~ भर कान पकड़ कर कहा अजी हमने आज ही श्रीनगर की गन्दी गलियों में पहुंचना है, इस पानी, कंकड़ पत्थर को कबतक देखते रहोगे। मैं भला क्या उत्तर दूँ, क्या मेरे नसीब ऐसे फूटे थे कि मैं इन नज़ारों को घड़ी भर भी न देख सकूंगा। मैं जी मार कर रह गया। दिल की आस दिल में ही ~~बंद~~ रहगई, बिस्तर बोरी उठा कर चल पड़ा।

और सुनिये! आपकी शेखी सबसे पहिले पड़ाव में पहुंचने में हो आपकी बहादुरी इसी बात में है कि औरों से पन्द्रह या बीस मिनट पहिले पहुंच जायें। जब एक बार पैर का पहिया छिड़का बस फिर क्या कहना। न बांये देखना न दांये। चश्मा आये, सुन्दर घाटी आये पर यह अपनी नाक की सीध में quick march करते हुए अपने निश्चित लक्ष्य (पड़ाव) पहुंचते थे। यह दृश्यों तथा फलों को अपने उद्देश्य सिद्धि में बाधक समझते थे।

इनका संयमी, तपस्वी, व्रती भी शायद ढूंढे ही मिले। चाहे पेट ~~भी मिले~~ खाली हो, पैर कंकड़ों के मारे छलनी होगये हों इनकी बहादुरी यह है कि यह सबसे आगे रहते थे। जब साथी लड़कों से मील भर आगे मिंया साहब हवा से बातें करते हुए तेज़ी से पग बढ़ाते हुए चले जाते थे तो देखते ही बनता था। जब शेष ब्रह्मचारियों से आगे होकर मौलाना साहब हरिण की चौकड़ी भरते थे तो मारे हंसी के पेट में बल पड़ जाते थे। पर मिंया साहब को इससे क्या कोई हंसे चाहे रोवे पड़ाव पर यह सबसे पहिले। पिछले ब्रह्मचारी चाहे भाड़ों में जायें पर रास्ता नापें। मिंया बरकत अलि को इससे क्या वे तो ~~सु~~ घुड़दौड़ में शामिल हुए हैं यदि पहिले पहुंचने का पारितोषक न मिला तो बात ही क्या रही

ले. आनन्दस्वरूप

गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सदस्य पकड़े गये हैं

आज ही समाचार मिला है कि पञ्जाब सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को गैर कानूनी सभा उद्घोषित कर दिया है। गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सम्पूर्ण सभ्य गिरफ़्तार कर लिये गये हैं। दिल्ली में भी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियों के सदस्यों की गिरफ़्तारियां हुईं। पुलिस ने प्रबन्धक कमेटी के दफ़्तर पर रात को छापा मारा. लगभग ३५० आदमी गिरफ़्तार किये जा चुके हैं। इन सब को क्रिमिनल लॉ एमण्डमेंट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किया गया है। प्रबन्ध-कमेटी का नया प्रधान और मन्त्री चुन लिया गया है। अकालीलोग अमृतसर में अकाल तख़्त के सामने इकट्ठे हो रहे हैं।

हम इस पर क्या टीका करें? दमन का शस्त्र सरकार ने फिर अपने हाथ में लिया है, वह इसे कई बार अज़मा कर देख चुकी है कि यह शस्त्र निरर्थक है, क्या अभी और भी अज़माना बाकी है?

सिक्खों के लिये यह बड़ी भारी परीक्षा का समय है; देखें अब वे लोग क्या करते हैं। अब इस कानून के लगने से यह धार्मिक प्रश्न ही नहीं, राजनीतिक प्रश्न बन गया है। क्या अन्य भारतीय इस में सहयोग न देंगे? सत्याग्रह शुरू करने का इससे और अच्छा मौका कौन सा होगा?

निर्वाचन

स्वराज्य दल कौंसिलों में निर्वाचन की लड़ाई लड़ रहा है। बङ्गाल में कुछ २४ निर्वाचन संस्थानों से स्वराज्य दल ने प्रतिनिधि खड़े किये हैं। बङ्गाल की कौंसिल के लिये क्या इतनी संख्या पर्याप्त है? क्या इतने ही मिलकर कौंसिलों को भङ्ग करने का प्रयत्न करेंगे? यह भी तो निश्चित नहीं कि ये चौबीस के चौबीस चुने भी जा सकेंगे या नहीं।

साम्प्रदायिक परिषद्

सहयोगी 'लीडर' सर तेजबहादुर सप्रू को जैसे भी हो सहायता देने को कहता है। श्रीयुत बोमन जी के पत्र से उद्धरण देकर वह कह रहा है कि ओडायर और सिडेनहम पार्टी के विरुद्ध इस समय सब दलों को सप्रू महोदय की सहायता करनी चाहिये। ठीक है, श्रीयुत सप्रू जो कुछ यत्न कर रहे हैं, उस का उद्देश्य अच्छा है उन के उद्देश्यों और प्रयत्नों से सारे भारत वासियों की सहानुभूति होगी परन्तु 'लीडर' को यह स्मरण रखना चाहिये कि जिस का उद्देश्य अच्छा हो, आवश्यक नहीं उस के लिये उसी प्रकार यत्न भी किया जावे। यदि "पहाड़ खोद कर चूहा निकालने" के इस प्रयत्न में सबने मिलकर सफलता प्राप्त भी कर ली तो क्या हुआ? इस लिये ऐसे प्रयत्न से सहानुभूति होते हुवे भी अलग हो जाना ही अच्छा है॥

× × × ×

श्रीयुत पं० इन्द्र जी दिल्ली से असेम्बली के लिये खड़े होना मान गये थे। पर दिल्ली में उम्मेदवारों का विरोध देख कर उन्हों ने अपना नाम हटा लिया है। आप ने एक सूचना में कहा है कि झगड़े से बचाने के लिये यही आवश्यक है कि और उम्मेदवार भी इसी बात का अनुकरण करें। जिस भाव से श्री पं. जी ने यह कार्य किया है उस के लिये वे हृद धन्यवाद के पात्र हैं।

× × × ×

बम्बई में स्वराज्य दल निर्वाचन में श्रीयुत जिन्ना और श्री वेरिस्टर का विरोध करेगा. लिबरल पत्र नाराज़ हैं, वे कहते हैं, यह विरोध अच्छा नहीं हुआ. क्यों?

स्थानीय-विचार

तथा समाचार

१६ अक्तूबर.

कल सत्यान्तककालों की समाप्ति का दिन था. प्रायः सब कुलवासी कुल में लौट चुके हैं। महाविद्यालय के बरामदे में महाविद्यालय व विद्यालय की सम्मिलित प्रार्थना हुई। उसके बाद छुट्टी होगई। आशा की जाती है कि इस बार कुलवासी विजय दशमी में पूरी तरह भाग ले सकेंगे.

× × × ×

१६ अक्तूबर.

अभी तक विजय दशमी के लिये विशेष उत्साह दिखाई नहीं दे रहा. कुलमन्त्री महोदय तथा क्रीडा मन्त्री हर प्रकार से लगे हुवे हैं। आज लङ्का विजय का विशेष कार्यक्रम तैयार करने के लिये एक समिति बनाई गई. इसके प्रधान श्री उपा० नन्दलाल जी हैं, और मन्त्री क्रीडा मन्त्री ब्र. नारायण दत्त जी. कल दुपहर तक इस का निर्णय प्रकाशित हो जावेगा.

×

१६ अक्तूबर

आज प्रातः काल कवड्डी के सान्ध्यकाल के पश्चात् लङ्का विजय कमेटी की बैठक हुई। बैठक अभी हो रही है, कुछ निर्णय नहीं हुआ.

पश्चात् का [illegible].

कुलमन्त्री महोदय ने एक कार्यक्रम पेश किया है, कार्यक्रम पसन्द किया जा रहा है। आपके कार्यक्रम का विस्तृत स्वरूप अभी ज्ञात नहीं पर मुख्यतः आप का कार्यक्रम कि यह होगा १८ अक्तूबर को प्रातः काल सात बजे से लंका विजय का प्रारम्भ होगा. गङ्गा के बीच में बन्धा के सामने के रूप में रावण दल अपना झण्डा लेकर रहेगा. राम दल पं. सूर्यदेव जी की पुरानी कुटिया के समीप रहेगा। ८ बजे से रामदल तमेड़ उतार गङ्गा पार कर के रावण दल पर आक्रमण करेगा. और रावण दल के कैदी पकड़ पकड़ कर गङ्गा पार ले जाने का प्रयत्न करेगा. आधी गङ्गा पार कर आने पर वह कैदी कैद समझा जावेगा. १० बजे तक यही कार्य होता रहेगा. अन्त में राम दल भी अपना डेरा पार की ओर देगा।

इसके पश्चात् दोनों दल भोजन के लिये जावेंगे. दर्शक भी भोजन करने चले जावेंगे।

भोजन के पश्चात् कुछ देर तक फिर युद्ध होगा. और उसके बाद १२ बजे के लगभग लङ्का दहन होगा.

पीछे का समाचार

कुलमन्त्री द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम स्वीकृत होगया है। भोजन के सम्बन्ध में पहिले समाचार से थोड़ा परिवर्तन है। १० बजे दोनों दलों के ~~[illegible]~~ कुछ सैनिक अपना अपना भोजन लाने गङ्गा पार लाने का यत्न करेंगे दोनों दल एक दूसरे को भोजन लाने में बाधा भी देंगे। प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। कुलमन्त्री महोदय ने महा० मण्डल में सारा कार्यक्रम सुना दिया है। इस से लङ्का विजय की खेल में एक नया जीवन आ डल जाने की आशा की जाती है।

१८ अक्तूबर.

भरा हुआ है। तुम्हारे पास दल हैं, पर उनमें आत्मा नहीं; वे पत्थर के ढेले से कम नहीं। क्या 'विजया' की यही भेंट है?

× × × ×

हम आज विजया का स्वागत करेंगे। अपनी छोटी छोटी विजयों की भेंटें लेकर हम विजया के सामने रखेंगे। जिसकी मुट्ठी जितनी बड़ी होगी, उसकी भेंट भी उतनी ही अधिक होगी। हम कुलवासी अपनी छोटी सी मुट्ठी में अपनी बाल्यक्रीड़ाओं की छोटी छोटी विजयों को लेकर ही उस के सामने उपस्थित होंगे, उन्हीं से उस का स्वागत करेंगे। आज भारतवासी नागपुर की 'विजय वैजयन्ती' को उठाये हुवे अपने बलिदानों की भेंट को ले कर उपस्थित होंगे। आज अकाली वीर हम सब से धनी हैं, फिर भी यह देखो, वे अब भी 'विजया' के स्वागत के लिये अपने बलिदानों के फल बटोर रहे हैं। हम सब मिल कर आज खुले दिल से 'विजया' का स्वागत करेंगे। हम लोग तैयार नहीं, तो क्या हुआ? थोड़ा ही सही, पर हम अपना उपहार इसी समय बटोर कर 'विजया' के स्वागत के लिये ले चलेंगे। हम गुलाम हैं तो क्या हुआ? हमारी फटी झोली में हमारे पवित्र बलिदान रत्नों के समान चमक रहे हैं। हमारी भेंट तुच्छ है तो क्या हुआ? हमारी भेंट पवित्र है, हमारी भेंट भक्ति पूर्ण है, भक्ति में थोड़े बहुत का विचार ही नहीं। हम निर्धनों की इन भेंटों को विजया बड़े प्रेम से ग्रहण करेगी।

अतएव आओ, पाठक, हम सब चलें। अपनी 'विजय वैजयन्ती' उठाये हुवे हम सब चल कर उत्साह भरे दिल से 'विजया' का आज स्वागत करें। उत्साह और उल्लास के साथ विजयदशमी मनाने का यत्न करें। क्या हम कि इतनी छोटी सी भेंट भी न धर सकेंगे॥

विजय वैजयन्ती.

आज 'विजय वैजयन्ती' को तीन वर्ष समाप्त होते हैं और वह चौथे वर्ष में प्रवेश करती है। दो वर्ष तक गुरुकुल में विजय दशमी न मनाई जा सकी थी. इसी लिये 'विजय वैजयन्ती' भी विजय दशमी पर न निकल कर दीपमाला पर ही प्रकाशित हुई। अपने जन्म दिन के बाद, आज पहिली बार ही 'विजय वैजयन्ती' विजय दशमी का स्वागत करने को उद्यत हुई है। क्या हम आशा रखें, कि हमारे पाठक इस में पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

जिस समय 'विजय वैजयन्ती' का जन्म हुआ था वह समय बड़ा ही विचित्र था. वह समय आपत्तियों और विघ्नों से सर्वथा शून्य न था. चारों ओर काले काले बादल घिरे हुवे थे; उस समय इस के संचालक और कार्यकर्ताओं को भी अनुभूत नहीं माना जाता था, अतएव भूलों की बहुत अधिक सम्भावना थी। उस समय कहा जाता था कि यह पत्रिका महा० दैनिक के विरोध में निकाली जा रही है; हम नहीं जानते कि इस में कहां तक सत्यता है, हम इस पर विचार भी नहीं करना चाहते। आज परिस्थिति बिलकुल भिन्न है। उस समय दोनों ही पत्र एक वैयक्तिक पत्र थे, आज महा० दैनिक महाविद्यालय की प्रतिष्ठित सभा वाग्वर्धिनी का पत्र है और गुरुकुल के एक प्रतिष्ठित पत्र 'राजहंस' का विजय पहार है। आज 'विजय वैजयन्ती' का सम्पादक स्वयं उक्त सभा का मन्त्री है, और 'राजहंस' का सम्पादक भी है। परिस्थितियां आज बदल गई हैं। आज परिस्थितियां बिलकुल भिन्न हैं। अब 'विजय वैजयन्ती' की दृष्टि में महा० दैनिक एक विरोधी पत्र नहीं किन्तु एक प्रतिष्ठित पत्र है। हमें हर्ष है कि तीन वर्ष के बाद आज विजय दशमी तक हम एक नई ही परिस्थिति में उपस्थित हैं, परिस्थितियां बहुत बदल गई हैं।

क्या हम अपने पाठकों से भी आशा न रखें कि वे भी अब पुराने भावों को भुला कर इसी दृष्टि से दोनों पत्रों का स्वागत करेंगे। आज चौथे वर्ष में प्रवेश करते समय हम पाठकों का हृदय से अभिनन्दन करते हैं।

कांग्रेस में मैंने क्या देखा?

(ले० - श्रीमान्.)

दिल्ली की विशेष कांग्रेस इस बार कई दृष्टियों से बहुत महत्व पूर्ण थी। हम लोगों को इस बार इसे पूरी तरह से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुवा। हम लोगों ने अपने स्नातक बनने का पूरा एक महीना शुद्धि सार्वभौम श्री पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी की भेंट किया था। दिल्ली कांग्रेस के दिनों में श्री स्वामी जी के पास कोई विशेष कार्य न होने के कारण हम लोग कांग्रेस पण्डाल के अन्दर स्वयंसेवक का कार्य करने लगे थे। कांग्रेस में स्वयं सेवकों के दो विभाग किये गये थे। एक दल तो पण्डाल के अन्दर नियुक्त थे, इन्हें लाल रङ्ग का पहरा पहिरने को दिया गया था. दूसरे बाह्य कार्यों के लिये नियुक्त थे, इन्हें पीले पट्टे दिये गये थे। दिल्ली में स्थानीय स्वयं-सेवकों की बहुत कमी थी; इस का क्या कारण था इसे मैं आगे बतलाने का यत्न करूंगा. पण्डाल के अन्दर अधिकतर उच्च शिक्षा-प्राप्त स्वयं सेवकों की ही आवश्यकता थी. हमें भी पण्डाल के अन्दर ही जगह दी गयी। हम लोगों को नेताओं की सभा (Leaders' Conference) अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, हिन्दू मुसलिम ऐक्य के प्रश्न पर विचार करने वाली उपसमिति एवं इसी प्रकार की अन्य समितियों व उपसमितियों में नियुक्त किया जाता रहा. इस प्रकार की प्रायः सब सभा समितियों का कार्यक्रम देखने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुवा. इन स्थानों पर हमें नियुक्त करने का एक कारण यह भी था कि इन सब की कार्यवाही गुप्त थी. गुरुकुल के ब्रह्मचारी होने के कारण हम से यह आशा की जा सकती थी कि हम इन कार्यवाहियों को गुप्त ही रखेंगे। कांग्रेस की कार्यवाही के समय हम लोगों को पत्र प्रतिनिधियों के साथ सब से आगे बिठा दिया जाता था. हमें एक प्रकार से सुरक्षित दल (Reserve) में रक्खा गया था. किसी भी समय हमें किसी भी काम पर लगाया जा सकता था. पर ऐसा अवसर आया कभी नहीं। हां, अन्तरिक्ष समयों में हमें पण्डाल के द्वारों की रक्षा का काम सौंपा जाता रहा. हमें २४ घंटे पण्डाल के घेरे में ही रहना होता था, और हमें किसी भी समय बुलाया जा सकता था. यहां तक कि भोजन भी हमें कांग्रेस की ओर से ही दिया जाता था. इन सब अवस्थाओं में कांग्रेस को बाह्य तथा आन्तरिक दोनों दृष्टियों से देखने का हमारे पास बहुत अच्छा अवसर था जिसे हम न तो अपने हाथ से खोना ही चाहते थे और न हम ने खोया ही। कांग्रेस के कार्यों में विशेष दिलचस्पी लेने वाले भाइयों के लिये मैं यहां कांग्रेस की मुख्य मुख्य बातों का वर्णन करने का यहां प्रयत्न करूंगा. कांग्रेस के प्रस्ताव तथा अन्य कार्यवाही पाठकों ने समाचार पत्रों में पढ़ ही ली हैं, अतएव उन्हें यहां देने की कुछ आवश्यकता नहीं। मैं केवल उन्हीं बातों का ज़िक्र करूंगा जो समाचार पत्रों में अब तक नहीं आसकीं।

<u>नेताओं की सभा</u> - कांग्रेस के सामने इस बार दो ही प्रश्न मुख्य उपस्थित थे। पहिला कौंसिलों में प्रवेश का प्रश्न - इस सम्बन्ध में कांग्रेस के भाग होजाने का भी डर था। दूसरा प्रश्न हिन्दू मुसलिम ऐक्य का था. नेताओं की सभा वस्तुतः दोनों प्रश्नों को ठीक तौर से हल करने में पूर्णतः असमर्थ रही। क्योंकि कौंसिल प्रवेश का प्रश्न तो बहां सर्वथा ही सुलझने से रह गया। इस सम्बन्ध में जो समझौता हुआ है

यह इस सभा का फल नहीं, परन्तु आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में मौ. मुहम्मद अली के प्रयत्नों का फल है। हिन्दु मुसलिम एकता के प्रश्न पर सब नेता दिलचस्पी नहीं ले रहे थे। श्रीयुत पंडित मोतीलाल नहरू तथा श्रीयुत दास जैसे महोदयों को इस विषय पर विचार करने की फुर्सत ही न थी। वे इस प्रश्न को एक फिजूल प्रश्न समझते थे। इस उपेक्षा का कारण शायद उन की यह राय हो कि एक राजनीतिज्ञ को धार्मिक मामलों में हाथ न डालना चाहिये। धार्मिक मामलों को सुलझाने का काम धार्मिक नेता ही करें। इसी आधार पर ही पं. मोतीलाल जी ने पहिले ही दिन नेताओं की सभा में यह प्रस्ताव रखा कि सात हिन्दुओं व सात मुसलमानों की एक उपसमिति बना दी जावे और वही इस मामले पर विचार करे। हकीम अजमल खां साहिब इस के प्रधान हों। यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकृत हुआ। अब नेताओं की सभा के पास केवल कौंसिल प्रवेश का ही प्रश्न रह गया. जिसे हल करने के लिये उस की ४-५ बैठकें और हुईं। परन्तु फ़ैसला कुछ भी न हो सका। सनातन असहयोगी तथा परिवर्तन वादी दोनों एक दूसरे पर दोष देते थे। असहयोगी परिवर्तन-वादियों पर दोष देते थे कि उन्हों ने गया कांग्रेस के मौके पर स्वराज्य दल का संगठन कर कांग्रेस में फूट पैदा की है। और इस प्रकार कांग्रेस को हानि पहुंचायी है। परिवर्तन वादी कहते कि असहयोगियों ने बम्बई के समझौते को अजबम भी भङ्ग कर के कांग्रेस की एकता और सम्मान को धक्का पहुंचाया है। इसी प्रकार एक दूसरे की नियत पर भी दोष लगाये जाते। वर्तमान प्रतीक्षा तथा कुछ वक्ताओं को छोड़ कर शेष सब ने एक दूसरे पर लगाया. परिवर्तनवादियों की ओर से जवाब देने वाले श्रीयुत दास तथा पं. नहरू जी जैसे वकील थे। पर आप की वकालत ने यद्यपि विरोधियों के मुंह तो कई बार बन्द किये, पर उस से सीधे सादे सरल हृदयों को सन्तोष न हो सका। अन्ततः मामला तय न हो सका। असली प्रश्न पर कि "जो हो चुका सो हो चुका, आगे के लिये क्या किया जावे" कोई विचार हीन करता था. वह बहसों का तो पड़ा रह गया. सारा समय एक दूसरे को कोसने कोसते निकल गया. हमारे पूजनीय नेताओं का देश के इस कठिन समय में भी असली प्रश्न से इतने दूर चले जाना वास्तव में अनेक जनक प्रतीत होता था. इस सभा में नेताओं की असली हालत का पर्याप्त परिचय मिला। क्यूंकि सभा की कार्यवाई गुप्त थी और इस में सभी कुछ कह दिया जाता था। मुझे आश्चर्य है कि हमारे नेता क्या अपने देश के प्रति इतना कम उत्तरदायित्व समझते हैं ? वे निरन्तर बहुमत की अवहेलना कर डालने की धमकी दे सकते हैं। इस बात को समझते हुवे भी कि समझौता सदैव ऐसा होगा जिसके अन्दर कुछ न कुछ प्रत्येक दल के पक्ष में और विरोध में रहेगा ही - फिर भी अपने दल की ही बात को मनवाने का यत्न करना - उस के लिये हठ करना - नेताओं को शोभा नहीं देता था. छोटी छोटी समितियां व उपसमितियां प्रायः इसी लिये बनाई जाती हैं क्यूंकि वे सरलता पूर्वक शीघ्र ही किसी निर्णय पर पहुंच सकती हैं। साधारण लोगों की बड़ी संख्या की अपेक्षा उत्तरदायित्व पूर्ण कुछ व्यक्ति यदि थोड़ी संख्या में बैठ कर निर्णय पर पहुंचने का प्रयत्न करें, तो प्रायः सफलता ही होती है। परन्तु इस उत्तरदायित्व को न समझते हुवे इस प्रकार के प्रस्ताव पेश करना कि मामले का निर्णय साधारण सभा पर छोड़ दिया जावे क्या अर्थ रखता है ? मुझे यह दुख के साथ देखना पड़ा कि हमारे नेता जिन के ऊपर देश का बड़ा भारी उत्तरदायित्व का बोझ है अपने आप किसी फैसले पर नहीं पहुंच सके। नेताओं की सभा भङ्ग हो गई अब सब की दृष्टि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी पर थी।

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी -:

हिन्दू मुसलमानों के प्रश्न पर विचार करने के लिये जो उपसमिति नियुक्त हुई थी उस के कार्य पर हम पीछे विचार करेंगे। पहिले आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के कार्य पर कुछ लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है।

कांग्रेस में उपस्थित किये जाने वाले प्रस्तावों पर विचार करते समय यही विषय समिति या subject committee कहलाती है। पहिले विषय समिति की बैठकें अत्यन्त गुप्त हुआ करती थीं, पर अब इसमें दर्शक जा सकते हैं, पर इस के लिये अनुमति देना समिति की इच्छा पर ही है। हमें यहां पर कुछ अधिवेशनों में तो बिपुल किया जाता रहा. तथा शेष अधिवेशनों में हम स्वयं सेवक की हैसियत से जाते रहे। पहिले ही दिन विषय समिति के सामने दो प्रश्न थे। पहिला प्रश्न था बङ्गाल के प्रतिनिधियों का निर्णय करना। बङ्गाल की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का विवाद पाठक समाचार पत्रों में पढ़ चुके हैं। पाठक जानते ही हैं कि वहां पर परिवर्तन वादियों तथा परिवर्तन विरोधियों की अलग अलग दो कांग्रेस कमेटियां बन चुकी थीं। दोनों ने ही अपने प्रतिनिधि बड़ी भारी संख्या में निर्वाचित कर के भेजे थे। दोनों कांग्रेस कमेटियां अपने प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी होने तथा कानूनी तौर से हकदार होने का दावा करती थीं। स कांग्रेस की स्वागत समिति के सामने प्रश्न था कि वह किस कांग्रेस कमेटी की सूची को स्वीकार करे। प्रतिनिधियों की सूची भेजने के जो नियम होते हैं, उन के अनुसार परिवर्तन वादी दल के प्रतिनिधियों की सूची अधिक नियमानुकूल थी। परन्तु तथा इस किसी एक दल को स्वीकृत कर एक ही दल के प्रतिनिधियों को जगह दे देना स्वागत समिति के लिये असम्भव था. इसमें बड़े भारी झगड़े की भी आशंका थी. अतएव स्वागतसमिति ने प्रधान के पास मामला भेज दिया. पहिले इस के लिये श्री मालवीय जी निर्णेता बनाये गये, परन्तु उन्हों ने स्वराज्य दल के पक्ष में ही फैसला दिया. आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में पहिले इसी विषय पर झगड़ा हुआ. कुछ का कहना था कि श्री मालवीय जी कौंसिलों के पक्ष में और असहयोग के विरुद्ध हैं, अतएव उन का फैसला मान्य नहीं हो सकता. वह निष्पक्ष फैसला नहीं दे सकते। कांग्रेस कमेटी को स्वयं इस का निर्णय करना चाहिये। बीच ही में पीछे से एक स्वराज्यदल के महाशय बोल उठे—

"असहयोगी तो तब प्रसन्न होंगे जब गांधी जी स्वयं फैसला करें; अतएव मेरा प्रस्ताव है कि यह मामला गांधी जी के पास जेल में भेज दिया जावे।"

इस पर स्वराज्य दल के कुछ लोग हंस पड़े। इस से ही पता चलता है कि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में कुछ ऐसे लोग भी उपस्थित थे जो आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी या विषय समिति की गम्भीरता के महत्व को बहुत कम समझते थे। उन्होंने बात महात्मा गांधी जी के नाम पर हास्य ही एक मज़ाक था। अतएव यह बात महात्मा गांधी के अनन्य भक्त मौलाना मुहम्मद अली को बहुत बुरी लगी। उन्हों ने इस मज़ाक में हिस्सा लेने वालों को बहुत फटकारा। मौलाना मुहम्मद अली की इस फटकार का सभा पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस के बाद इस विषय पर बहुत विवाद नहीं हुआ। तीन सज्जनों की एक उप-समिति बना कर उसी पर सारा निर्णय छोड़ दिया गया। इस उपसमिति ने भी स्वराज्यदल के पक्ष में ही फैसला दिया। इस के कारण बङ्गाल के स्वराज्य वादी बड़ी भारी मात्रा में कांग्रेस के अन्दर उपस्थित हुवे। इस के कारण स्वराज्य दल को काफ़ी सहारा मिल गया था। वस्तुत: यह निर्णय उपयुक्त निर्णय नहीं कहा जा सकता। बङ्गाल के असहयोगी दल का एक भी प्रतिनिधि कांग्रेस में उपस्थित न हो सका। यह न तो न्याय ही था और न समझौता ही।

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सामने दूसरा प्रश्न कौंसिल प्रवेश का था। कौंसिलों के सम्बन्ध में समझौता हुवा इस का वृत्तान्त हम कल प्रकाशित करेंगे।

(शेष कल के अङ्क में)

क्रीड़ा क्षेत्र

१८ अक्तूबर प्रथम दिन.

आज विजय दशमी का प्रथम दिन था. आज मध्यान्ह दो बजे कार्यवाही प्रारम्भ हुई. दो बजे टनननन--- घण्टी बजी, पर क्रीड़ा क्षेत्र खाली था. बड़ी देर की प्रतीक्षा के बाद फिर दुबारा घण्टी बजी. धीरे धीरे दर्शक जमा होने लगे. सभापति जी की प्रतीक्षा थी. थोड़ी देर बाद उन्हों ने कहला भेजा कि मैं न आ सकूंगा कार्यवाही प्रारम्भ कर दी जावे। कुलदेवी की वन्दना प्रारम्भ होगई, पर वन्दना के लिये कोई मन्दिर न था. आज कुलदेवी इतनी निर्धन होगई है कि उसके पुजारियों के पास वन्दना के लिये कोई मन्दिर ही नहीं। खुले मैदान में वन्दना प्रारम्भ हुई। मन्दिर के अभाव के कारण पुजारी इतने कम एकत्र हुये थे कि जिस मातृवन्दना की आवाज़ किसी समय 'दिग्दिगन्त में माता का जय जय कार" पुकारती, आसमान को चीरती जाती थी, आज वह बड़ी ही मन्द होगई थी। पुजारियों के चेहरे पर उत्साह न था. 'विजया' के स्वागत के लिये उमङ्ग न थी। कोई उत्सुकता न थी।

जैसे कैसे वन्दना समाप्त हुई. अब तक भी कुलवासी बहुत कम एकत्र हुवे थे। प्रारम्भ ही में यह अनुपस्थिति खटकती थी।

सब से प्रथम विद्यालय की कबड्डी हुई, कोई विशेष दर्शनीय बात इस में न थी। छोटे ब्रह्मचारियों की कबड्डी मनोरञ्जक थी। २य और तृतीय श्रेणी का परस्पर सामुख्य था. छोटे ब्रह्मचारियों का कबड्डी कबड्डी बोलते हुवे एक दूसरे के पीछे भागना और बीच बीच में गिर पड़ना दर्शकों को बड़ा आनन्ददायक प्रतीत होता था. वे यह को सोचते लगे कि बिचारे गिरते हुवे बालक की क्या दशा हुई होगी। इस सामुख्य में द्वितीय श्रेणी की विजय हुई।

इस के पश्चात् दो सामुख्य और हुवे। विद्यालय का हाकी परस्पर और महाविद्यालय के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों का पादकन्दुक का सामुख्य। दोनों ही में दर्शक बहुत कम मात्रा में उपस्थित थे।

रात की लड्डू विजय

रात को छोटे ब्रह्मचारियों का लड्डू विजय था। तीन स्थानों पर झण्डियां लगाई गई थीं। एक के मुखिया थे वीरेन्द्र ३य श्रेणी २य दल के मुखिया ब्र. मेघव्रत ४र्थ श्रेणी। खेल मनोरञ्जक हुई। आधा खेल तक दोनों दल बराबर रहे। दोनों दलों के लिये मिठाई भी छिपा दी गई थी। दूसरी बार का मिला कर झंडे की दृष्टि से ब्र. मेघव्रत का दल विजयी रहा।

१९ अक्तूबर द्वितीय दिन

आज प्रातः काल विद्यालय महाविद्यालय की कबड्डी का सामुख्य हुवा. महाविद्यालय दल दो बिन्दुओं से पराजित रहा. कबड्डी में बहुत उत्साह नहीं दिखाया गया. आज भी दर्शक बहुत कम उपस्थित थे। इस के बाद विद्यालय दल तथा अध्यापक दल का क्रिकेट का सामुख्य हुवा। सामुख्य आधा ही हुवा. परिणाम अभी कुछ नहीं कहा जा सकता. क्रीड़ा क्षेत्र में पहिले का सा उत्साह नहीं दिखाई देता। खेल प्रारम्भ होने में भी बड़ी देर होजाती है। सारे कुलवासियों का उपस्थित न होना बहुत खटकता है।

निवेदन

'विजय वैजयन्ती' मध्यान्ह की प्रतिविहित क्रीड़ा प्रेस में प्रकाशित हुआ करेगी। पाठक इसे क्रीड़ा प्रेस से अथवा सम्पादक के पास पहुंचा जाया करें।

निवेदक

सम्पादक

राम दे

ओ३म्

विजय-वैजयन्ती

(अङ्क २)

सम्पादक – अङ्गिरा (श्रीमान्)

कृपया क्रीडा क्षेत्र से आते हुवे सम्पादक को लौटाते जाइये।

इसे भूलिये नहीं।

सम्पादक.

विशालता

२.

नदी.

इस पहाड़ी नदी को देखो, चञ्चल तरङ्गें शिलाओं को टकराती हुई पर्वतों के उन्नत मस्तकों को मानों पददलित करती हुई चली जा रही है। इस का जल स्वच्छ है, निर्मलता मानों फूट फूट कर बाहिर निकल रही है। धीरे धीरे इस का पाट चौड़ा होता जाता है। जल उतना स्वच्छ नहीं रहता, धार मन्द हो जाती है, मानों विस्तृत अनुभव के कारण उस का हृदय गम्भीर हो गया है। वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ती है, उस का हृदय अधिक विशाल और गम्भीर हो जाता है। विशाल हृदय, अनुभवी होते हैं, उन में स्वाभाविक गम्भीरता और विषण्णता आ जाती है। साधारण हृदय चञ्चल तरङ्गों के समान चमकते अधिक हैं, उन पर विशाल हृदय शान्त गम्भीर नदी के समान स्थिर प्रकाश धारण करते हैं। वे इतने स्वच्छ होते हैं कि उन में अच्छे बुरे का प्रतिबिम्ब बड़ी जल्दी दिखाई दे जाता है। विशाल अनुभव हृदय को भी विशाल बना देता है।

चन्द्रमा की सर्वप्रियता

बालकों को चन्द्रमा अच्छा लगता है, क्योंकि वह बहुत छोटा होता है, उस का छोटा सा प्रतिबिम्ब देख कर बच्चे खिलौना समझ कर उस पर हाथ बढ़ा देते हैं। युवकों को चन्द्रमा अच्छा लगता है क्योंकि उस का भी यौवन बड़ी शीघ्रता से बढ़ता है। पूर्णिमा के पूर्णवयस्क चन्द्रमा को देख कर युवक अपनी बढ़ती की याद करने लगते हैं। खटिया पर पड़े हुवे बूढ़े अमावस्या के घटते हुवे चांद को देख कर अपनी नींद रहित रातें काटा करते हैं अतएव उन का भी यह बुढ़ापे का साथी है। सभी तो लोग कहा करते हैं कि चन्द्रमा किसे अच्छा नहीं लगता? उस की सर्वप्रियता का यही कारण है। सर्वप्रिय लोग जैसे आदमी को वैसे ही जान पड़ते हैं इसी लिये तो गोस्वामी जी ने रामचन्द्र जी की सर्वप्रियता का वर्णन करते हुवे कहा है

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरति देखी तिन तैसी.

आज क्या है कल क्या होगा?

(एक गल्प)

(२)

जब मैं किसी प्रकार भी वहां से न हिला तब उस शक्लने पूर्ववत मेरी आंखों पर हाथ फेरा, और मुझे फिर दिखना बन्द होगया। अब की बार नजारा देख पाने के उसने एक सीटी बजाई, झट एक नई तरह की गाड़ी आगई। उसमें बिठाकर क्षणभरमें ही मैं एक महल में ले जाया गया। वहां जाते ही उस आदमी ने कहा - कहो, "चश्म दीदम" ज्यों ही मैंने यह वाक्य पढ़ा झट मेरी आंखें देखने के काबिल होगईं। देखते ही मैं तो भौंचक्का सा रह गया! मारे चमचमाहट के मेरी आंखें चुंधिया गईं। मैंने तो क्या मेरे बाप दादों ने भी ऐसी चीजें कभी न देखी थीं मुझे उन के नाम भी मालूम नहीं। तो भी उन का वर्णन कर देना चाहता हूं। पर अभी नहीं, आगे ही सब बातें खुल जावेंगी।

उन्हों ने मुझ से फिर पूछा कि - तुम कौन हो? कहां से आये हो?,
मेरा डर कुछ कम होगया था, मैंने धीमे से उत्तर दिया - "मान्य महोदय! मैं एक मर्त्य-लोक-निवासी जीव हूं, भाग्यवशात् टहलते टहलते यहां निकल आया।

वे - तुम्हारा नाम क्या है?

मुझे डर लगा न जाने क्या करेंगे मैंने गड़बड़ उत्तर दे दिया - "मान्य महोदय! मेरा नाम 'रम्पलिम्पलिम्प' है।

तब उन्हों ने कहा - घबड़ाओ मत, डरने की अब जरूरत नहीं, हम सब तुम्हें कुछ न कहेंगे, तुम्हारे साथ अपने जैसा ही बर्ताव करेंगे।

यह सुन कर मेरे जी में जी आया. कुछ आश्वासन हुआ। थोड़ी देर बाद उन सब ने मिलकर एक गीत गाया, मुझे कुछ भी समझ न पड़ा। गीत समाप्ति पर मुझे भोजन दिया गया. भोजन के नाम से ही मेरे मुख से लार टपक पड़ती है, फिर वह तो बड़ा ही स्वादिष्ट भोजन था. स्वाद का वर्णन नहीं किया जा सकता. एक शब्दमें वह रस पूर्ण भोजन था. खाने बर्तन सोने के थे. थाल न जाने किस का था. जिसमें रखी हुई कटोरियां असंख्य मालूम पड़ती थीं। अस्तु, भोजन के बाद जल के स्थान पर महकता हुआ खुशबूदार पदार्थ दिया गया, मानो अमृत था. मैंने तो समझ लिया कि अब मैं अमर होगया हूं। इस के बाद एक भव्य मूर्ति ने कहा - "मालूम पड़ता है तुम कुछ पूछना चाहते हो? अच्छा पूछो हम सब कुछ बतला देंगे।

मैंने कहा - भगवन्! पूछने के लिये क्षमा करते हुवे बताने की कृपा करें कि आप कौन हैं? ऐसी अद्भुत वस्तुएं कहां से आई हैं, वे कौन गाने वाले थे। मैं ने सब प्रश्न एक साथ ही कर दिये।

वह - "कहो 'खुल सिम सिम'"

ऐसा कहते ही हर तरफ से सारा महल खुलता नजर आया। क्षण भर में कुछ का कुछ होगया। मेरे मन की उत्सुकता और बढ़ गई। यह क्या बात है? , क्या यही

मकान भी बदल जाया करते हैं? उसने अपने आप कहा — "खुल सिमसिम" और वह महल उसी फ़ौज से भर गया. यह दृश्य अपूर्व था। मैंने कहा — "अब बताइये आप —

वह — (मुस्कराकर) हां, हम लोग शाप के कारण देवलोक से मुक्त होकर यहां उसे पूरा करने के लिये आये हुये हैं, हमको चार साल हुये हैं अभी चार साल और बाकी हैं, देखें शायद बीच ही में हमारा शाप खत्म हो जावे। तुम पूछते थे वह फ़ौज कौन थी? ध्यान पूर्वक सुनो —

देवताओं में हमारी एक विशेष शक्ति है वह उड़ है। दूसरे भी देवता ही हैं पर वह कुछ कम दर्जे के हैं। हम दोनों में जब झगड़ा हुआ तभी हम लोगों को शाप दिया गया कि — जाओ, इतना समय मर्त्यलोक में बिताओ। वहां यहां भी लड़ना चाहते हैं, लेकिन हम लोग [illegible] नीति सिद्धि से लड़ाई न कर के अपना काम निकाल लेते हैं। वे हमारा बाल भी बांका नहीं कर सकते —, पाठक, उकताइये नहीं —

पाठक, इतना सब कुछ सुना गया पर, मैंने अभी अपना भी परिचय नहीं दिया. आप ही बताइये मैं कौन हूं। नहीं जानते? अच्छा यह भी सुनिये,

मेरा जन्म विक्रम संवत् १९९८ की [illegible] माह (श्रावण) में हुवा। ज्यों ज्यों समय बीतता गया मैंने जीवन में पग धरना शुरू किया. कुछ साल बाद मित्रों की उत्पत्ति हुई। मजलिस लगने लगी। मजलिस में शामिल होने वालों के नाम इस प्रकार हैं — श्यामरूप जी, [illegible], ननूसाही, — दिन अमन चैन से जाने लगे। किसी बात की चिन्ता न थी। एक दिन शाम को ~~ननूसाही [illegible]~~ मैं, देखा श्यामरूप जी का चेहरा कुछ मुर्झाया हुआ है। मुझे शक हुआ कि शायद उनसे कोई खता हो गया है, इस शक के मेरे पास कोई कारण न थे पर किसी [illegible] — [illegible] दिस्तोल से उनके सिर पर निशाना लगा दिया।

[illegible] को मैंने आंखों से देखा कि वह दूसरों की मजलिस में जाता है वहीं दिलचस्पी लेता है, मौका पाकर उसे ज़हर दे दिया। ननूसाही चञ्चल स्वभाव, सौम्य मूर्ति और होंठों पर मुस्कराहट लिये इधर उधर कूद फांद करने वाला था. ज़रा ज़रा सी बातों पर उस पर गुस्सा आना स्वाभाविक था. वह चुप बोलने वाला था. सब उसे प्यार करते थे वह होठों के हाथ का खिलौना था. पर मैं उस पर नाराज़ था. मैं उससे उदासीन हो गया और मेरे मन में उस भोली सूरत की यह बात घर कर गई कि देखो यह सब के साथ वही होता है जो उसके साथ हुआ करता है —

अब इतना ही कह कर मैं आगे की कथा कहूंगा। 'खुल सिमसिम' और 'बन्द सिमसिम' की केमीस्ट्री और आश्चर्यजनक रहस्यपूर्ण घटना भी उसी के साथ ही कहूंगा।

काश्मीर के पुष्पों का गुच्छा

(प्रथम पुष्प)

काश्मीर के दर्शनीय दृश्यों में सबसे विचित्र क्षीरभवानी का नज़ारा है। मैं इसे हिन्दुसमाज का प्रतिबिम्ब समझता हूं। क्षीरभवानी एक तालाब का नाम है। चारों तरफ सुन्दर हरी भरी वनस्पति लहरा रही है। लतायें वृक्षों पर लिपटी हुई आलिङ्गन करती हैं। चारों तरफ छोटी २ स्वच्छ पानी की नालियां अपनी अपूर्व शोभा से बह रही हैं। मार्ग के चारों तरफ चिनार के पेड़ों की पंक्तियां खड़ी हैं इस सुन्दर सुहावने नज़ारों के बीच क्षीरभवानी का गन्दा तालाब अपनी पूति गन्ध से सारे नज़ारे को खराब बना रहा है। इस तालाब की विशेषता यह है कि इसमें भगवती ... देवी के प्रताप से कई बार पानी का रंग गिरगट की तरह बदलता है। मुझे बहुत ध्यान से देखने पर भी पानी का रंग बदलता हुआ नहीं दिखाई दिया। हां सिन्दूर के डालने से लाल, नीले रंग के डालने से नीला ज़रूर होजाता है। सालों से गन्दा पानी न निकलने के कारण तथा दूध, खीर, फूल आदि: चढ़ने से इतना बदबूदार होगया है कि नाक पर कपड़ा रखे बिना खड़ा होना मुश्किल है। हरसाल महाराजा साहब पूजा पाठ के लिये आते हैं। ब्राह्मण देवता घण्टा घड़ियालों से आकाश को गुंजा देते हैं। जोशी पत्रा देख कर Mata की मायल की फैसला होता है।

हमारा हिन्दू समाज भी इसी गन्दे तालाब के समान है। एक तरफ हिमालय की उत्तुङ्ग शिखायें, दूसरी तरफ हिन्दमहासागर, बीच में हम हिन्दू जाति का निवास है। पर हमने अपनी दुर्गन्धि से सारे नज़ारे को खराब बना दिया है। भगवान ने हमें सब कुछ दिया है। खानें हैं, उपजाऊ भूमि है। पर हमारी जाति सालों से एक बन्द घेरे में जकड़ी हुई है। उसमें नवीन पानी का संचार नहीं होता और न पुराना पानी निकलता है। समुद्रपार जाना हमारे लिये मना है। इससे धर्मभ्रष्ट होजाता है। बाहर की हवा लग जाने से हमारी बाबा आदम के वक्त की पवित्रता छूईमुई के समान

मुल्क जाती है। कहावत मशहूर है 'अटक के पार गया सो गया'। आज से १० करोड़ वर्ष पूर्व श्रीकाक भुशुण्ड जी ने जो अपनी सूंड से जो कुछ लिख डाला उसमें अब अक्ल का दखल नहीं हो सकता। वह निर्भ्रान्ति है पत्थर की लकीर है। यदि भुशुण्ड जी भी शुण्डा लेखनी से पितरों को रोटी पहुंचाने के लिये बेतार की तारबर्की का इन्तज़ाम कर दिया तो उसमें ननु नच कैसी। महाशय रामनाथ जी चौबे बिल्कुल निरक्षर महाचार्य हैं आपने जन्म भर रोटी सेंकने के अलावा कोई काम नहीं किया। आपकी दृढ़ धारणा यह है कि अकल और भैंस में भैंस ही श्रेष्ठ है। पर आप ब्राह्मण हैं, हिन्दुजाति के सिरमौर हैं। आपके बदौलत हिन्दु जाति अभिमान करती है। आपकी पूजा होती है। हम लोग हाथ उठा २ कर कहते हैं कि धर्म में बुद्धि का प्रवेश नहीं है आप न्याय के अन्दर अनन्त दूरी तक तर्क करते चले जांय पर इससे किसी बात का फैसला नहीं हो सकता। जो आज से अर्ब वर्ष पूर्व परमात्मा ने सांस के द्वारा चार वेद उगल दिये थे वे सत्य हैं, वही अन्तिम प्रमाण है। उनमें तर्क नहीं हो सकता। मतलब यह है कि हम हिन्दू जाति अपने भीर भवानी के गन्दे तालाब से बाहर नहीं निकलना चाहते। करोड़ों, अर्बों वर्षों से उसी में पड़े हुए सारे विश्व को दुर्गन्धित कर रहे हैं।

भीर भवानी की विशेषता यह है कि इसमें भिन्न रंगों का पानी है कहीं से लाल है तो दूसरी जगह नीला, तीसरी जगह पीला। हमारी जाति की भी यही विशेषता है। इसमें कबीर साहब ने रंग फैंका तो कुछ हिस्सा कबीर पन्थी हो गया है, दूसरी जगह दादू जी ने रंग डाला तो दादू पन्थी हो गया है। मतलब यह है कि शैव, वैष्णव, शाक्त, सौर: रंगों से हमारी जाति बहुरंगीली हो गई है। कोई लड़का भी माला पहनता है, तो दूसरा माथे पर बिन्दी लगाता है तीसरा नया ही प्रकार का तिलक लगाता है। हम इसे देवी का प्रताप समझते हैं। अपने इस बहुरूपिया पन पर मारे खुशी के फूले नहीं समाते। यदि हम कभी इस मोरीचन्द तालाब से बाहर की स्वच्छ हवा ले सकें तो हमें मालूम पड़ेगा कि इन रंगों ने हमारी जातिरूपी तालाब को कितना दुर्गन्धित बना डाला है। इन मत भेदों और साम्प्रदायिक झगड़ों ने हमारी जाति को जर्जरित कर दिया है।

ले. आनन्दस्वरूप

१८ अक्तूबर १९२३. वृहस्पतिवार ३० आश्विन १९८०

विजयाका स्वागत कैसे करें.

हम हिन्दू लोग प्रतिवर्ष विजय दशमीका उत्सव मनाया करते हैं। हम इसे क्यों मनाते हैं? हर साल आज के दिन हिन्दू गृहस्थों के घरों में आनन्द मङ्गल मनाये जाते हैं, खुशियों के गीत गाये जाते हैं। हिन्दू आज के नायक को 'भगवान' मानते हैं। भगवान की पुण्य स्मृति को पुनरुज्जीवित रखने वाले विजय भगवती है। आज शहरों में रामलीला की धूम है; आज भी उस पुराने स्वर्गीय दृश्य को आंखों के सामने लाने के लिये हिन्दू लोग उस पुरानी विजय की नकल करते हैं।

हिन्दू जाति के अन्दर अनुष्ठान का भाव इतना लुप्त गया है कि वे असल को सर्वथा भूल चुकी है। हिन्दू नकल कर सकते हैं, उसी पुरानी [illegible] की पुतली को ला सकते हैं पर असल को हम भूले हुवे हैं; इसी लिये हममें से बहुत यह नहीं बता सकते कि हम विजय दशमी क्यूं मनाते हैं?

हिन्दू जाति का यह प्रभाव हम गुरुकुलवासियों पर भी कम नहीं। हमारे खेल, हमारी लघु विजय और हमारी सभा बहुत कुछ केवलमात्र इस पुरानी प्रथा' का स्वांग धारण कर रही हैं। हम इन दिनों को अभीष्ट और आगति का दिन नहीं समझ सके।

'विजया' को हम विजयी बनने की तैयारी के लिये मनाते हैं। जय और पराजय को सहन करने की शक्ति पैदा करने के लिये मनाते हैं, (उत्साह से बचने के लिये ही) अपने अन्दर उत्साह भरने के लिये उसे मनाते हैं। यदि हम इसे समझलें तो हमारी खेलों, हमारा रामलीलाओं और सभाओं ~~[illegible]~~ में जीवन और उत्साह आजावेगा। हम नव लहरों पर भारत को मनाने वालेंगे [illegible] फिर हम विजयदशमी के इस कार्यक्रम में भले प्रकार लेवेंगे। दशमी भी भीन्नी [illegible]।

भारतीयों की विजया.

कई शताब्दि पूर्व जिस दिन आर्यजाति के भूषण महाराज रामचन्द्र अपने नीति कौशल और वीरतासे अपने महान् शत्रु रावण का पराजय किया था कलवही दिन पुरानी स्मृति के साथ आपहुंचा है। तब के आर्य आज हिन्दू बन कर भी अपने तरीकों से उस महाराज की आराधना करने में कोई कसर नहीं करते। वैश्य महाराज की प्रजा होकर हिन्दू-जाति जो कुछ भी कर सकती है वह करती है और करती रहेगी। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या केवल इतना पर्याप्त है? जिस मर्यादा का पालन मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र ने किया था क्या वह इतने मात्र से सुरक्षित रह सकती है? हो सकता है कि साल दो साल पहिले हिन्दू जाति इस प्रश्न का उत्तर 'हां' में दे सकती हो, पर आज किसी हिन्दू का कोई विधर्मी या विदेशीय कामी शुद्ध अन्तरात्मा 'हां' में उत्तर नहीं दे सकता। विदेशी और विधर्मी माता के नीचे हिन्दू शान्ति से नहीं रह सकते। सौतेली मां पुत्रों की परवाह नहीं कर सकती; और तिस पर यह तो कलियुग है। मुल्तान, सहारनपुर, पानीपत तथा अन्य स्थानों पर मुसलमानों ने ~~के~~ धर्म के अमुक प्रभाव में जिस प्रकार हिन्दू जाति की मान मर्यादा, धन-सम्पदा तथा कुल मर्यादा का विध्वंस किया है, और हिन्दुओंने उसे देखकर यह बात निर्विवाद है कि हिन्दू सतयुग के आर्य नहीं रहे हैं उन में 'वानर सेना' का सा जोश या वीर्य नहीं है। साथ ही यह भी निर्विवाद है कि पुराने या भविष्य की बातों की आलोचना या चिन्तन करने मात्र से कार्य नहीं चल सकता। प्रश्न केवल यह है कि करना क्या होगा?

'हिन्दू संगठन' इस प्रश्न का सीधा और उचित उत्तर है, इसे कोई इन्कार नहीं कर सकता। पर फिर भी इसके सम्बन्ध में हमारा थोड़ा सा वक्तव्य है। हमारी सम्मति में हिन्दू संगठन के नेताओं व 'जातीय महासभा' के उद्देश्यों में कोई अन्तर नहीं है। दोनों का ही उद्देश्य जाति को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाना है। क्योंकि इसके बिना जाति का कल्याण नहीं है। मतभेद सिर्फ कार्य करने की रीति में है। हिन्दू नेता मुसलमान जाति का विचार छोड़कर हिन्दुओं को ही प्रबल बनाना चाहते हैं; वे जानते हैं कि मुसलमान जाति देर से संगठित है और वह मुकाबला करने के लिए तय्यार है। हमारी सम्मति यदि केवल इतने ही भाव होते तो भारत की दो बड़ी जातियों में जो वैमनस्य पैदा हो गया है वह पैदा न होता। पर हम यह भी जानते हैं कि बात कुछ और भी है। भारत में आज अनेक 'जय चन्द' हैं, यह सारा काम उन्हीं का है। विदेशी सरकार से कुछ वैयक्तिक लाभ की सम्भावना से उन लोगों ने यह वैमनस्य पैदा करने का बीड़ा उठाया है। एक व्यक्ति भी यदि अपने दिल में कुछ भाव रखता है तो सारी जाति को उसका फल भोगना पड़ता है विशेषतया तब, जब कि वह उसके प्रकट करने में कहीं सफल हो जाय। इसी द्वेषभाव से प्रेरित मनुष्य जब हिन्दू संगठन का पक्ष करते हैं तो बुद्धिमान मुसलमान भी इस संगठन के विरोध में आवाज उठाते हैं। अतः केवल इस एक बात को ध्यान में रख कर हमारा केवल यही वक्तव्य है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर ऐसा यत्न करें जिससे यह भाव समूल नष्ट हो जावे और भारतीय प्रसिद्ध जयचन्दों को अपने काम का अवसर न मिले।

हिन्दू नेताओं से हम यह प्रार्थना केवल इस लिए करते हैं कि हिन्दुओं की वीर्य वृद्धि में सहारनपुर इत्यादि की घटनायें साधक नहीं हैं। यह ठीक है कि इन घटनाओं को देखकर हिन्दुओं को अपनी असामर्थ्य का पता लग गया है- पर हमारी सम्मति में इतना ही पर्याप्त है। हिन्दुओं का एक मात्र साधन यह भी यदि नष्ट हो गया तो डर है, कि निर्धन, निर्बल तथा निस्साधन हिन्दू जाति विदेशी सरकार की शरण में पड़ी रहने को बाधित हो जाय। हम जो कह रहे हैं, वह अशुद्ध और असम्भव नहीं है। जिन स्थानों पर हिन्दू अधिक थे वहां पर झगड़े नहीं हुए, इस का एक मात्र कारण यही था कि वहां की हिन्दू जनता अपनी "माँ" सरकार की शरण में गई और वहां उसे सुरक्षा मिली। डर है कि कहीं इसी विश्वास से हिन्दू पुनः उस शरण को ही अच्छा न समझने लगें, जयचन्द सफल न हो जावें और 'विजयदशमी' मनाने का असली दिन हमसे और दूर न हो जावे।

अच्छा तो फिर इस का क्या उपाय है? हमारी सम्मति में देहली की जातीय महासभा के अधिवेशन का निर्णय इस प्रश्न का समुचित हल है। जातीय महासभा ने हिन्दू संगठन और शुद्धि का विरोध नहीं किया, हां उसके भीतर 'संगठनीय अशुद्ध और हानिकर भावों को तिरोभाव और नाश करने का यत्न किया है।' 'संगठन करो' किन्तु केवल हिन्दुओं का नहीं, पर भारतीयों का। राजा रामचन्द्र की विकृत सन्तान को इस ही मार्ग से पुनः 'विजयोपहार' के द्वारा अपने वक्षःस्थल सुशोभित करने का अवसर मिलेगा।

"राष्ट्र-भक्त"

कांग्रेस में मैने क्या देखा?

(मलावू श्री अली)

कौंसिल प्रवेश का समझौता

कैसे हो सका?

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का मनोरञ्जक वर्णन.

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में इस दिन दूसरा प्रश्न कौंसिल प्रवेश का था। नेताओं की सभा इस विषय में असफल हो चुकी थी, अतएव कांग्रेस कमेटी की इस कार्यवाही में बहुत दिलचस्पी ली जानी स्वाभाविक थी। सारा निर्णय यहीं पर था. कुछ देर बाद दर्शकों को वहां से भेज दिया गया. बड़ी देर तक कौंसिलों के प्रश्न पर विचार होता रहा. दोनों ओर के नेताओं तथा प्रतिनिधियों में काफी देर तक खैंच रही। इस खिंचा खिंची के समय महात्मा गांधी तथा कांग्रेस का एक अनन्य भक्त एक कागज़ पर न जाने क्या लिख कर एक एक नेता के पास जाता, उस से न जाने क्या बातचीत करता, अन्त में जब वह नेता स्वीकृति सूचक सिर हिला देता तब वह फिर दूसरे के पास जाता। इस प्रकार दोनों दलों के सब मिलाकर ८-१० नेताओं से बातचीत करने के बाद मौलाना मुहम्मद अली खड़े हुवे और अपने कागज़ से समझौते का प्रस्ताव उर्दू तथा अंग्रेज़ी दोनों में पढ़ कर सुना दिया। मौलाना मुहम्मद अली के मुंह से इस प्रस्ताव को सुन कर जो उन्हें न जानते थे उन्हें आश्चर्य हुआ, पर जो उन के स्वभाव से भली भांति परिचित थे उन्हें और भी अधिक आश्चर्य हुवा। महात्मा गांधी के अनन्य भक्त से कौंसिलों के सम्बन्ध में समझौते की बात सुनने की किसी ने कल्पना भी न की थी। आप ने अपने प्रस्ताव के समर्थन में बड़ा ही प्रभावशाली भाषण किया। जिस में आप ने एकता के नाम पर लोगों को समझौता करने को कहा। इस भाषण का प्राय: सम्पूर्ण अंश पत्रों में प्रकाशित हो चुका है अतएव भाषण के सम्बन्ध में हम विशेष कुछ न कहेंगे। इस प्रस्ताव का समर्थन कई एक नेताओं ने किया.

इसी समय असहयोगी दल के एक सज्जन एक दम उठ कर बाहिर गये। कोई एक घंटे के बाद वह एक तार लेकर वापिस आये। उस तार को कई असहयोगी नेताओं ने देखा। जिस ने देखा वह मौलाना मुहम्मद अली के प्रस्ताव पर सहमत होगया, असहयोगी नेता इस समय विशेष सन्तोष अनुभव कर रहे थे। यह तार श्रीयुत राजगोपालाचारी जी का था. जिस में आपने समझौते से अपनी सहमति प्रकाशित की थी। श्री राजगोपालाचारी अपने त्याग और तप के कारण तथा महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी होने से असहयोगियों के दिलों में विशेष स्थान रखते हैं। इसी लिये उन से सलाह ले लेना आवश्यक समझा गया। समझौते का प्रस्ताव सम्मति लेने पर स्वीकृत होगया। मौलाना मुहम्मद अली ने कांग्रेस को विभक्त होने से बचा लिया जो काम नेताओं की सभा न कर सकी आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी ने उसे पूरा कर लिया. आज की कार्यवाही यहीं समाप्त हुई।

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की और भी बैठकें हुईं, और भी कई प्रस्तावों पर खूब गर्मागर्म बहस हुई। डा० किचलू के सत्याग्रह सम्बन्धी प्रस्ताव पर दूसरे दिन बहुत अधिक विचार हुआ। पञ्जाब के प्रतिनिधि विशेष रूप से इस का विरोध कर रहे थे। ब्रिटिश माल के बहिष्कार तथा केनिया के निर्णय सम्बन्धी प्रस्तावों पर तथा इन के संशोधनों पर बड़ा विचार हुवा। केनिया सम्बन्धी प्रस्ताव पर तो धड़ाधड़ संशोधन पेश होगये

संशोधन के गिर जाने पर भी सभी संशोधक खुली कांग्रेस में समय खोजते थे। अन्त में प्रधान को कई संशोधनों को प्रस्ताव से असम्बद्ध करार देकर रोक देना पड़ा। और सब बातें समाचार पत्रों में पाठक पढ़ चुके हैं इस लिये हम उस का वर्णन नहीं करना चाहते।

हिन्दू मुसलिम ऐक्य - उपसमिति -

या Hindu Muslim Unity sub Committee में सात हिन्दू तथा सात मुसलमान सदस्य थे। पहिले पहिल इस उपसमिति में हिन्दू और मुसलमान दोनों के भाव बहुत उत्तेजित थे। नेताओं की सभा में तो जमीयत उलमा के मन्त्री मौ. अहमद सईद साहिब के भाव कितने उत्तेजित थे और किस प्रकार उन्होंने सब के सामने श्री पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी पर सरकार से घूस लेने के अभियोग लगाये थे, और किस प्रकार मालवीय जी को देश का शत्रु कहा गया था इस का वृत्तान्त पाठक अर्जुन में पढ़ ही चुके होंगे। वैसे भी वे शब्द इतने असभ्य और गन्दे थे कि उन्हें यहां लिखना मैं उचित भी नहीं समझता. इतना यहां कहना आवश्यक मालूम होता है कि पीछे से यह भाव बहुत बदल गया था। मौलाना अहमद सईद साहिब भी पीछे से नर्म हो गये थे। उन्हों ने अपने झूठे अभियोगों के लिये श्री स्वामी जी से माफ़ी भी मांग ली थी। इस उपसमिति में शुद्धि और संगठन विशेष विचार के विषय थे। कांग्रेस के नेता बीच बीच में इस उपसमिति की बैठकों में आ बैठते और उसे किसी न किसी निर्णय पर पहुंचने के लिये भी सहायता देते थे। अतएव पीछे से इस उपसमिति के सदस्यों का भी यही भाव होगया था कि किसी प्रकार एक ऐसा निर्णय करके ही उठना चाहिये, जिस से हम लोगों के सामने अपनी असफलता की घोषणा करने से बच जावें और जनता को कह सकें कि हम सफल हुवे हैं; जिस से जनता में हिन्दू मुसलमानों के सम्बन्ध में अच्छे भाव फैल सकें।

इस का श्रेय मौ. मुहम्मद अली श्री मौ. अबुल कलाम आज़ाद तथा श्री मालवीय जी को है। शुद्धि के झगड़े पर जब कोई निर्णय होता हुवा न देख गया, तो अपने को असफल कहने के बदले एक कमेटी बना कर कह दिया गया कि निर्णय होगया. यह कमेटी यह निरीक्षण करेगी कि कहीं शुद्धि व तबलीग़ के मामले में ज़्यादतियां तो नहीं की जातीं। संगठन के विषय पर श्री मौ. मुहम्मद अली ने जो प्रस्ताव रखा वह अवश्य ही स्वीकार योग्य है। वह आप की राष्ट्र-भक्ति का अच्छा परिचायक है। आप ने कह भी दिया था - कि "मैं तो न खिलाफ़त के वालण्टियरों को पसन्द करता हूं न हिन्दू सभा के वालण्टियरों को, न खिलाफ़त सभाएं चाहता हूं, न हिन्दू सभाओं को पसन्द करता हूं। मैं तो एक बात जानता हूं, और वह कांग्रेस। यह सारा संगठन कांग्रेस की ओर से फ़िर्कों के हित के लिहाज़ से नहीं पर राष्ट्र हित की दृष्टि से होना चाहिये।" आप का यह प्रस्ताव स्वीकृत हुवा.

प्रेस की ओर से जो समाचार पत्रों व अन्य विज्ञापनों द्वारा विष फैलाया जाता है, उस के लिये पत्रों के बहिष्कार के सम्बन्ध में भी प्रस्ताव पास किया गया जो प्रकाशित हो चुका है। किसी भी सरकार को जनता के अन्दर असन्तोष और अशान्ति फैलाने वाले साहित्य को रोकने का अधिकार है - इसी सिद्धान्त के ऊपर इस प्रस्ताव की रचना की गई थी। इसी प्रकार जो घोषणा एक सौ नेताओं के हस्ताक्षरों सहित मन्दिरों और धार्मिक स्थानों की सुरक्षा के सम्बन्ध में की गई है, वह भी इसी उपसमिति का परिणाम था. प्रस्ताव का अन्तिम भाग कि "जुल्म करने वाले के विरुद्ध सहायता, जुल्म करने वाले के सम धर्म (हम मज़ब) को भी करनी चाहिये" मौलाना मुहम्मद अली की ओर से जोड़ा गया था.

इस उपसमिति में सब से बुरा भाव नरिमानी और अहमदिये लोगों का था. अहमदिये तो भाग भी गये थे पर काद्यानी अन्त तक डटे रहे। यदि यह न होता तो शुद्धि का एक कमेटी बिठा देने की भी आवश्यकता न पड़ती। और भी कई कमेटियां और कान्फ्रेंसें हुईं। जिन का न कर हम केवल मुख्य कांग्रेस का परिचय तथा नेताओं का साधारण परिचय देने का यत्न करेंगे।

क्रीड़ा-भूमि

द्वितीय दिवस १७ अक्तूबर,

(मध्याह्न)

आज मध्याह्न को फिर खेल प्रारम्भ हुई. महाविद्यालय और विद्यालय दल के खिलाड़ियों का सम्मिलित गेंद बल्ले का साम्मुख्य था. खेल देर से प्रारम्भ होने की शिकायत इस समय भी थी। खैर, जैसे कैसे खेल प्रारम्भ हुई। एक दल के मुखिया ब्र. तड़ित कान्त बने थे और दूसरे दल के मुखिया के लिये ब्र. वामदेव का नाम लिया जा रहा था. पहिले ब्र. वामदेव के दल ने खेलना प्रारम्भ किया क्रिकेट का खेल आजकल गुरुकुल से लुप्त सा हो गया है। शायद इसी लिये दर्शकों में देखने का उत्साह न था. दर्शकों को आकर्षित करने के लिये एक और बात भी आवश्यक हुवा करती है, और वह कृपा पत्र. इस बार कृपा पत्र नहीं रखा गया. दर्शकों को खेल का परिणाम नहीं मालूम हो सकता. धीरे धीरे सारा दल विहत हो गया. पर कितनी दौड़ें हुईं? पता नहीं, खैर सन्तोष कीजिये, पीछे किसी से पूछ लेंगे. अभी जानने का कोई विशेष साधन नहीं।

ब्र. तड़ित कान्त का दल अब खेलने को तैयार हुवा. धीरे धीरे दौड़ों की संख्या बढ़ने लगी, इधर एक एक खिलाड़ी बल्ला छोड़ कर जाना भी शुरू हुवा, पर यह क्या? अभी तो पांच ही खिलाड़ी विहत हुवे हैं। अभी से खेल क्यों बन्द होगई? ठीक है, अब समय बहुत हो चुका है, दर्शक गण अनन्य दल तथा उपाध्याय दल के फुटबाल मैच का साम्मुख्य देखने को उत्सुक हैं, गेंद बल्ले की खेल में कोई आनन्द भी नहीं आ रहा, इसलिये पाठक फुटबाल मैच का साम्मुख्य देखने चलें। पर गेंद बल्ले का परिणाम क्या हुवा? परिणाम क्या हुवा, इसे जान कर क्या करेंगे? न आप खिलाड़ी हैं न हम. फिर उसे जानने का क्या लाभ? इतना हम आप को बता सकते हैं कि अभी ब्र. तड़ित कान्त के दल के ५ ही विहत हुवे हैं, पर फिर भी कोई कहता है उसकी ३५ दौड़ें हो चुकी हैं कोई कहता है ३०-४०, इसलिये दोनों का माध्यम मान ३५ ही मान लीजिये। दूसरे दल की केवल १६ दौड़ें ही हुई हैं। शेष साम्मुख्य पूरा होगा नहीं, इस का कुछ पता नहीं, हमारी सम्मति में इतना ही बहुत है। हम, आप देखते देखते उकता गये.

फुटबाल का मैच

'अनन्य दल' का नाम नया नहीं, पुराना है, पर आजकल 'अनन्य दल' को उपाध्यायों को चुनौती देने का साहस नहीं होता. इसके कई कारण हैं। गुरुकुल महाविद्यालय के अच्छे से अच्छे खिलाड़ी भी स्नातक बनने के बाद उपाध्याय दल में आ जाते हैं, और तब से वे अनन्य दल के ही योग्य समझे जाते हैं। पर 'अनन्य दल' सदा ही अनन्य रहता है। 'अनन्य दल' का लक्षण है महाविद्यालय के वे मल्लविद्या विशारद और खिलाड़ी जो ८ इंच के कागज़ पर ही सारी लड़ाई लड़ते हैं, या जो गेंद के आगे भागते हैं और पर गेंद उन्हें न पकड़ सके। गेंद उनसे डरती नहीं, उनके पास आने से उसे संकोच नहीं होता पर वे गेंद से भागते हैं, जानबूझ कर या वैसे ही इस का उत्तर हम नहीं जानते। इसी कारण अनन्य दल के अन्दर कोई ही भला भटका खिलाड़ी प्रवेश करता है। फिर अनन्य दल का चुनाव उपाध्याय दल पर ही होता है, अवश्य सिवाय किसी छिपे कलम के

गेंद बल्ले का साम्मुख्य.

कोई उन की नज़रों से बचकर उसमें शामिल नहीं हो सकता. अनन्य दल से हमारी ज़ाती सहानुभूति है, अतएव यदि इतने शब्द हमने उसका पक्ष पोषण करने के लिये लिख दिये हों तो ~~इसमें~~ ~~कुछ~~ कोई बुरी बात नहीं।

पाद कन्दुक का साम्मुख्य प्रारम्भ हुवा. गेंद पांवों की ठोकरें खाकर खिलाड़ियों के सिरों पर नाचने लगी। कभी इधर कभी उधर. अनभ्यस्त खिलाड़ियों में से यदि कोई पाद कन्दुक पर पांव ~~न~~ पड़ जाने से भूतलशायी हो जाता तो दर्शकों के मनोरञ्जन और हंसी का ठिकाना न रहता. देखते देखते अनन्य-दल, पादकन्दुक को घेर कर उपाध्याय दल की बल्लियों के बीच में ले आया. यह लो, चारों ओर से तड़ तड़- तालियां बजने लगीं, क्या हुवा? क्या गोल हुवा? नहीं नहीं गेंद को बीच ही में उपाध्याय दल के गोलकीपर श्रीयुत खन्ना जी ने रोक लिया. वह देखिये, गेंद को लिये इधर उधर कैसे भाग रहे हैं, वह लो फैंक दिया गेंद फिर फिर कर अनन्य दल के पार्श्व में आगई। पं. विश्वामित्र जी पुराने अभ्यस्त खिलाड़ी हैं आप ही उपाध्याय दल का साथ देते हैं, गेंद लौट कर आना चाहती, पर आप बार बार उसे लेकर दूर छोड़ आते थे। आधा समय होगया, सीटी बजी. दोनों ही दल बराबर रहे।

फिर सीटी बजी, गेंद मध्य में लायी गई. अब की बार उपाध्याय दल जोश में था. अनन्य दल चारों ओर से घिर गया. पिटती पिटती गेंद बार बार लौट आती। फिर सीटी बजी, साथ ही चारों ओर तालियां बजने लगीं, यह क्या? अनन्य दल पर गोल हो ही तो गया, किसने किया? उत्तर० धर्मीश्वर जी ने।

गेंद फिर बीच में आई, चलो, बढ़ो, फिर चलो, शाबाश, ठीक है, बचा कर न लो, शाबाश मौका मत छोड़ना मत, इस बार गोल है, पंडित जी लिये जाइये, इस प्रकार शोर से मैदान गूंज उठा. चारों ओर तालियों की तड़ तड़ ध्वनि से कभी खेल को हाथ न लगाने वाले खिलाड़ियों में भी एक बार जोश उमड़ आया. बड़े ज़ोर से खेल होने लगी। पर अब समय बहुत नहीं, अब किसी ओर गोल की आशा भी नहीं। चलिये, पाठक अब चलें, परिणाम तो ज्ञात ही है, वह लीजिये सीटी भी बज गई। खेल ख़तम. उपाध्याय दल एक गोल से अनन्य दल से जीत गया., अनन्य दल की पराजय हुई। ग्राउन्ड धीरे धीरे ख़ाली होगया.

अनन्य दल व उपाध्याय दल का फुटबाल.

रात की लड़ाई विजय

आज खेल से पहिले बहुत चहल पहल थी। मालूम होता था शायद आज कुछ होगा. कोई २½ बजे घण्टा बजा. आज मैं किसी कार्यवशात् ½ घंटा देर से पहुंचा, पर उस समय तक खेल शुरू न हुआ था. खिलाड़ी धीरे धीरे जमा हुवे। तब तक ग्राउन्ड पर छोटे भाई निद्रादेवी की गोद में मस्त हो चुके थे। निद्रादेवी को भी ये बच्चे बड़े प्यारे लगते हैं; वह भी कई बार इन्हें व्यर्थ ही खेलकूद के आनन्द से खींच कर इन्हें ज़बरदस्ती अपनी गोद में बिठा लिया करती है।

थोड़ी देर बाद सीटी बजी, व्यवस्थापक महोदय ने कहना प्रारम्भ किया- " ये दो झण्डे हैं। खेल के मैदान के दो हिस्से हैं, एक इधर का दूसरा उधर का परन्तु पहिले दोनों को इकट्ठा खड़ा कर दिया जायगा। सीटी बजने पर दोनों दल झण्डों पर दौड़ेंगे। ~~और~~ सीटी बजने पर जिस दल के पास झण्डों का अधिक भाग होगा वह विजयी समझा जावेगा। झंडों को सीमा से बाहिर ले जाना वर्जित है। " इसके बाद दोनों दल अलग अलग खड़े हो गये। एक दल ब्र० देवराज का था, और दूसरा ब्र० विश्वकर्मा का. सीटी बजी, दोनों दल झंडों

गुत्थम गुत्था करते। कोई एक को उठा कर पटक देता. तो दूसरा उसी को उठा कर धड़ाम से दूर फेंक देता. यह क्या? झगड़ा चला? वह देखो, वह ले भागा यह क्या, पत्थरों पर ही? "अरे, छोड़ो छोड़ो, छोड़ दो, मुझे दे दो, बस, इस का निर्णय पीछे होगा" यह कह कर स्वयंसेवकों ने उण्डा अपने हाथ में ले लिया. थोड़ी देर फिर लड़ाई हुई, थोड़ा सा झगड़ा हाथ लगा. पर वह झण्डा झूठा था. असली न था. झण्डा और भंडार रावण दल के पास ही रहा. लूट में राम दल को भी हाथ लगा.

रावण दल को एक झण्डा और मिल गया, पर इस बार उसे सिवाय दो कैदियों के और कुछ खोना न पड़ा. उधर राम दल अपने कैदियों को पार ले जाने की फ़िक्र करने लगा. रावण दल अपने कैदियों को छीनने का यत्न करने लगा. तीन कैदियों में से केवल एक कैदी ही ले जाया जा सका. शेष कैदी बच कर भाग आये।

अब भोजन की बारी थी. इस समय तक दर्शक गण भी खूब थक चुके थे। किनारे पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। ८,–८ सैनिक प्रत्येक दल के भोजन लेने चले। वह देखो, राम दल के मुखिया टोकरी लिये पार जा रहे हैं। ओह! वह रावण दल के मुखिया भी पीछे भाग पड़े। वह पकड़ लिया. ओह! टोकरी छूट गई। राम दल का सारा भोजन गङ्गा में जा गिरा. न वह राम का रहा न रावण का हुआ. उसे समुद्र के जीव जन्तु चट कर गये। राम दल के मुखिया खाली टोकरी लिये बाहिर निकल आये। अब रावण दल के भोजन की उड़ीक है, पर यदि राम दल अब भोजन न छीन सका तो वह क्या करेगा। क्या भूखा रहेगा? वह लीजिये, राम दल का भोजन भी आ गया. भोजन लिये वह देखिये राम और रावण दल के दो सैनिक लड़ते आ रहे हैं। ये और भी पहुंच गये पर राम दल भोजन न ले सका, क्योंकि भोजन ने गङ्गाजल में दो तीन बार स्नान कर मुक्ति प्राप्त करने की बड़ी चेष्टा की।

वह देखिये और भोजन आ रहा है, रावण दल का एक सैनिक थैले में क्या लिये चला आ रहा है? यह लो, छीना झपटी शुरू हुई. इस छीना झपटी में थैली फट गई. राम दल का एक सैनिक मजे में भोजन निकाल निकाल कर खाने लगा। बन्दर और भालुओं की सेना से और आशा ही क्या की जा सकती थी? थैली छीनी न जा सकी। स्नान इसका भी खूब हो गया।

यह क्या। वह दूर से कौन पार आ रहा है, किसी बर्तन में कुछ लिये आ रहा है, ओहो! यह तो राम दल का एक सैनिक है। पाठक समझे नहीं? यह राम दल का भोजन है। वास्तव में भोजन इसी में है। राम दल के मुखिया की खाली टोकरी ही रावण दल ने लूटी थी। राम दल का गङ्गा में न कुछ गया और न भीगा वह सुरक्षित तौर से चला आ रहा है। राम दल ने देखते देखते रावण दल को चकमा दे दिया। पर यह क्या। इतनी दूर से तो भोजन लाने का नियम न था. धोखा तो लाल धार से ले आने की की गई थी। पीछे से कुछ स्वयंसेवकों ने गङ्गा की तेजी के पास के लकड़ की सीमा बताई जाती थी। पर यह तो उस से भी ऊपर से आता दिखाई देता है। खैर देखिये, क्या होता है, वह लीजिये वह आ गया, आइये, पाठक, चल कर पूछें। सैनिक का कहना है कि वह लकड़ के नीचे से चला था. पर वहां से चलते हुवे उसे किसी ने देखा नहीं। जहां उसे पानी में देखा गया है वहां पर नीचे से चल कर पहुंचना दर्शकों के लिये तो असम्भव है, रावण दल का भी शायद ही कोई उसे पार कर सके। यदि पार करने वाला सैनिक हनुमान का कोई दूसरा अवतार हो तो हम कह नहीं सकते। अब निर्णय कैसे हो? यह व्यवस्था का प्रश्न था. यह भी विवाद था कि उल्लंघित सीमा लाल धार थी या लकड़? अन्त में व्यवस्थापक महोदय ने यह फैसला दिया कि "चूंकि दोनों दलों को ग़लतफ़हमी हुई है इस लिये जो जिसके पास है वह भोजन करे।" निर्दिष्ट स्थान से उक्त सैनिक के पार होने या न होने के विषय में सन्देह बना रहा।

हमें अपने एक संवाददाता से विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि उक्त सैनिक निर्दिष्ट स्थान से बहुत ऊपर से छूटा था. राम दल ने रावण दल की [illegible] आंखों में धूल झोंक दी पर व्यवस्थापक को भी चकमा दे गया.

विजय राम दल को प्राप्त हुई। समय बहुत हो जाने से और अनुमान नहीं हो सके। अब आगे पाठकों इन्हीं दलों का लङ्का विजय होगा।

१९ अक्तूबर १९२३. शुक्रवार ३ कार्तिक १९८०

हमारी विजयदशमी.

सदियां गुज़र गई, उस घटनाकी स्मृति अब बड़ी पुरानी हो गई है। अब वह स्मृति भी पूरी पूरी नहीं रही, एक धीमी सी स्मृति, इक धीमे से प्रकाशकी भान्ति, दिमाग़ के किसी कोने से बिजली की तरह चमक कर लुप्त हो जाती है। क्योंकि दशमी का दिन आता है, वह पुरानी स्मृति बिजली की तरह चमक कर फिर अनन्त में विलीन हो जाती है। हम हिन्दू लोग इस चमक को सदियों से देखते चले आ रहे हैं; पर सदियों से देखते देखते हमें यह अभ्यास सा पड़ गया है, कि हम उस चमक के लुप्त होने पर भी व्याकुल नहीं होते; और न फिर उसे देखने के लिये उत्सुक होते हैं। इसीलिये आज राम हम से बहुत दूर हैं। 'विजया' हम से बहुत परिचित होती हुई भी अपरिचित रह गई है। रामलीला के असली राम को हम गंवा चुके हैं, अब लीला मात्र शेष है। यही कारण है कि 'विजया' हर साल आकर चली जाती है, पर सदियों पुरानी हिन्दू जाति वहीं खड़ी है।

हिन्दुओं की विजय दशमी भक्ति की भावना मात्र है। जिस समय वह घटना हुई थी, राम को हम ने 'शत्रु-वीर' कह कर सम्मान दिया था. राम की इन विजयों से आर्यजाति का साम्राज्य विस्तृत हुआ था. अतएव आर्यजाति उसे शीघ्र भुला न सकी, प्रेम और सम्मान ने धीरे धीरे भक्ति का रूप ग्रहण किया. आर्यजाति राम की भक्ति करने लगी। पर धीरे धीरे वह भक्ति भी शून्य भक्ति के सिवाय कुछ बाकी न रही। हिन्दुओं की भक्ति क्रिया शून्य कल्पना की भक्ति ही है, राम की पूजा भी इसी भक्ति से की गई। विजय दशमी भक्ति की भावना मात्र रह गई।

आज हिन्दू भक्त राम की मूर्ति पर फूल चढ़ाना जानते हैं, मस्तक नवाने का उन्हें पुराना अभ्यास है, अब वे इस अभ्यास के कारण शत्रु के सामने मस्तक नवाने में भी संकोच नहीं करते। राम और सीता की जप पूजा-अर्चना उन्हों ने बहुत दिनों से सीख रक्खी है; परन्तु अब इस प्रकार उनका अभ्यास पड़ गया है, अब वे किसी की भी जप पूजा करते हैं; शून्य की उपासना ने हिन्दू जाति को निर्जीव और निर्वीर्य बना दिया है। हिन्दू जातिने राम को याद रक्खा, पर राम के स्वरूप को भुला दिया. अस्थिपञ्जरशेष राम हिन्दू जाति में जीवन नहीं फूंक सके। हिन्दू जाति अपने 'शत्रुवीर' राम को भूल गई, अतएव वह राम से कुछ सीख न सकी। निर्जीव हिन्दू जाति राम को भी निर्जीव बनाकर उस की पूजा करती रही है। शून्य की स्मृति आती है, चमक दिखाई देती है, बिजली चमक कर शून्य में ही मिल जाती है, 'विजया' आती है चली जाती है, पर हिन्दू जाति वहीं पड़ी रहती है, एक इञ्च भी आगे नहीं बढ़ती।

यदि त्योहारों को मनाने का कोई महत्व है, यदि त्योहार पानी के बुलबुले की तरह, हवा के झोंके की तरह और बिजली की चमक की तरह शून्य में से निकल कर शून्य में ही मिल जाने की वस्तु नहीं, यदि वह जातियों के अन्दर कुछ भी जागृति और जीवन पैदा कर सकते हैं, तो हिन्दू जाति के त्योहार अपना सारा महत्व खो चुके हैं, हिन्दू जाति ने अपनी तरह उन्हें भी निर्जीव बना दिया है, उन में जीवन डालने की आवश्यकता है। राम के अस्थि-पञ्जर के स्थान पर आत्मा को पूजा करने की आवश्यकता है।

हम कुलकामी भी शायद हिन्दू जाति के इन दोषों से बचे हुये नहीं, बल्कुल, कहीं आज भी पूजा के भक्त तो नहीं बन रहे, निर्जीव की पूजा तो नहीं कर रहे, हमारी 'विजया' के उत्सव में उत्साह की कमी

है। वह पुराना उत्साह अब नहीं रहा. धीरे धीरे से वह जाता रहा है; गुरुकुल का दशहरा किसी समय आर्य जगत में प्रसिद्ध रहा है, पर अब वह वैसी दर्शनीय वस्तु नहीं। हमें इस बार यह देख कर अत्यन्त दुःख हुआ कि अधिक कुलवासी विजयदशमी में बहुत कम भाग लेते रहे। क्रीड़ा क्षेत्र में दर्शकों का अभाव मालूम होता था. खिलाड़ी दर्शकों को खींच नहीं सकते, और दर्शक वहां से अनुपस्थित होने के कारण खिलाड़ियों का उत्साह नहीं बढ़ा सकते। हमारे लिये यह कम शोक की बात नहीं कि इस बार की विजय दशमी में - सब कुलवासियों ने एक परिवार की तरह भाग नहीं लिया. हम विजय का स्वागत इस बार अच्छी तरह नहीं कर सके, अपनी उत्साह पूर्ण विजयों की जै जै कार कर उसे सफल नहीं कर सके।

अब भी बताइये, क्या आप आज इस सभा के बाद कल ही इसे भूल जावेंगे। त्योहार ~~जातियों~~ उठती हुई जातियों को प्रकाश स्तम्भ का काम देते हैं। 'विजय दशमी' एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है, जिस से अधिक अच्छा संसार में कोई भी प्रकाश स्तम्भ विद्यमान नहीं। ये प्रकाश स्तम्भ - सदा हमारे सामने रहने चाहियें। आप बताइये, कि क्या आप 'विजया' को ^सनातन^ हिन्दुओं की तरह निर्जीव त्योहार का रूप देंगे, क्या हमारे कुल में भी विजया ^या दीवाली और^ आदि एक चमक दिखा कर फिर शून्य में विलुप्त हो जाया करेगी? क्या इस का भी वही रूप होगा जो ~~[illegible]~~ और त्योहारों का होता है? क्या हम भी राम की आत्मा को न लेकर उस के अस्थि पञ्जर की पूजा करेंगे? यदि यही होगा, तो हम भी ^भी^ कुल में विजय दशमी को एक जातीय त्योहार का रूप न दे सकेंगे. उस के लिये हमें ^उस में^ जीवन डालना होगा. तो फिर क्या हम उस में जीवन डालने का यत्न करेंगे? आशा है ~~[illegible]~~ सब 'विजया' को उस रूप का लक्षित रूप दे कर ही विदा करेंगे।

विजय - वैजयन्ती.

पाठकों से अन्तिम शब्द

लीजिये पाठक, हम फिर आप से विदा हुवे, साल भर बाद आप के दर्शन किये, अब साल भर के लिये फिर वापिस जा रहे हैं। लीजिये, प्रणाम! हमें अब विदा दीजिये।

विजय दशमी मनाने में आप ने जैसा उत्साह दिखाया हम ने भी वैसा ही यत्न किया इस बार न कुल में विजय दशमी का उत्साह से स्वागत हुवा - इसी लिये हम ने भी अधिक यत्न नहीं किया. हम सब इस बार विजय दशमी का अच्छा स्वागत करने में असमर्थ हुवे हैं।

हम पहिले कितने ही सहयोगियों के दर्शन किया करते थे इस बार बहुत से सहयोगियों ने असहयोग रखा. हम केवल तीन ही पत्र देख सके - महाविद्यालय दैनिक, आजकल और नवीन। हमें यह कहने में कुछ भी संकोच नहीं कि हम सब मिलकर भी आप लोगों का उतना मनोरञ्जन न कर सके, जितना करना चाहिये था. पर यह मत समझिये कि गुरुकुल का सम्पादक मण्डल गुरुकुल से भिन्न है, "समाचार पत्र जनता के भावों के प्रतिबिम्ब होते हैं" यदि यह कथन सत्य है तो सच मानिये, हम ने भी इस से अधिक कुछ नहीं किया. इस बार के पत्र आप के प्रतिबिम्ब हैं, इस बार के पत्रों का उत्साह आपके उत्साह का प्रतिबिम्ब है। यदि इस बार आप सब खेलों को देखना पसन्द न करते थे तो हम ने भी आप को सारे ही सैर नहीं कराई, बताइये, हमारा कुछ दोष है?

अच्छा अब साल भर के लिये विदा दीजिये, यदि कोई कटु शब्द हम ने कभी कहा हो तो हमें क्षमा कीजिये और अपनी याद बनाये रखिये.

आपका
सम्पादक विजय वैजयन्ती

कांग्रेस में मैंने क्या देखा?

(गतांक से आगे)

नेताओं का संक्षिप्त परिचय.

साधारण अधिवेशन का कार्य.

(ले० श्रीपाल)

मुख्य कांग्रेस की बैठक बड़े पण्डाल में होती थी। पण्डाल खूब सजा हुआ था. उस का ढांचा हमारे उत्सव के पण्डाल से मिलता जुलता था. पर वह अधिक शानदार मालूम होता था. शायद इस लिये कि वह हमारे लिये नया था। पण्डाल के चारों ओर एक और बड़ा घेरा था. इस घेरे के अन्दर दो बड़े दरवाज़े थे। दरवाज़ों पर बढ़िया चित्र रची हुई थी। एक दरवाज़े पर महात्मा गांधी का चित्र था. पर, यह दुःख की बात है कि इन दरवाज़ों पर भारतीय चित्रकला को स्थान न देकर रोमन चित्रकला को स्थान दिया गया था। यही दो मुख्य मार्ग थे. परन्तु एक दरवाज़ा केवल नेताओं के आने के लिये ही रखा गया था. दूसरे दरवाज़े से अन्य व्यक्ति आते जाते थे।

* स्थान स्थान पर स्वयं सेवक खड़े किये गये थे। इस बार स्वयंसेवकों के लगभग तीन दलों को छोड़ कर शेष दल अनभ्यस्त थे। वे कांग्रेस देखने को जितने उत्सुक थे अपने कार्य पूरी तरह निबाहने को वैसे उत्सुक न थे। उन की बोली और व्यवहार में शिष्टता नहीं, इसी लिये कई कांग्रेस के प्रतिनिधियों व अन्य दर्शकों को उनके इस व्यवहार से बहुत शिकायत थी। खद्दर की पोशाक के लिये भी उन्हें बहुत बाधित नहीं किया गया. जीन की भद्दी किश्मियों जैसी पोशाक कांग्रेस के पण्डाल में बहुत बुरी मालूम होती थी। मैंने अनुभव किया कि अभी **हमारे देश में राष्ट्रीय सिपाहियों की** बड़ी ज़रूरत है। इस ओर हमारे देश के नायकों का अभी तक ध्यान नहीं गया। **कर्तव्य परायणता और नियन्त्रण जब तक हमारे जातीय गुण नहीं बन जाते तब तक हम स्वराज्य की लड़ाई लड़ने में असफल होते रहेंगे।**

मैं पण्डाल का स्थान लाल किले के पास ही था। मैं जिस समय लाल किले के सामने दरवाज़े पर पहरे पर खड़े हुवे अंग्रेज़ सैनिकों और फिर पास ही खड़े हुवे अपने स्वयंसेवकों की तुलना करता तब उन में बड़ा भारी अन्तर प्रतीत होता था। इस समय हमें राष्ट्रीय सैनिकों की सब से बड़ी आवश्यकता है। इसी लिये महात्मा गांधी ने भी स्वयंसेवकों की शिक्षा पर बड़ा बल दिया था। गुरुकुल में रहते हुवे हमें भी अपने जीवन को सैनिक जीवन बनाने तथा नियन्त्रण को अपना निजू गुण बना लेने का प्रयत्न करना चाहिये; तभी हम राष्ट्र की सच्ची सेवा कर सकेंगे।

पण्डाल के अन्दर भी खद्दर का अभाव था। स्वागत समिति के मन्त्री श्रीयुत आसफ़ अली ने अन्त में इसका जवाब देते हुवे कहा कि "बहुत यत्न करने पर भी हम इतनी शीघ्र खद्दर प्राप्त न कर सके" यह कारण ठीक हो सकता है, पर क्या यह देश का दुर्भाग्य नहीं? जब कांग्रेस के लिये ही खद्दर नहीं मिल सका तो देश की सर्वसाधारण जनता को हम किस मुंह से खद्दर पहिनने को कहें? कांग्रेस के प्रतिनिधियों में भी खद्दर धारियों की संख्या सन्तोषजनक न थी। विदेशी वस्त्रधारी प्रतिनिधि स्थान स्थान पर अंगरखे में खटकते थे।

प्रतिनिधियों को देख कर यह कहना कि वे सम्मति देने के अपने उत्तरदायित्व को समझते भी हैं या नहीं। देश के प्रतिनिधियों और साधारण जनता (Masses) में जो भेद होना चाहिये उस का अभाव था. प्रजातन्त्र शासन के लिये हमारी यह अयोग्यता देश के नेताओं को क्या नहीं खटकती? कांग्रेस में लगभग २००० प्रतिनिधि उपस्थित थे। क्या २००० प्रतिनिधि भी हम ऐसे नहीं चुन सकते जो अपने उत्तरदायित्व को पूरी तरह समझ सकते हों? और कई बार इतना बढ़ जाता था कि प्रधान लोगों को चुप कराते हुवे थक जाते थे। एक बार तो सामयिक प्रधान श्रीयुत दास महोदय को यहां तक कहना पड़ा — "Those who respect me should keep silent." अर्थात् जो लोग मेरा कुछ भी सम्मान करते हैं कृपया शोर न करें, तब जा कर शोर बन्द हुवा। यह शोर किसी विशेष विचार के विषयों पर ही नहीं, साधारणत: हर समय कांग्रेस में होता रहता था. पुराने देखने वाले कहते हैं कि यह बात नई नहीं, इतनी भारी जनता में यह शोर स्वाभाविक है।

प्रतिदिन कांग्रेस प्रारम्भ होने का समय मध्याह्न १ बजे था, पर ३ बजे से पहिले कांग्रेस शुरू न होती थी. प्रतिनिधि और दर्शक जो ११ बजे से ही बड़ी भारी संख्या में अन्दर आने प्रारम्भ हो जाते थे इतनी देर तक बैठे रहते थे।

सब से प्रथम दिन स्वागत समिति के अध्यक्ष तथा प्रधान महोदय का भाषण था. अध्यक्ष महोदय का भाषण असाधारण तौर पर लम्बा था. लम्बा होने पर भी वह विद्वत्ता पूर्ण प्रतीत न होता था. कहने का तात्पर्य यह कि वह कांग्रेस के प्रधान के योग्य भाषण न था. पाठक दोनों भाषण समाचार पत्रों में पढ़ ही चुके हैं। प्रथम दिन और कोई कार्यवाही न हुई।

दूसरे दिन कौंसिल प्रवेश के सम्बन्ध में प्रस्ताव था. आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में समझौता हो चुका था. इस को देख कर साधारण प्रतिनिधियों को बहुत कम थी। मौ. मुहम्मद अली को समझौते का प्रस्ताव उपस्थित करते देख कर उन्हें आश्चर्य हुवा। उन्हों ने एकता के नाम से अपील करते हुवे ~~कांग्रेस कि~~ दोनों ओर का विरोधियों को विरोध न करने के लिये कहा। यह सब समाचार पत्रों में पाठक पढ़ ही चुके हैं। अतएव इस पर कुछ न लिख कर मैं नेताओं की भाषण शैली आदि की कुछ आलोचना करूंगा.

मौ. मुहम्मद अली — आप के एक कट्टर मुसलमान हैं, पर साथ ही कट्टर राष्ट्र भक्त और कट्टर गांधी भक्त भी हैं। आप के व्यवहार, भाषण और बोल चाल में एक विचित्र सादापन है, आप के अन्दर नौजवानों का सा जोश है, बच्चों की सी सरलता है; पर बड़ों का सा अनुभव अभी आप में नहीं झलकता. आप का जोश भाषा साहित्य के चुने हुवे लच्छेदार शब्दों में नहीं, किन्तु बड़े ही सीधे सादे शब्दों में फूट फूट कर बाहिर निकलता है। आप हास्य प्रिय हैं, प्राय: विरोधियों की बातों का उत्तर आप ~~कभी हंसी~~ हंसी में ही दिया करते हैं, पर वह हास्य गम्भीर हास्य नहीं है, वह विरोधी को चुभ नहीं जाता, पर उसे चुप कर देता है, उस में युक्ति और तर्क भी मिश्रण रहता है। ~~एक बार~~ आप भाषण करते थे बङ्गाली प्रतिनिधियों ने आप से ~~अंग~~ अंग्रेज़ी में बोलने की प्रार्थना की. आप ने ~~उन को~~ कहा—

"Bangal delegates request Molana to speak in English. Molana ~~re~~ request Bangal delegates to learn Hindustani" ~~अब~~ अर्थात् बङ्गाल के प्रतिनिधि मौलाना से प्रार्थना करते हैं कि वह अंग्रेज़ी में बोलें मौलाना बङ्गाल के प्रतिनिधियों से प्रार्थना करता है कि वह हिन्दुस्तानी सीखें।" इस के बाद फिर उसी प्रकार उर्दू में बोलना शुरू कर दिया. कई बार भीड़ में लोग आप की जय पुकारते — आप कहते थे कि "जय तो एक ही है और वह महात्मा गांधी की जय औरों की जय न बोला करो। इस पर सब ने महात्मा गांधी की जय ध्वनि की साथ ही एक आदमी फिर आप की जय बोलने लगा — आप झट बीच में ही बोल उठे - यही बेशर्मी है.

मौलाना स्पष्टवादी हैं। स्पष्टबात कहने के विषय में कैद कहा करते थे कि महात्मा गांधी जो कि मेरे पिता के बराबर हैं उन के सामने भी साफ़ बात कहने में मैं नहीं झिझकता। साफ़ बात कह देना ही दिली सफ़ाई का सबूत है। पर साथ ही आप अपनी भूल मानने को भी तैयार रहते हैं। इसी लिये भरी सभा में आप ने एक बार श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी से पांव पड़ कर माफ़ी मांगी थी। उस का ज़िक्र आगे करेंगे.

कुरान के आप अद्वितीय पण्डित हैं। अन्य धर्मों का भी आप ने अध्ययन किया हुआ है। आप कहते थे कि मैंने महात्मा जी के कहने से ही बाइबल पढ़ी थी. गीता और उपनिषदों पर भी आप की श्रद्धा है।

आप में एक बड़ी कमी भी है, जो सार्वजनिक जीवन में आप के लिये हानिकर हुई है, जिस के कारण आप लोगों को स्थिर रूप से अपने पीछे नहीं चला सकते आप के विचार अभी पूरी तरह से परिपक्व नहीं। समय की धारा में आप भी बह जाते हैं; आप लोगों को उभार सकते हैं, उन में नवीन जोश भर सकते हैं पर उन का सञ्चालन नहीं कर सकते. देश की वास्तविक परिस्थितियों और अवस्थाओं के सम्बन्ध में आप के विचार अभी कच्चे हैं, सच्ची घटनाओं और उन का यथार्थ ज्ञान आप को कम रहता है, इसलिये कई बार आप गलती कर जाते हैं, आप को अपने विचार कई बार बदलने पड़ते हैं। परन्तु भूल पता लगने पर आप मान भी लेते हैं। दिल साफ़ है, उस पर जैसा प्रतिबिम्ब पड़ जावे पड़ सकता है। हिन्दू मुस्लिम कमेटी में आप कभी के विचार में कभी हिन्दू अधिक दोषी ठहरते कभी मुसलमान. अन्त में जब कुछ निर्णय न कर सके तो आप ने कहा - 'जाने दो अभी आपस का निश्चय कर लो, पुराने को मत दुहराओ, अब' इसी लिये उन्हें कई बार चुप भी होजाना पड़ता था.

श्री युत दास -: श्री युत दास अद्वितीय वक्ता हैं। हिन्दी समझ सकते हैं, पर बोल नहीं सकते। आप अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं, पर देखने में बहुत सादे प्रतीत होते हैं। आप को देख कर किसी ने कहा था कि यदि भारत स्वतन्त्र होता तो यह उस के प्रधान होने योग्य थे। असहयोग की लहर चाहे न इतना खीमा कर देने में आप की पर्याप्त परीक्षा हो चुकी है। पुराने नेता होने के कारण आप के स्वभाव में अपने व्यक्तित्व के दबाव से अपनी बातें मनवाने का भाव आगया है। युक्ति तर्क और प्रमाणों से अपने पक्ष की वकालत करने में आप सिद्धहस्त हैं। यदि कांग्रेस में समझौता न होता तो आप अपने कांग्रेस से अलग हो जाते। पर इस बार शुरू से ही ऐसी सम्भावना न थी, कि आप का दल निर्बल रहेगा। असहयोगी सीधे सादे थे। आप 'राजनीति में सब कुछ किया जा सकता है' इस सिद्धान्त को क्रियात्मक रूप से मानने वाले थे। कानून और व्यवस्था के पण्डित होने के कारण कानूनी झगड़ों और विप्रतिपत्तियों को आप बड़ी सफलता से हल करते हैं, और प्रधान के आसन पर बैठे हुवे ऐसे झगड़ों के उठने पर कुछ आनन्द अनुभव करते हैं।

श्री मालवीय जी -: आप के भाषण में जादू का असर होता है; पर जब आप वकालत ही नहीं कर रहे होते पर दिल के अन्दर से ही बोलते हैं तब तो आप की बात लोगों के दिलों में असर किये बिना नहीं रह सकती। बड़ी ज़ोरदार ओजस्विनी भाषा का प्रयोग करते हुवे, बड़े ही प्रभाव शाली शब्दों को चुन चुन कर रखते हुवे भी आप एक एक शब्द सोच समझ कर रखते हैं। अपने आप को सदा बचाये रखते हैं; यह आप के भाषण की विशेषता है जो और किसी में नहीं। विरोधी भी इसी की शिकायत करेंगे कि वह ख़बरदार रहे पर एक भी कड़ा शब्द न कहेंगे जिस पर उसे पकड़ा जा सके।

आप में एक कमज़ोरी भी है। आप का स्वभाव इतना नर्म है, कि आप सब समझौते के लिये तैयार हो जाते हैं; और प्रायः समझौते में अपने विरोधी की ऐसी बातें भी मान लेते हैं, जिन से वह अनुचित लाभ उठा लेता है। परन्तु आप के अन्दर वास्तव में यह कमज़ोरी है भी या नहीं इस में सन्देह है। विशेष कांग्रेस पर हिन्दू मुस्लिम कमेटियों में शुद्धि आन्दोलन पर आप समझौते के प्रस्ताव पास करते जाते थे, पर ज्यों ही आप के संगठन के विषय पर विचार हुआ.

वह जिन नेताओं को दिया जाता था उनमें माननीय मालवीय जी का नाम न था. इसी लिये लोगों ने जलूस की शोभा दिखने न दी थी।

जब यह चर्चा पार्टी हाउस में चली तो ~~मौ० मुहम्मद अली ने~~ श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जो कि उस आज की सभा के सभापति थे, इस का कारण हिन्दु मुसलिम विरोध बताया और मुसलमानों को इस के लिये किसी अंश तक दोषी ठहराया. इस समय तक मौ० मुहम्मद अली सारे हिन्दु मुसलिम झगड़े की जड़ शुद्धि और संगठन को समझते थे. जोश में आकर उन्हों ने शुद्धि और संगठन को खूब रगड़ा साथ ही ~~कुछ~~ श्री स्वामी जी के लिये कुछ ऐसे शब्द उन के मुंह से निकल गये, जो अनुचित समझे गये। इस बार मौलाना मुहम्मद अली की माता 'बी अम्मा' ने उन्हें बहुत फटकारा. तब मौलाना मुहम्मद अली ने सब जनता के सामने श्री स्वामी जी के पांव पड़ उन से माफ़ी मांग ली। श्री स्वामी जी ने शीघ्र ही उन्हें उठा लिया और कहा, कि मुझे कुछ बुरा नहीं लगा. मैं जानता था तुम ने जोश में आकर ही सब कुछ कहा है। सारी जनता ने मौलाना मुहम्मद अली और उन की आदर्श माता की बड़ी प्रशंसा की।

दिल्ली में खद्दर का बड़ा अभाव था. दुकानों पर शुद्ध खद्दर मिलना बड़ा कठिन था. कांग्रेस के दिनों में भी विदेशी वस्त्र खुले आम बिकते थे। खद्दर धारी मिलना तो दूर की बात। इस सब का कारण कांग्रेस का भाग जनता के सामने स्पष्ट हो जाता ही है।

इसी भाव को स्थिर करने का दिल्ली कांग्रेस ने बड़ा यत्न किया. सब की इच्छा यह थी कि किसी प्रकार ऐसा हो सके कि हम एक हो जायें, निर्णय हो जाय. इस लिये जहां निर्णय न होता वहां एक कमेटी बिठा कर कर दिया जाता कि निर्णय हो जाय. इसी लिये इस बार सब मिला कर ८-९ कमेटियां नियुक्त की गईं। इन कमेटियों के अलग अलग खर्चों का प्रबन्ध कांग्रेस को ही करना होगा। फिर भी कमेटियों के फ़ैसले तक यह न समझिये कांग्रेस का निर्णय हो गया. अभी बहुत बाकी है। इन सब ह[illegible] से लेकर जाओ कांग्रेस विशेष महत्वपूर्ण होगी। वास्तविक रूप से देखा जा भविष्य कहीं पहला जावेगा. तब तक निर्वाचन भी हो चुकेगा. उस के बाद ही शायद कांग्रेस कोई कार्यक्रम निश्चित कर सके। ये तो [illegible] लड़ते ही बीते, ईश्वर अब भी नेताओं को सुबुद्धि

(पृष्ठ ९४ से आगे)

दोनों के बीच में रस्सा लम्बा रखा गया. अन्त के अब तक इस प्रतिकार रस्सा खींच का आकर्षण प्रारम्भ हुआ. यह भी किये, सीटी बजी और दोनों दलों ने समुद्र मन्थन की क्रिया प्रारम्भ की। ज़ोर से, चलो, ले जाओ, दबा कर इत्यादि शब्दों से रस्सा खींचने वाले विद्यार्थियों को उत्साह दिलाया जा रहा था. यह लो खींचे, उपाध्याय दल खींच ले गया - पर नहीं - ले गया - नहीं नहीं देखिये दोनों - वह देखिये गया, गया!! गया!!! - नहीं टूट गया. दो तीन गज़ उपाध्याय दल की ओर आ कर रस्सा बीच ही में टूट गया और उधर इधर एक इञ्च भर भी न हिल सका। सीटी बजी रस्सा छोड़ दिया गया. कि दोनों दल बराबर समझे गये जय माल किसी के गले में भी न पड़ी।

अब पार्टी परिवर्तन कर बड़ी फिर प्रारम्भ हुआ. फिर सीटी बजी और रस्सा खींचना शुरू हुआ। उपाध्याय दल फिर खींच ले गया. पर ४-५ गज़ जाने के बाद फिर रस्सा टूट गया और अन्त तक टूटा रहा. अन्त में समाप्ति की सीटी बजी उपाध्याय दल विजयी समझा गया.

अब छोटे ब्रह्मचारियों की खेलें प्रारम्भ हुईं। सब से पहिले 'लड्डू दौड़' हुई। एक

लडू-दौड़

रस्सी में लड्डू लटका दिये गये उन्हें हाथ के मुंह से पकड़ना था. हाथ बांध दिये जाते। कई एक बालमात्र बड़े धूम धूम कर का कर थक गये किये गये। यह दृश्य बड़ा दर्शनीय थी। किसी के सिर को लड्डू छू जाता. किसी के

चतुर्थ दिन १९ अक्तूबर तथा

३ य दिन का शेष

१८ अक्तूबर अपराह्न का खेल

आज मध्याह्न को फिर कल का शेष बचा हुआ गेंद बल्ले का सम्मुख प्रारम्भ हुआ। जीत हार का निश्चय तो पहिले ही हो चुका था. ब्र. दत्तात्रेय के दल की लगभग ३४ दौड़ें पहिले ही हो चुकी थीं। अब भी केवल उसने खेलकर शेष खेल पूरी करनी थी. अतएव यह खेल बहुत मनोरञ्जक न होगी. अतएव चलिये पाठक इसे देखकर क्या करेंगे? चलिये थोड़ी देर बैठकर प्रातः काल की लड्डू विजय के सम्बन्ध में बातचीत और आलोचनायें करें और सुनें। यह देखिये यहां भी यही बातें हो रही हैं।

एक -: भाई, प्रातः काल की लड्डू विजय थी तो अच्छी पर दर्शकों के पल्ले कुछ न पड़ा.

दूसरा —: स्कीम तो अच्छी सोची गई थी, पर वह क्रियात्मक न थी.

तीसरा -: अरे यार कुछ भी मज़ा नहीं आया. क्या रेत में गढ़ वढ़ भी हुई - झगड़े भी गये - (झगड़ों के चिन्ह दिखाकर) ये देखो न, क्या हालत हो गई है।

एक — अरे, भाई, स्वयं सेवकों का कुछ प्रबन्ध था. वह तो स्वयं सेवकों की खेल मालूम होती थी। जब चाहते लड़वा देते, जब चाहते कैदी पकड़वा देते जब चाहते छुड़वा देते। स्वयं सेवकों की चहल पहल के सिवा और था ही क्या?

चौथा — (दूर ही खड़े हुवे) हमें तो अच्छी लगी है;

एक — दर्शक बने थे तभी न? खेल में होते तो पता लगता. मोटे धूप के शरीर तपगया फिर हम तो कुछ कर ही न सकते थे. नियम ही ऐसे बना दिये थे कि रावण दल की हार ही हो, जो जीते वह राम दल, ओफ्फ़.

चौथा - अजी तो कहते थे दर्शकों के कुछ पल्ले ही न पड़ा.

पांचवां - भाई, हमें सब से अच्छी तो भोजन की लड़ाई लगी. (ओह हो, सेठजी) वामदेव जी ने तो खूब ही चालाकी की. खूब धोखा दिया. (हाथ ऊपर उठाकर) हाथ यों ज्यों किये रोटी छिपे जा रहे थे. सत्यकाम जी पीछे भागे, पर सब खाली निकला.

तीसरा — भाई, राम दल वाले तो अपना भोजन बहुत ऊपर से लेगये थे. वास्तव में उन्हें चलते हुवे किसी ने देखा नहीं। मैं ने उस जगह आप जाकर देखा है कि वहां से चल कर यहां (आनन्द वाटिका के ऊपर) कभी नहीं लगाया(?) सकता.

ये बातें हो ही रही थीं कि क्रिकेट समाप्त होगई. बातों में पता भी न लगा कि क्या होगया. ख़ैर, जानने की कुछ खास ज़रूरत भी नहीं।

रस्सा

अब छोटे ब्रह्मचारियों के रस्से का खेल प्रारम्भ हुआ। एक ओर प्रथम तीन श्रेणियां हैं और एक ओर अकेली चतुर्थ श्रेणी। रस्सा पकड़ लिया गया - सीटी बजी - "चलो चलो खींच ले जाओ, डटे रहो, रस्सा रखाओ, मत जाने दो" आदि का शोर गूंज उठा. अन्त में चतुर्थ श्रेणी अपनी ओर रस्सा खींच कर ले गई। फिर दुबारा इन्हीं ~~श्रेणियों~~ ने रस्सा पकड़ लिया. सीटी बजी, छोटे छोटे ब्रह्मचारी इस अवसर के समान विशाल रस्से को खींच ले जाने का यत्न करते. अन्त में तृतीय श्रेणी का दल विजयी हुआ। एक बार फिर खेल हुई इस बार भी चतुर्थ श्रेणी ही विजय रहा(?)।

१९२२.

वैदिक महाविद्यालय की हस्तलिखित है।

वर्ष - ६ | संपादक - सर्वमित्र | अंक १

अर्चना -

द्वार खड़ा हूं तेरे -
अंधा हूं आंखों से, लंगड़ा हूं पैरों से
गूंगा हूं वाणी से हाथ कटे हैं मेरे -
कैसे देखूं तेरा मन्दिर, सब जग में जो अतिशय सुन्दर
कैसे पहुंचूं उसके अन्दर, तुझे मिलाऊं देव किसी!
द्वार न तेरा खोल सकूंगा, गीत न तेरे बोल सकूंगा,
आंख की पलकें खोल न ली हैं, इस बिन कैसे बोल सकूंगा

हाथ नहीं हैं - कुछ नहीं लाया, लाया हूं बस अपनी काया
लेना हो तो सब ले ले, देना हो तो कुछ ही दे दे।
अंधा लंगड़ा जैसा हूं मैं खड़ा रहूंगा जीवन भर मैं
दया आज हो द्वार खोल दे दया आज हो नाथ लगा दे
खड़ा रहूंगा कुटिया में, नाथ आंखें तेरी की
दर्शन होंगे तब तो तेरे नाथ खुलेंगे आंखें मेरे।

कर्तव्य की परिपाटी :—

आज से दीपावलि का पवित्र त्यौहार प्रारम्भ होता है। स्मरण रखिए इस त्यौहार के साथ महाराज रामचन्द्र, स्वामी दयानन्द और स्वामी रामतीर्थ आदि महापुरुषों की स्मृति चिर काल से जुड़ी हुई है। सब से बढ़कर प्राचीन भारतीय गौरव - जिसका कि यह त्यौहार चिन्ह मात्र है - इस समारोह से कभी किसी के लिए पृथक् नहीं हो सकता। इस के महत्व को समझते हुए 'विजय-वैजयन्ती' के पाठक इस त्यौहार के अवसर पर अधिक से अधिक अपना कर्तव्य निबाहेंगे; परिपाटी भी यही है।

विजय - वैजयन्ती

बलि-वेदी.

ये प्रचण्ड रिपु गर्जन करते आगे बढ़ते आते हैं,
लिये हाथ में बर्छी भाला चमचम करते आते हैं।
देख इन्हें मत घबड़ा बेटा! उठ हो सज्जित शस्त्रों से,
रण में जाकर धूम मचा दे अपने पैने अस्त्रों से॥

(२)

दूध पिया क्षत्राणी का अब सफल बना कर दिखलाना,
बिना किये संहार शत्रु का रण में पीठ न दिखलाना।
एक एक की बलिवेदी पर भेंट चढ़ाकर घर आना,
नहीं तो अपना शीश भेंट कर इसे तृप्त करते जाना॥

(३)

जा उठ बेटा! समराङ्गण में रण-चण्डी तुझे बुलाती है,
वारुण, दुन्दुभी तेरी उज्ज्वल यशोगान को गाती है।
शस्त्रों की झंकार मधुर, रिपु दल को धड़काती है,
सब विस्मित हो देखें तुझको आश्चर्य मन भरती हैं॥

(४)

केसरिया बाना धारण कर केसरि बन दिखला देना,
अरि-मुण्डों की माल पिन्हाकर बलिवेदी सजा देना।
खेल नहीं लड़ना प्रिय! तुमसे युद्ध आज दिखला देना,
निज जननी को बंधमुक्त कर काला मुख उज्ज्वल करना॥

सं॰

कायर.

कायर कहिले मौत से भी अनेकों बार।
चखें वीरवर मौत का स्वाद एक ही बार॥

हैरानी इससे बड़ी मुझे न होय प्रतीत,
मौत सामने देखकर नर होवे भयभीत॥

क्या डरना तब मौत से जब है निश्चित अन्त।
आनी है आ जायगी का जायेगी अन्त॥

(Shakespeare की ~~एक~~ कविता का अनुवाद)

'क्ष'

जागो!!!

तुम जागो भारतवासी थारी माता खूब लूटे हैं

यूरोप में छिड़ि लड़ाई, तुम बन २ गए सिपाही।
तुम उनकी करी सहाई, थारी ग्यारह में नाड़ कटे हैं॥

तुम्हें इनाम ऐसी दीन्ही, थारी वर्दी तक भी छीनी।
थारी सेती ऐसी कीन्ही - सुन २ हिया फटे हैं॥

जलियाँ वाले बाग में भाई, डायर ने गोली चलाई,
खूनों की नदी बहाई, तोपों पर तोप छुटे हैं॥

तुम अभी सुज जाओ, स्वदेशी माल धारो।
विदेशी अग्नि में डारो अंग्रेजी अपने धर्म फेंकटे हैं॥

(संकलित)

विजय वैजयन्ती

९ नवम्बर १९२८.

घटना चक्र में —

आज पुरानी परिपाटी के अनुसार, दीपावली के अवसर पर हमारे पाठक नवीन उत्साह और जोश के साथ इस जातीय उत्सव को मनाने के लिए उपस्थित हैं। वे नवयुवक हैं। उन में नई उमंगें हैं, नया जोश है और नई आशाएं हैं। नवयुवकों का हृदय अपने जातीय उत्सवों को देखकर नई भावना से उल्लासित हो उठता है। आज हम एक वर्ष के बाद उसी उत्साह से, उसी उल्लास से और उसी उमंग से उनका स्वागत करते हैं।

× × × × × ×

नए खिलाड़ी इस रंगमञ्च पर अपना पार्ट खेलने के लिए उतरे हैं। इस समय गत वर्ष का सिंहावलोकन करना अनुचित न होगा। इससे लाभ की ही आशा करनी चाहिए।

× × × × ×

जिस समय 'विजय वैजयन्ती' गुरुकुलीय रंगमंच पर अपनी छवि दिखाकर अवतरित हुई थी, उसी समय से एक नई वस्तु की आशंका हो रही थी। भारत परतन्त्र है। इस में विजययात्रा नहीं होती। हां विदेशियों की चरणधूलि से इसका मानमर्दन अवश्य ही किया जाता है। हमें स्वराज्य के लिए योग्य बनाने का ठेका ईश्वर की ओर से ब्रिटेन को मिला है। भारत ब्रिटेन की थाती है। वह इसे धीरे धीरे स्वराज्य के योग्य बना रहा है। हमारी परीक्षा ली जाती है। चाहे हम पास हों या फेल - उन्नति या अवनति का अधिकार ब्रिटिश सरकार पर है। १९१९ में हमें सुधार मिले थे। १९२० में कमीशन के आने का शोर मचा हुआ था। जिन लोगों ने सरकार की खिदमत की थी, उसके आगे सिर झुकाया था, प्रजा को कष्ट पहुंचाने वाले कानून बनाकर ~~प्रजा~~ सरकारपरस्ती का परिचय दिया था, आत्मसम्मान खो बैठे थे वे आशा लगाए बैठे थे कि शायद गौवरमेंट भक्तवत्सल होगी, वह अपनी खिदमत का बदला देगी, उन्हें कमीशन का सदस्य बनने की आशा थी। पर सब बेकार। ब्रिटिश सरकार ने सात गोरों का कमीशन नियुक्त कर दिया। लिबरलों में निराशा छा गई।

अपनी सेवा का पुरस्कार न पाकर वे लोग बेतरह बिगड़ उठे। ~~साथ~~ बहुत कोशिश की गई, पर कुछ बन न पड़ा। ~~कांग्रेसवालों~~ उन्हें समझाया गया, पुचकारा गया। वे तो रूठ चुके थे - बुरी तरह रूठे थे। किसी तरह मनाए न मानते थे। कांग्रेसवाले तो आत्मनिर्णय के सिद्धान्त पर अटल थे। वे किसी भी कमीशन को - जो इंग्लैण्ड द्वारा नियुक्त किया गया हो, चाहे उसमें सारे ही भारतीय क्यों न हों - मानने के लिए तय्यार न थे। वायसराय ने नेताओं को बुलाया - कोई हल ढूंढने का प्रयत्न होने लगा। मामला बहुत टेढ़ा था। कुछ बन न सका। ~~कमीशन ने घोषणा कर दी कि~~। सरकार ने सोचा था कि भारतवासी आपस में लड़ते हैं। इनकी फूट से अपना काम बनाया जा सकेगा। पर लेने के देने पड़ गए। हिन्दू और मुस्लिम झगड़े बन्द हो गए। सर्वत्र एकता का नारा दीखने लगा। नौकरशाही [illegible] मच गया। सब [illegible] धर्मवादी और राष्ट्रवादी अपनी भारतमाता के कलंक को दूर करने के लिए एक झंडे के नीचे आ गए।

× × × ×

इस समय राष्ट्रिय महासभा (कांग्रेस) के सभापति श्री श्री. निवास आयंगर जी ने अपने कार्यकाल में कुछ कार दिखलाना चाहते थे। उन्होंने एकता के लिए शाश्वत प्रयत्न किए। एक एकता-परिषद् के बाद दूसरी एकता परिषद् होती थी। तांता बंधा हुआ था। हिन्दू मुस्लिम झगड़ों से दूषित हुए हुए वायुमण्डल में भी एक आशा का प्रदीप जल रहा था। वह विघ्नों की परवाह न करता हुआ आगे बढ़ा जा रहा था। श्री आयंगर सफल हुए। बम्बई में ऐक्य पास हुए। सब दलवालों ने अपने प्रान्तीय झगड़ों की समस्या को हल किया। यदि गोरा कमीशन भारत की जांच पड़ताल के लिए नियुक्त न होता तो दूषित वायुमण्डल में से आशा के प्रदीप के संदर्शन की सम्भावना असम्भव थी। ब्रिटिश सरकार ने सोचा कुछ और था, हो कुछ और ही गया। "मेरे मन कुछ और है विधाता के कछु और" वाली कहावत चरितार्थ हुई।

× × × × ×

भारतवर्ष की तीसरी महत्वपूर्ण घटना सर्वदल सम्मेलन है। गौहाटी कांग्रेस में यह प्रस्ताव पास हुआ था कि भारत का एक शासन विधान बनाना चाहिए। मद्रास कांग्रेस ने कांग्रेस की कार्यकारिणी को यह अधिकार दिया था कि वह भारत के विभिन्न दलों को सम्मिलित कर शासनविधान

विजय वैजयन्ती

बनाई। सब प्रमुख दलों को बुलाया गया। सर्वदलसम्मेलन के दिल्ली, बम्बई और लखनऊ में अधिवेशन होते रहे। दिल्ली में भारतीय शासनविधान का आदर्श उत्तरदायित्वपूर्ण स्वतन्त्रता को मान लिया गया। विभिन्न दलों की सन्तुष्टि के लिए इस गोलमाल शब्द का प्रयोग किया गया था। बम्बई में शासनविधान के आधारभूतसिद्धान्तों को निश्चित करने के लिए एक कमेटी बनाई गई। पं. मोतीलाल नेहरू इसके अध्यक्ष थे। इसने अपनी रिपोर्ट तय्यार की। लखनऊ में सर्वदलसम्मेलन किया गया। यह रिपोर्ट पेश की गई। लखनऊ भारत के शासनविधानसम्बन्धी इतिहास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। १९१६ में इसी स्थान पर मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने मिलकर पृथक् निर्वाचन को स्वीकृत किया था। इस ऐतिहासिक स्थान में विचित्र चमत्कार था। सब दलों वाले अपनी विजय के लिए आए थे। पर वायुमण्डल शान्त था। प्रतिनिधियों के दिमाग भी शान्त होगए। खुले दिल से विचार हुआ। सिन्ध, सीमाप्रान्त, बंगाल और पंजाब के झगड़े शान्त होगए। राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा होगई।

× × × × × ×

चौथी महत्वपूर्ण घटना यह है कि मद्रास कांग्रेस ने पूर्ण-स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास कर दिया। अब तक कांग्रेस का ध्येय था कि यदि सम्भव हो सके तो ब्रिटिश साम्राज्य में रहते हुए स्वराज्य प्राप्त करो नहीं तो उससे सम्बन्ध तोड़ देना। पर मद्रास कांग्रेस ने स्पष्ट शब्दों में इसको घोषित कर दिया कि राष्ट्रीय भारत का दावा पूर्णस्वतन्त्रता का है। इससे पहले भी पूर्णस्वतन्त्रता के प्रस्ताव कांग्रेस के सम्मुख पेश किए जाते रहे। युवक भावना ब्रिटिश सम्बन्ध को सहन न कर सकती थी। पर बूढ़ों के प्रयत्न से प्रस्ताव फेल होजाता था। पर पुरानी पद्धतियों को नवीन पद्धतियों के आगे झुकना पड़ा। युवक भावना और मूर्तस्वरूप का भारत में अवतार हुआ। पं. जवाहरलाल नेहरू ने पूर्णस्वतन्त्रता की दुन्दुभि बजा दी। राष्ट्र ने इसका स्वागत किया। प्राचीनता को नवीनता के आगे सिर झुकाना पड़ा। सर्वदलसम्मेलन के ध्येय को औपनिवेशिक स्वतन्त्रता समझा जाने लगा था कि इससे कांग्रेस के ध्येय को धक्का लगेगा, पर कांग्रेस की कार्य-समिति ने स्पष्ट तौर पर घोषित कर दिया है कि कांग्रेस का ध्येय पूर्णस्वतन्त्रता है। इस शब्द का कहीं दुरुपयोग न होने लग जाय, इसलिए इसका भाष्य भी कर दिया गया है। भाष्य यह है कि ब्रिटिश सम्बन्ध छूटे बिना भारत स्वतन्त्र हो ही नहीं सकता। इस ध्येय की पवित्रता को बनाए रखने के लिए स्वतन्त्रता

संघों की स्थापना होगई थी इनका मुख्य काम भारत को पूर्णस्वतन्त्रता के लिए तय्यार करना था। युवकगण अपने दुश्मन के साथ किसी प्रकार के सम्बन्ध को सह नहीं सकते। वे इस सन्देश बहुत उत्सुकता से ग्रहण कर रहे थे

× × × ×

अब तक हमने भारतवर्ष के ~~भा~~ गतवर्ष का सिंहावलोकन किया था भारत के बाहर भी दुनिया है। बिना अन्तर्राष्ट्रीय हुए कोई व्यक्ति राष्ट्रीय नहीं हो सकता। इसलिए हमें दूसरे देशों पर भी नजर डाल लेनी चाहिए।

× × × × ×

हमारे पास पड़ोस में ही अफगानिस्तान था गतवर्ष इसके बादशाह अमीर अमानुल्ला खां विदेशों की यात्रा करने निकले थे वे महत्वाकांक्षी हैं। अपने राष्ट्र को दुनिया के बड़े राष्ट्रों में लाना चाहते हैं। उन्होंने इटली, जर्मनी और फ्रांस से सन्धियां की थीं। अब उन देशों में अपने देश के नवयुवकों को शिक्षित करने के लिए भेज रहे थे। टर्की और अफगानिस्तान में विशेष सम्बन्ध था टर्की से ~~[illegible]~~ सैनिक शिक्षा के लिए कई अफसर अफगानिस्तान में आ रहे थे। वे अफगान सेना को टर्की के आदर्श पर संगठित करेंगे। इस लिखने का है कि अफगानिस्तान महत्वाकांक्षी है। वह अपने देश की उन्नति के लिए [illegible] चाहता था वह कहां तक [illegible] हो सकता था उसपर इंग्लैंड की नजर पड़ी हुई थी। पर अंग्रेज भी सीधे सादे जीव नहीं थे। जब अमीर इंग्लैण्ड गया था, वहां उसे अंगरेजों ने अपना सैनिक बल दिखलाया था। सुना जाता है कि उससे यहां तक कह दिया गया था कि, यदि तुम कराची पर दृष्टि लगाओगे तो तुम्हारा भला न होगा। और अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए पूर्ण तय्यारी कर रहा था, हवाईजहाजों के अड्डे बन रहे थे रूसी अफसर शिक्षा देते थे अब अंगरेजों के लिए अफगानिस्तान अधिक भयंकर चीज थी इसलिए वे भी सीमाप्रान्त ~~[illegible]~~ पर जोर शोर से तय्यारी कर रहे थे अमीर भी पूर्णतया सतर्क था वह अपने देश को यूरोपीय रंग में रंग रहा था उसने धर्मान्धों का खातमा कर दिया था उत्तरदायित्व पूर्ण शासन स्थापित कर दिया था पर्दा उड़ा दिया था यूरोपीय वेशभूषा को अपना लिया था आज अफगानिस्तान बड़े वेग से ~~[illegible]~~ उन्नति कर रहा था

× × × × ×

हमारा दूसरा पड़ौसी देश चीन था अनन्त काल तक पराधीनता की बेड़ी में जकड़ा जा चुका था अब वह उस बन्धन को सहन नहीं कर सका। सोता हुआ अजगर जाग उठा था हनुमान को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं था

परन्तु जब इसे उसकी शक्ति का परिचय भी मालूम तो वह असाधारण कार्य कर बैठा। चीन के पास अनन्त शक्ति थी। जनबल की कमी नहीं थी। उसमें रूह फूंक दी गई। वह जाग उठा। उसने इन बन्धनों को तोड़ दिया। अब उसे कोई देश शासित नहीं रख सकता। वह बंधी हुई रस्सी है जिसमें हाथी बांधा जा सकता था उसका अपना राज्य और राष्ट्रपति च्यांग काई शेक थीं हमें पूर्ण विश्वास है कि भारत का यह पुराना साथी एशिया ही संसार के बड़े राष्ट्रों में अपना नाम करेगा

× × × ×

अब हम यूरोप की ओर आते हैं। यहां दिनरात युद्ध की आशंका रहती थी इंग्लैण्ड और फ्रांस तथा इटली मुख्य देश थे तीनों साम्राज्यवादी थे सब पर अपना अधिकार चलाना चाहते थे। शान्ति की बातें करते हैं पर शान्ति असल कोसों दूर थी विश्व-शान्ति [illegible] परिषद् करते हैं पर उनमें सदा यही सोचते हैं कि किस प्रकार दूसरे देश को हानि [illegible] स्वामी बन जाय। इंग्लैण्ड और फ्रांस ने एक चाल चली। इंग्लैण्ड को समुद्री शक्ति बढ़ाने की इजाजत मिल गई फ्रांस को स्थलीय शक्ति बढ़ाने के लिए स्वतन्त्र हो गया। पर बनती हुई बात बिगड़ गई। अमेरिका ने ठुकरा दी। फ्रांस सैनिक शक्ति बढ़ा रहा था तो समुद्री विभाग की रक्षा के लिए उसने जहाजों का तांता बनाने का उपक्रम कर लिया था इसमें एक अरब खर्च होगा। इंग्लैण्ड भी कम नहीं था उसने प्रशान्त महासागर पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए सिंगापुर में नौसैनिक अड्डा बना लिया था। युद्ध के समय वह जिसे चाहे उसे ही रास्ता दे सकता था। इटली बहुत अधिक महत्वाकांक्षी था मुसोलिनी जब बोलता है तो आशंका होती है कि ज्वाला मुखी फूट निकला। वह जब बोलता है साम्राज्य बढ़ाने का शंख बजाता था उसके देश की आबादी बढ़ रही थी इसके नाम पर वह नए नए प्रदेशों की मांग कर रहा था इसके साथ ही वह अबिसीनिया और [illegible] - त्रिकोण यो नहीं है - पर [illegible] युद्ध के नाम पर वह सारे इटली का शासन कर रहा था सारा इटली मुसोलिनी का गुलाम था उसके इशारा करने से इटली को बदल सकता था नाममात्र के राजा [illegible] सारे अधिकार [illegible] छीन लिए गए थे [illegible] भी निश्चित नहीं था

विजय वैजयन्ती

वह मुसोलिनी की नामवरी की हुई थी क्योंकि, अफ्रीका और भूमध्यसागर पर उसकी आंखें गड़ी हुई थीं वह भूमध्यसागर का स्वामी बनना चाहता था बहुत दिनों से इटली की महत्वाकांक्षा थी कि वह टैंजियर पर अपना अधिकार करे। पर उसकी सुनाई न होती थी। वह लगातार प्रयत्न करता रहा। इसका परिणाम यह हुआ है कि ब्रिटेन, फ्रांस और स्पेन के साथ इटली को भी टैंजियर के शासन को अधिकार मिल गया है यह मुसोलिनी की महान विजय थी

× × × ×

मध्य यूरोप बहुत अधिक बुरी अवस्था में थी आस्ट्रिया और हंगरी की अवस्था खराब थी उनके पास कोई बन्दरगाह नहीं थे व्यापार के अभाव से जीवन और व्यापार का स्रोत बन्द हो रहा था न रहा तो अवस्था बुरी होती थी ही। उसकी मुक्ति जर्मनी के साथ थी वह जर्मनी से मिलने के लिए छटपटा रहे थे दोनों की एक ही जातीयता थी पर सन्धियों में स्पष्ट तौर पर लिख दिया गया है कि आस्ट्रिया और जर्मनी कभी मिल नहीं सकते। आस्ट्रिया की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी इससे यूरोप को भी हानि थी हंगरी में अशान्ति थी वहां राज्य पलटे का डर बना रहता था कोई न कोई प्रिटेण्डर निकल आता है

पोलैण्ड सैनिक देश था फ्रांस और पोलैण्ड की सैनिक सन्धि थी यह रूस के आक्रमण से रक्षा करता था पोलैण्ड का शासक पिल्सुडस्की था वह स्वेच्छाचारी था और अपनी इच्छानुसार शासन करता था लिथुआनिया और पोलैण्ड में आए दिन झगड़े होते रहते हैं

× × × × ×

बाल्कन प्रायद्वीप की स्थिति तो और भी अधिक शोचनीय थी गत महायुद्ध का प्रादुर्भाव यहां से हुआ था। अब भी आशंका की जाती है कि यहीं से आग की चिनगारी निकलेगी जो सारे यूरोप को ही नहीं अपितु सारे संसार को व्याप्त कर लेगी। बाल्कन प्रायद्वीप में फ्रांस और इटली अपना प्रभुत्व जमाना चाहते थे फ्रांस का दोस्त जुगोस्लाविया था उसका कहना है कि बाल्कन बाल्कनवालों के लिए था यह उपकार की भावना नहीं थी इसमें स्वार्थ था जुगोस्लाविया चाहता है कि वह सारे बाल्कन में प्रभुत्व पैदा करले। इटली इसमें बाधक था उसने जुगोस्लाविया का फ्यूम नामक बन्दरगाह छीना हुआ था इससे वह इटली से डरता था अल्बानिया का राजा इटली की कृपा पर निर्भर था इसलिए सदा उसकी पार्टी करता इटली का प्रभुत्व जुगोस्लाविया को नहीं। वह इस बाल्कन के मामलों से इटली को निकाल कर ही स्थापित किया जा सकता था उसकी दृष्टि सलोनिका के

बन्दरगाह पर भी यह ग्रीस का था ग्रीस ने इटली से मैत्री की हुई थी ग्रीस का तुर्की से भी ठीक सम्बन्ध नहीं था टर्की और इटली की भी लगती थी इसलिए समान बुद्धि वाले ये राष्ट्र एक दूसरे के मित्र थे। ये राष्ट्र ग्रेट ब्रिटेन के प्रभाव को कम करना चाहते थे और उसके लिए सदा प्रयत्न करते थे।

× × × ×

अब हम रूस पर पहुंचते हैं उसमें भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। लेनिन का साथी ट्रोटस्की था। वह वर्तमान सरकार का विरोधी था। इसलिए उसे साइबेरिया की तरफ का हुक्म हो चुका है और वह उसका मज़ा भी लूट रहा है ट्रोटस्की स्वयं प्रजापति था वह उन सिद्धान्तों का वहां समावेश करना चाहता था पर रूसी जनता और सरकार इन भावों को पसन्द नहीं करती। रूसी जनता में क्रान्ति के भाव कूट कूट कर भरे हुए हैं। जब अमीर अफगानिस्तान रूस पहुंचे तो वहां की सरकार ने उनका स्वागत करने के लिए दो एक महल खाली कर दिए। मज़दूरों से कहा कि वे राजा का स्वागत करें। पर उन्होंने इस बात का सख्त विरोध किया। उनमें क्रान्ति का लाल खून अब भी लहरें मार रहा था सुना जाता है कि रूस में बड़ा भारी अकाल पड़ रहा था सरकार उसका यथा सम्भव प्रबन्ध कर रही थी थोड़े दिन पहले अफवाह उड़ी थी कि कालेसागर के समीप रूसी सेना एकत्र कर रही थी किसी युद्ध की आशंका से यह सब हो रहा था। यदि यह बात सत्य भी है तो भी हम इस बात पर विश्वास करने में असमर्थ हैं कि रूस का कोई साम्राज्य-वादी हेतु था वह अपनी रक्षा के नाम पर ही इन कठिन चालों को कर रहा था उसे सदा साम्राज्यवादी देशों का भय सताता रहता था

× × × ×

यूरोप पर दृष्टिपात करने के बाद हमारा ध्यान अमेरिका की ओर जाता है पहले अमेरिका शान्ति का दूत रहा है पर अब यह कल्पना का अनुमान हो उसने हेटी, निकारागुआ, दक्षिणी अमेरिका पर आर्थिक प्रभुत्व कर लिया है। यूरोप भी आर्थिक साम्राज्य का शिकार हो रहा है केलॉग पैक्ट अमेरिका के आर्थिक साम्राज्यवाद के इसके सिवाय अन्य कोई अर्थ नहीं रखता। इस समय अमेरिका में बड़े जोर से राष्ट्रपति का चुनाव हो रहा था उम्मीदवार सम्प

पर शिखर हों पर सफलता और शिष्टता निर्वाचन के अनन्तर होजाती थी दोनों ओर से गाली गलौच होता था हूवर के जीतने की सम्भावना थी [illegible] की दौड़ में हमें हम एक बात कह रहे हैं। शान्ति के साथ ही यह नौसेना बढ़ा रहा था कूलिज का कहना है कि निरस्त्रीकरण और राष्ट्रीय नीति और पर युद्ध की चिन्ता करने में कोई परस्पर सम्बन्ध नहीं था यह है मुंह में राम बगल में छुरी। तीन अरब डालर का प्रोग्राम नौसेना के लिए पास हुआ था।

× × × ×

दुनिया की सिंहावलोकन से ही काम नहीं निपटता। इस कुलभूमि पर भी सिंहावलोकन दृष्टि डालनी चाहिए। दिवाली के बाद से मासिक परीक्षाएं आरम्भ हुईं। विद्यार्थियों में इसके विरुद्ध आन्दोलन उठा। पर थोड़ी देर बाद शान्त होगया, असफल नहीं हुआ। आन्दोलनों का उद्देश्य जागृति पैदा करना होता था वह काम इससे सफल गया। ~~[illegible]~~ फिर आन्दोलन शुरू हुए। अब की बार जयपुरी आन्दोलनकर्ताओं के गले पड़ी विजयलक्ष्मी की वरमाला विद्यार्थियों के गले डाली। हम यहां किसी पक्ष की सच्चाई या बुराई पर विचार नहीं करते [illegible] स्वयं इतने विचारशील हैं कि वे

इस महत्व विषय का अध्ययन स्वयं कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त दूसरी महत्वपूर्ण घटना स्टाफ में परिवर्तन थी। पं. चन्द्रमणि जी कुल की ओर से [illegible] की सेवा में पधारे थे। आप वहां गुरुकुल की यशःपताका फहराएंगे। कार्यालयाध्यक्ष जी भी चले गए थे, पर फिर उन्होंने गुरुकुल में दर्शन दे दिए थे। इनके आने जाने के कारणों पर बहुत बहस हो सकती है पर न तो हमारे पास स्थान है और न ही हम उसे यहां स्थान देना चाहते थे। [illegible] प्रो. देवराज जी ने योग करने के लिए एक वर्ष का अज्ञातवास किया था। इन्होंने बहुत से पहले [illegible] थे। इनके जाने से वह अन्य कार्यचारियों में [illegible] थे। डा. की पदवृद्धि पर उन्हें हम धन्यवाद देते थे। तीसरी महत्वपूर्ण घटना नई कुलभूमि में कुल की आधारशिला स्थापना थी इसका श्रेय शाहपुराधीश नाहरसिंह जी को मिला था। हम इससे सर्वथा सहमत नहीं थे फिर यदि किसी आर्यसमाजी से ही आधारशिला रखवानी थी तो किसी समाज पर बलिदान करने वाले क्यों न रखवाई? क्या ऐसे व्यक्तियों का अभाव है? राजा महाराजाओं का आश्रय लेने से धर्म की पवित्रता नष्ट होजाती है। उसमें वह तेज, वह साहस नहीं रहती, जो उसके लिए आवश्यक

अद्भुत सम्मुख्य

अनन्य दल और उपाध्याय और+ स्नातक

में

दर्शनीय Foot ball का प्रशंसनीय सम्मुख्य.

देखें, किसको विजयश्री मिलती है.

आज सायंकाल $3\frac{3}{4}$ बजे अनन्य दल और उपाध्याय + स्नातकों में ~~क्रिकेट~~ Foot ball का match होगा. इस दर्शनीय सम्मुख्य के अभिनेता गण निम्न हैं।

अनन्यदल.
श्री रणजीत जी (मुखिया)
" केशवदेव जी
" चन्द्रकान्त जी
" विद्याधर जी
" विद्यानन्द जी
" धर्मकेतु जी
" दिलीप चन्द्र जी
" रामप्रसाद जी
श्री पूर्णचन्द्र जी १४२१
श्री सर्वजित जी
श्री शत्रुघ्न जी

उपाध्याय + स्नातक
श्री पं. विश्वनाथ जी.
श्री पं. कामेश्वर जी (मुखिया)
श्री पं. सत्यकेतु जी
श्री पं. जगन्नाथ जी
श्री. नन्दलाल जी
श्री पं. धीरेन्द्र शर्मा जी
श्री. धर्मदेव जी
श्री जीतसिंह जी
श्री दलजीत सिंह जी
श्री प्र. रामदयाल जी.
श्री पं. सत्यदेव जी.

कुल-समाचार

आज सायंकाल $3\frac{3}{4}$ बजे अनन्यदल और अध्यापक स्नातकों में Foot-ball का सामुख्य होगा।

छोटे ~~ब्रह्मचारी~~ ब्रह्मचारियों के कुल में उपस्थित होजाने के कारण कुल की शोभा दुगनी बढ़ गई है।

सुना जाता है कि '~~[illegible]~~' हमारे सहयोगी पत्रों की संख्या ~~[illegible]~~ बढ़ाने को आगामी '[illegible]' कल से ~~सं~~ प्रकाशित होना शुरू होगा।

निश्चित तौर पर पता लगा है कि श्री देवदत्त जी अपने अवकाश से लौट आए हैं।

१९२६.
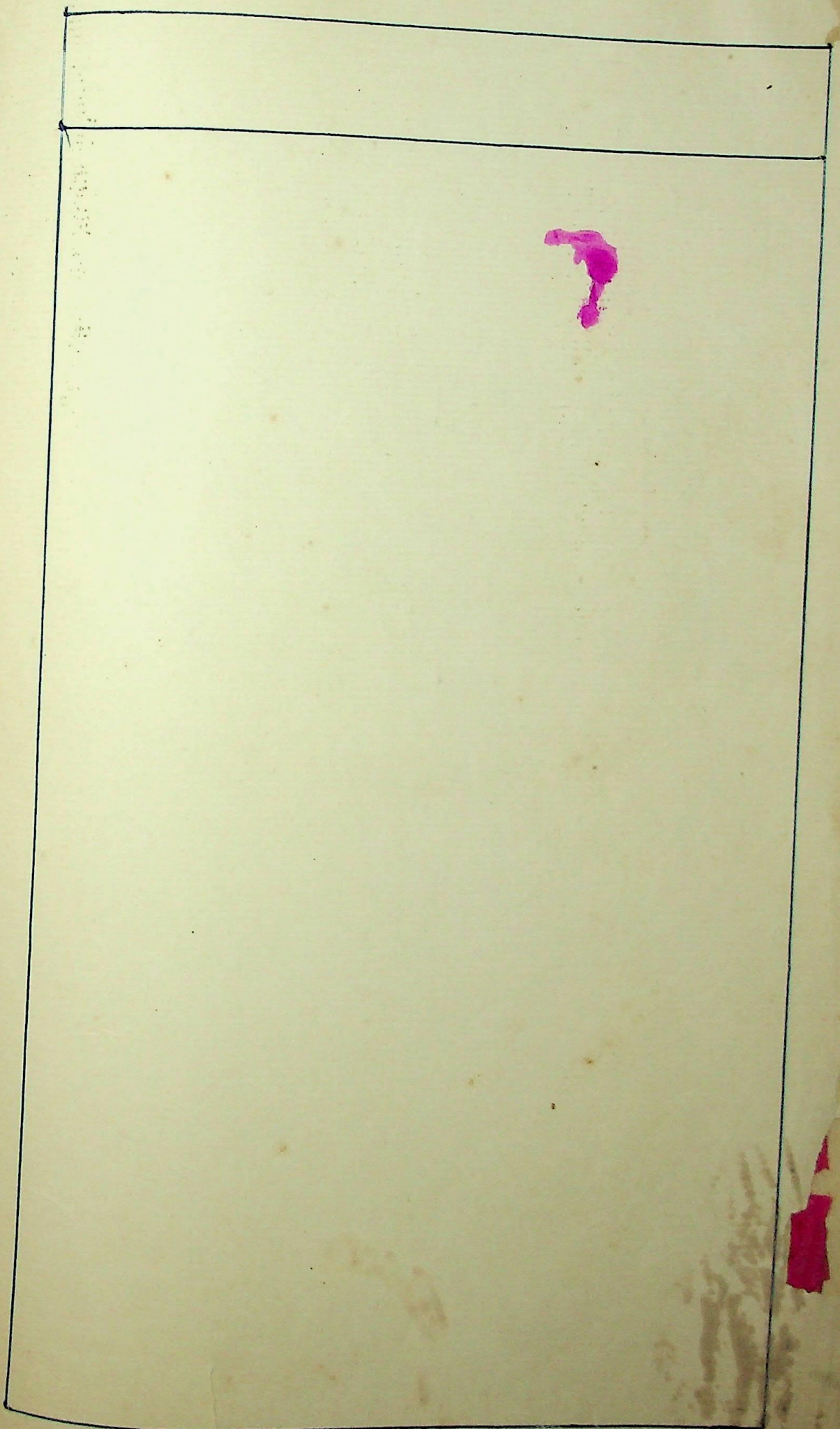
दैनिक

विजय-वैजयन्ती.

(४)

सप्तम वर्ष

विजय दुन्दुभि से गहरें दिशा,
गगन में फहरें जय की ध्वजा।
विजय-माल लिए अरचा करें,
विनय-गान करें निज मातु के॥

—:o:—
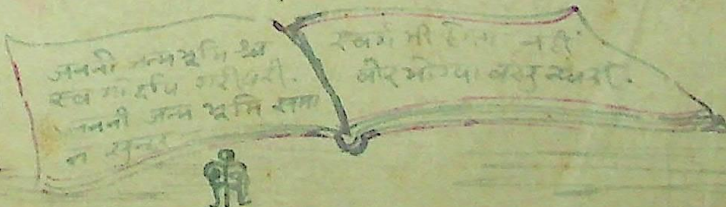
"वैजयन्ती मुद्रणालय के अन्दर
प्रबन्धकर्ता श्री ~~[illegible]~~ अवतार द्वारा
मुद्रित तथा प्रकाशित हुई.
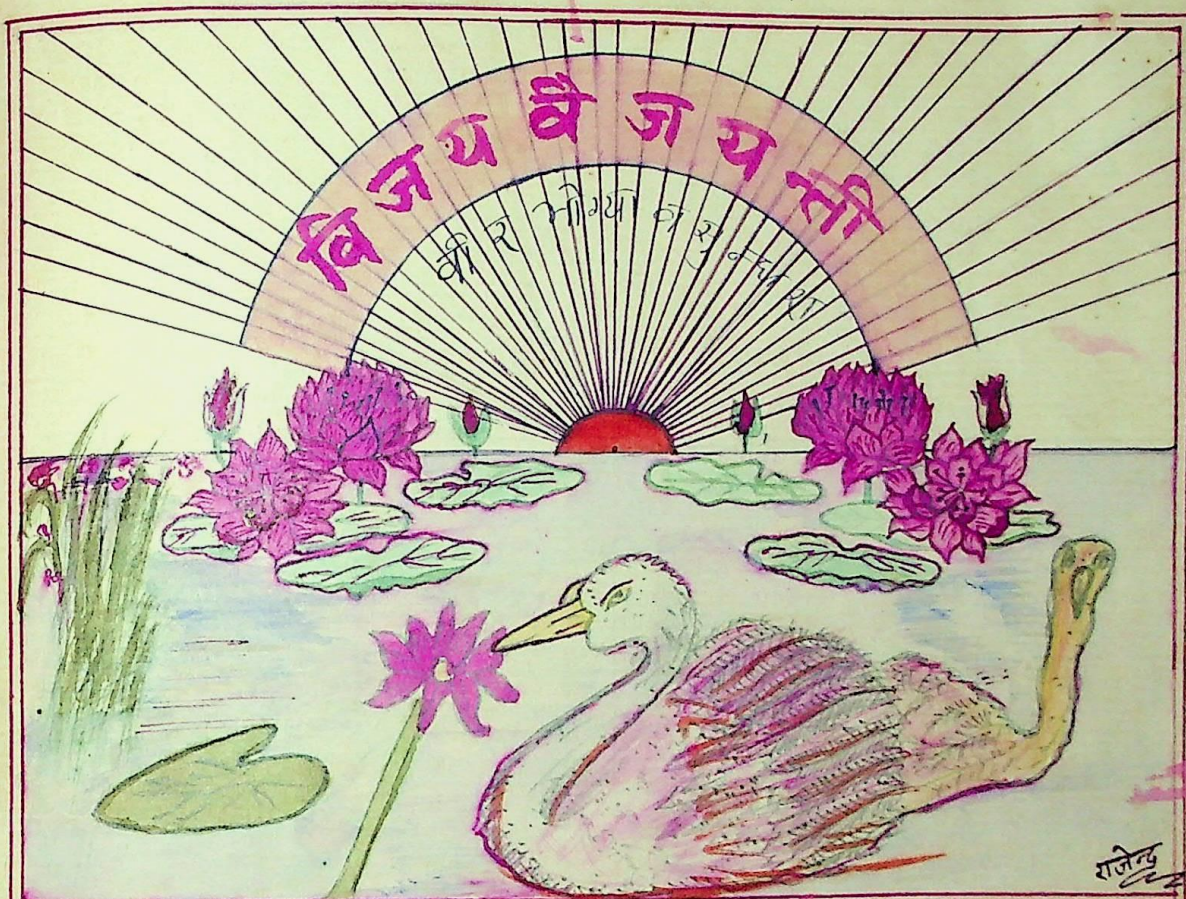
सप्तम वर्ष | प्रधान संपादक - श्री नरेन्द्र नाथ
संपादक - श्री शंकर देव. | अंक प्रथम.

सामने सिर झुका देता हो। जर्मनी की तरफ साम्राज्यवादियों और श्रमजीवियों दोनों की आँखें लगी हुई थी। दोनों ने अपने हाथ आगे बढ़ाये जर्मनी ने किसी को नाखुश नहीं किया। एक ओर दिल दिया है तो दूसरी ओर अपने आपको। श्री चेम्बरलेन का लोकार्नो में सेया गया बच्चा फल फूल रहा है। जेनेवा में राष्ट्र संघ की प्रमुख मंडली में प्रवेश का समाचार सुनकर स्पेन, ब्राजिल, पोलेण्ड 'अब्रह्मण्यम्' 'अब्रह्मण्यम्' चिल्ला उठे और उससे अलग भी होगये। श्री चैम्बरलेन और श्री ब्रियांद की खुशामदें भी उन को न मना सकीं। इधर जर्मनि भी मचल गया। राष्ट्र संघ ने जर्मनी को अपने शर्तों से वरण करना स्वीकार किया क्यों का उत्तर भावी युद्ध होगा

× × × ×

जर्मनी के राष्ट्र संघ में प्रवेश ने नई २ समस्याओं को जन्म दिया है

इंगलैण्ड के श्रमजीवियों और पूंजीपतियों में तीस सप्ताह से युद्ध ठना हुआ है। साम्राज्यवादी गवर्नमेंट की सहायता के बलपर पूंजीपति झुकने का नाम नहीं ले रहे। सहानुभूति और मनुष्यता को तलाक दे दिया है। मजदूर भी अपनी संगठन शक्ति, दृढ़ निश्चय और संसार की सहानुभूति का आश्रय पाकर पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों की सम्मिलित शक्ति के सामने घुटने टेकने को तय्यार नहीं। भूखे रहने को तय्यार है, अपने बच्चे को बिलखता देखना पसन्द है, पर अपने सिद्धान्त को छोड़ने के लिये तैयार नहीं अपना राष्ट्रीय दावा - जिसकी सच्चाई में उन्हें पूर्ण विश्वास है - मनवा कर छोड़ेंगे या मर मिटेंगे। ब्रिटेन का कोयले और लोहे का व्यवसाय एक प्रकार से बंद है। कपड़े की मिलें भी पूरे घंटे काम नहीं कर रही हैं। ब्रिटेन का आपार

३ नवम्बर १६२६ बुधवार.

रंगभूमि में

आज विजय-वैजयन्ती के सप्तम वर्ष की पुण्य तिथि की प्रथम गांठ है। इसके साथ इसका बचपन भी समाप्त हो रहा है इस अन्तर में विजय-वैजयन्ती सदा अपनी वैजयन्ती को ऊंचा-ही ऊंचा करती गई

नूतन और पुरातन की, ज्ञान और रूढ़ि की निर्बल और सबल की, हमेशा से युद्ध चला आ रहा है और जब तक यह दुनिया है तब तक यह संघर्ष जारी रहेगा यूरोपियन महाभारत की क्षणिक संधि के कारण भूत यूरोपियन महा संग्राम सागर से मथ कर निकाली श्री

विल्सन के सोलह रत्नों की माला वर्सेलीज़ में ज़मीन में गाड़ दी गई। रत्न माला की आभा संसार के दूरस्थ कोणों में पहुंच चुकी थी इस कारण सारा संसार एकाएक आँखें मलते मलते उठ बैठा परन्तु प्रभा, वह प्रकाश क्षणिक था, सब अंधेरे में [illegible]

और रियासतों के स्वातंत्र्यप्रेम के आगे कई बार झुकना पड़ा है। इस पराजय में यही एक गौरव की बात है, यही उत्साह-प्रद स्थली है। परतंत्रता की चक्की में पिसने वालों के लिये यही एक आशा का स्थान है।

× × × ×

राष्ट्र संघ की शक्ति की परीक्षा कई बार हो चुकी है। हर साल कोई न कोई मौका आ जाता है जब संसार की कोई न कोई शक्ति राष्ट्र संघ की शक्ति आजमाने की कोशिश करती है। राष्ट्र संघ की हालत उस आदमी की तरह है जिसकी कई स्त्रियां हों और सबको खुश करने का यत्न किया करता हो और वह आदमी अन्तःपुर के षड़यंत्रों का मुकाबला न कर उनके सामने सिर झुका देता हो। जर्मनी की तरफ साम्राज्य वादियों और श्रमजीवियों दोनों की आँखें लगी हुई थी। दोनों ने अपने हाथ आगे बढ़ाये जर्मनी ने किसी को नाखुश नहीं किया। एक ओर दिल दिया है तो दूसरी ओर अपने आपको। श्री चेम्बरलेन का लार्कोनो में बोया गया बच्चा फल फूल रहा है। जेनेवा में राष्ट्र संघ की प्रमुमंडली में प्रवेश का समाचार सुनकर स्पेन, ब्राजिल, पोलेण्ड 'अब्रह्मण्यम्' 'अब्रह्मण्यम्' चिल्ला उठे और उससे अलग भी हो गये। श्री चैम्बरलेन और श्री ब्रियांद की खुशामदें भी उन को न मना सकीं। इधर जर्मनि भी मचल गया। राष्ट्र संघ ने जर्मनी को अपने पालियों से वरण करना स्वीकार किया क्यों का उत्तर भावी युद्ध होगा

× × × ×

जर्मनी के राष्ट्र संघ में प्रवेश ने नई २ समस्याओं को जन्म दिया है अब जर्मनी भी दूसरे देशों का शासनादेश मांगने लग गया है। जर्मनी अपने पुराने गौरव पर पहुंचने के लिये व्याकुल है। श्री चैम्बरलेन और श्री मुसोलिनी का समुद्र में सम्मिलन और इटली ब्रटेन की संधियां, फ्रांस जर्मनी के बीच मैत्री की स्थापना, रूस से फ्रांस की गलबांही, ये सबके सब अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में नई हेर फेर करने वाले हैं। रूस के श्रमजीवि प्रतिनिधि का ब्रटेन की पवित्र भूमि पर पांव न धरने देना ये सब एक घटना चक्र के ही अंग हैं। फ्रांस का ब्रटेन का स्थान स्थान पर नीचा दिखाना, रहस्य से खाली नहीं है।

× × × × ×

इंग्लैण्ड के श्रमजीवियों और पूंजीपतियों में तीस सप्ताह से युद्ध छिड़ा हुआ है। साम्राज्य वादी गवर्नमेंट की सहायता के बल पर पूंजी पति झुकने का नाम नहीं ले रहे। सहानुभूति और मनुष्यता को तलाक दे दिया है। मजदूर भी अपनी संगठन शक्ति, दृढ निश्चय और संसार की सहानुभूति का आश्रय पाकर पूंजीपतियों और साम्राज्य वादियों की सम्मिलित शक्ति के सामने घुटने टेकने को तय्यार नहीं। भूखे रहने को तय्यार है, अपने बच्चे को बिलखता देखना पसन्द है, पर अपने सिद्धान्त को छोड़ने के लिये तैयार नहीं अपना राष्ट्रीय दावा - जिसकी सचाई में उन्हें पूर्ण विश्वास है - मनवा कर छोड़ेंगे या मर मिटेंगे। ब्रटेन का कोइले और लोहे का व्यवसाय एक प्रकार से बंद है। कपड़े की मिलें भी पूरे घंटे काम नहीं कर रही हैं। ब्रटेन का आयात

विजय वैजयन्ती.

बढ़ रहा है और निर्यात तेज़ी से घट रहा है। पर इसके साथ ही फासिस्ट दल का जन्म हो रहा है। अभी यह दल श्री बुक को गायब करने में विफल हुआ है। विशेष कानूनों से काम किया जा रहा है। ब्रिटेन के ही नहीं अपितु संसार के इतिहास में मई का प्रथम सप्ताह स्मरणीय दिवस समझा जायगा। सारे कारोबार सारे प्रेस, सब यातायात के साधन, सारे काम काज और निश्चय बन्द हो गये। संसार के अगले इतिहास में नया प्रभाव, नई धारा बहाने वाली शक्ति का विराट् रूप प्रगट हुआ। जर्जरित मज़दूरों में क्या शक्ति है यह सारे संसार विस्मय से देखा। पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों की आंखें खोलने के लिये उनका पाठ ही पर्याप्त होगा।

× × × ×

सुदूर पूर्व में अशान्ति का ज्वाला मुखी फटा नहीं है कभी कभी छोटी मोटी आवाज कर देता है। कभी २ धुंआ उठता दिखाई देता है इसके साथ २ कभी २ आग की लपटें निकलती नज़र आती है और चिनगारियां दूर २ तक बिखर जाती है। जहाज लंगर उठा देते हैं, तोपें खाली आरम्भ हो जाती है। बारकों में आराम से पड़े सिपाही वर्दी पहिन लेते हैं सब देशों के दूत तारें दौड़ानी आरम्भ कर देते हैं सिपाहियों की टुकड़ियां भी स्थल पर उतर पड़ती हैं। संगीनें आकाश में चमकाई जाती है। एक दो बार बन्दूक की फायर कर दी जाती है और धुंआ चारों ओर फैल जाता है। यह सिलसिला कब तक रहेगा यह बताना कठिन है। सिंगापुर का अड्डा बनने तक या उसके बाद भी यह नहीं कहा जा सकता। पर अब सोलह आने ठीक है कि ज्वालामुखी फटेगा। इसकी लपटों की के प्रकाश में एशिया अपनी स्वतंत्रता के मार्ग को ढूंढेगा। पाश्चमीय सभ्यता अपने घर से भी विदाई लेगी, कब होगा? इसके लिये भी अभी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अभी योरोप की शक्तियां पूर्णतया लाचार नहीं हुई हैं। उनके शस्त्रागार अभी भरे नहीं हैं। उनकी शासित प्रजा की आहों में वह बल और शक्ति नहीं आई है जो उन्हें भस्म कर दें। अत्याचार पीड़ितों के कंठ में इतनी शक्ति और साहस नहीं कि वे ज़ोर से बोल सकें। उनके हृदय में इतनी सामर्थ्य नहीं आई है कि छाती पर बैठने वाले को मुंह के बल पटक दें। इसके लिये प्रतीक्षा करनी होगी।

× × × ×

जागृति का, और नूतन युग का सन्देश मुस्लिम देशों में पहुंच गया है। राष्ट्रीयता की पवित्र धारा ने कुरान के शासन को उठा दिया है। टर्की ने अपने रंग में फारस, अरब हिजाज़ और अफ़गानिस्तान को रंग दिया है। आज उन देशों में स्वतंत्रता की बयार स्वच्छंदता से बह रही है। पर इन सब से महत्व पूर्ण घटना एशिया के इतिहास में 'एशिया संघ' की स्थापना है। यह भारत जैसे गुलाम देशों के गर्दन से गुलामी का पट्टा खोलने के यत्न में सहायक होगा। सम्पूर्ण एशिया में बंधुत्व का प्रचार करेगा और एशिया की संघटित शक्तियों को

संघठित करेगा। एशिया संघ संसार के सामने नूतन संदेश को लेकर खड़ा हुआ है। शान्ति और प्रेम की पवित्र धारा का उद्गम स्थान एशिया होगा। क्या एशिया संघ का ब्रिटिश साम्राज्य का मुकुट मणि सदस्य बनने का यत्न करेगा? क्या उपनिषदों और गीता के पवित्र तथा कल्याणकारी संदेशों को लेकर भारत आगे बढ़ेगा? पर दुनिया में खड़े होने से पहिले भारत को गुलामी का पट्टा उतारना पड़ेगा।

× × × ×

हम लोग एक दूसरे की पगड़ी उछालने में ही लगे रहे। एक दूसरे को नीचा दिखाने में ही हमारी योग्यता और शक्ति का प्रदर्शन हुआ। आज वह ज़ोरों पर है। श्री तन्खे का मध्यप्रदेश की कार्य कारिणी कौंसिल की सदस्यता स्वीकार करना था कि आपस में जूती पैजार होने लगी। अवस्था यहां तक पहुंच गई है कि आज हम अपने आश्रयवृक्ष को उखाड़ते भी नहीं शर्माते। सांप्रदायिकता की विषैली हवा ज़ोरों से चल रही है। गालियों का बाज़ार गर्म है। सद्भाव और स्नेह की धारा सूख गई है। कलकत्ता आज अशान्ति की भट्टी बनी हुई है। यहां से भारत में अशान्ति की चिनगारियां उड़ उड़ कर पहुंच रही हैं। ऐसे वायसराय लार्ड अरविन का स्वागत इन्हीं चिनगारियों की माला से किया गया था। शिमला शैल से उनके उतरने की सूचना लाहौर के बम्ब के धड़ाके ने दी। राष्ट्रीयता का प्रबल प्रवाह मन्द हो गया है। असत्य और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की आंधी में आज हमें कुछ नहीं दीख रहा है। राष्ट्रीयता की पताका को जिन हाथों ने इस समय ऊंचा उठा रखा है।

× × × ×

कुल का यह वर्ष 'नवरस सम्मेलन' था। कुल माता की 'प्रथम पचीसी के महोत्सव' की सूचना की ने नई उमंगें, नया उत्साह और नवीन रंगत कुल पुत्रों में भर दिया है। आज नूतन प्रेरणा प्रेरित कर रही है, नूतन भावनायें काम कर रही हैं। कुल के जन्मोत्सव ने नया रंग रूप धारण किया है। समाज के आन्दोलनों का यदि इसे स्रोत बनाने का यत्न किया जावे तो सफलता निश्चित है। पार्लियामेंट के लिये उत्साह अपूर्व था सबसे बढ़कर बात यह कि कुल पुत्रों ने कुल के प्रति अपने उत्तरदायित्व और अपने कर्तव्य को अनुभव किया है। उन्होंने अपने कार्य से साबित कर दिया है कि यदि उन पर विश्वास किया जावे तो उसमें वे पूरे उतरेंगे। कसौटी पर कसे जाने से खरे उतरेंगे और परीक्षा में सफल उतरेंगे। पर इन सब के होते हुए भी कुल का जीवन-प्रवाह मन्थर-गति से बहता रहा। न उसमें चंचलता थी न वेग में कमी थी।

समाप्त

विजय वैजयन्ती

(२० वर्ष — न होक)

खेलों की उन्नति :— हौकी टेनिस फुटबाल आदि हमारी खेलें यहां उत्साह से खेली जाती है और प्रतिदिन सर्वप्रिय होती जारही है। फुटबाल हौकी तो यहां के तरुण युवक नंगे पैरों उत्तमता से खेलते रहे हैं। मैंने अपनी पिछली यात्रा में देखा कि भारतीय खिलाड़ियों का एक दल नंगे पावों सैनिक पार्टी के साथ खेला था जो कि बूट पहिने हुआ था। हमारी खेलें भारत में राष्ट्रीयता फैला रही है। Y.M.C.A ने भी मद्रास बोम्बे आदि शहरों के सार्वजनिक मैदानों में खेलने का शुभ अवसर प्राप्त किया है। इन मैदानों में खेल देखने के लिये और खेलने के लिये हजारों की संख्या में आदमी और बालक सम्मिलित आते हैं। सचमुच ये खेलें एकता और समता लाने में मुख्य सहायक अंग है तथा सच्चे शिक्षणालय है।

धार्मिक रुचि — धर्म की रुचि सराहनीय है। १९५० में से ६८ हिन्दू २२ मुसलमान ३ बौद्ध ५ तथा १ क्रिश्चियन है। मैंने तिलक — भारत के सर्वाधिक रहस्यपूर्ण और कवि के पुत्र — से बहुत बातचीत की। वह Y.M.C.A द्वारा बोम्बे की अन्त्यज जातियों में अद्भुत काम करते रहे थे। उनका साधु तथा पवित्र आत्माओं के साथ निकट संबन्ध था और उन्हें समाज की सेवा की प्रेरणा करते रहते थे। भारतीय लोग एक क्षण के लिये हिन्दू होते हुए साहिब बनना नहीं चाहते। वे लोग अपने जातीय भाइयों से सदा के लिये न जाने क्यों अलग रहते है।

हिन्दू धर्म की प्रवृत्ति सबको ग्रहण करने की रही है बहुत से हिन्दू वस्तुतः पूछते है कि क्या यह असंभव नहीं है कि हम हिन्दू रहते हुए अपने विश्वासों के अनुसार कार्य कर सकें और प्रभु ईसा की सेवा करें। हो, ऐसा ही रहे हो।

क्राइस्ट के कार्य तथा उसके लिये यहां बहुत सम्मान है। इस बात का अधिक महत्व महात्मा गांधी को दिया जा सकता है। सिनेमों के फ़िल्मों में क्राइस्ट के जीवन के चित्रित होने पर भारतीय लोग भीड़ में आ उमड़ते हैं। ब्रिटिश तथा विदेशीय संस्थायें बाइबल का अच्छा प्रचार कर रही है। भारतीय पत्रों में भी क्राइस्ट को उत्तम स्थान दिया जाता है।

Y.M.C.A का कार्य - भारत में इस एसोसियेशन का कार्य देखकर मैं बड़ा खुश हुआ। उन्होंने दलितोद्धार के प्रशंसनीय काम को उठा रखा है। मैंने बोम्बे के मदनशाह बाग में इस कार्य की सफलता देखी और चकित हो गया। हमारे बोम्बे में आने पर विदाई हुई थी उसमें इस बात की सफलता का चिह्न झलकता था। नया ग्राम में भी उत्तम कार्य हो रहा है। अछूतों के नन्हें २ बच्चे इस समिति के मंत्री के हाथ को पकड़ कर झूलते हैं और आनन्दित होते हैं। नव संस्थापित Y.M.C.A नवयुवकों से सराहनीय कार्य कर रही है।

बापू जी के चरणों में मेरे तीन सप्ताह

(ले. श्री उपाध्याय देवराज जी सेठी M.A.)

आश्रम की स्थिति — महात्मा जी के चरणों में कुछ दिन निरन्तर बैठ कर शिक्षा लेने की लालसा मेरे मन में बहुत दिनों से बनी हुई थी। महात्मा जी के संसार-प्रसिद्ध आश्रम को अपने आंखों से देखने की इच्छा प्रतिदिन मेरे मन में तीव्र हो रही थी। बिहार प्रान्त में पांच सप्ताह तक भिक्षा कार्य से उकताया हुआ चित्त की शान्ति के लिए जगप्रसिद्ध सत्याग्रह आश्रम में २३ सितम्बर को पहुंचा। आश्रम अहमदाबाद स्टेशन से ६ मील और साबरमती स्टेशन से २० मि० का रास्ता है। साबरमती के दाहिने तट पर यह आश्रम स्थित है। स्वामी जी के चरणों से पूत रजकणों को अपने शीश पर धारण करने के लिए गंगा की तरंगें आपस में जिस प्रकार होड़ करती हैं उसी प्रकार साबरमती की चंचल तरंगमाला विश्वविभूति के चरणों से पूत रजकणों को शीश पर धारण करने के लिए निरन्तर होड़ करती रहती हैं। सड़क के दोनों ओर १½ फर्लांग तक आश्रम के पक्के मकान बने हुए हैं। सोमनाथ छात्रावास को छोड़ कर सब छात्रावास छोटे छोटे हैं और प्रत्येक के सामने एक एक छोटा रम्य बगीचा लगा हुआ है। सड़कों और पादडण्डियों को छोड़ कर शेष आश्रम की भूमि पर कपास ही के पौदे उग रहे हैं। सोमनाथ छात्रावास -(यह दो मंजिली इमारत है और इस में लगभग १०० कमरे हैं) के आंगन में भी 'देवकपास'[1] के ऊंचे ऊंचे पौदे खड़े हैं। इस के पीछे श्री सेठ जमनालाल जी बजाज की कुटिया है जहां उन का परिवार रहता है। आश्रम एक छोटा सा सब धर्मों और विचारों के रहने वाले आदमियों का छोटा सा कसबा है। आश्रम में स्थिर रूप से रहने वाले हिन्दू परिवारों के साथ इमाम साहब, कुरैशी साहब तथा एक दो और मुसलमान खानदान भी रहते हैं जो भारत की भावी राष्ट्रीयता और हिन्दू मुसलिम ऐक्य का एक उज्वल चित्र दर्शकों के सामने उपस्थित करते हैं।

१. यह कपास बारहों महीने रहती है। इस के बीज उपाध्याय जी के पास हैं। जो भाई चाहें उन से लेकर खेती कर सकते हैं। — सम्पादक

विजय वैजयन्ती.

मिस स्लेड (मीरा बहिन) और एक जर्मन महिला भी आश्रम का एक आवश्यक अंग बन गई हैं जो आश्रम की सार्वभौमता को प्रकट करता है। आश्रम में स्त्री पुरुष और बच्चे सब मिलाकर लगभग १३० होंगे।

बापूजी का बैठक खाना — आश्रम में पहुंचते ही सीधा बापूजी के चरणों में उपस्थित हुआ। निगाह को चारों ओर दौड़ाया पर संसार के सब से बड़े आदमी के कमरे की शोभा और भूषा को बढ़ाने वाली - एक डैस्क, चरखा, बैठने का आसन, कुछ पुस्तकें और एक चटाई के सिवाय कुछ न पाया। कुछ प्रारम्भिक बात चीत के बाद मेरे और बापूजी के बीच में निम्न प्रश्नोत्तर हुआ —

मैं - आश्रम में मुझे क्या काम करना होगा?

बापूजी - (तुरन्त उत्तर दिया) काम तो है, पर करोगे?

मैं - (आहिस्ते से) जी हां,

बापूजी - प्रतिदिन प्रातः आठ से नौ तक आश्रम के एक हिस्से की टट्टियां साफ़ करनी होंगी।

मैंने सहर्ष इस आज्ञा के सामने सिर झुका दिया। अपनी रवानगी के अन्तिम दिन तक सफ़ाई का काम करता रहा। इस के अतिरिक्त धुनना, सूत को पान लगाना तथा कातने इत्यादि में पर्याप्त समय देता रहा। मेरे भोजन छादन के लिए बापूजी ने अपने घर में ही प्रबन्ध करने की कृपा की।

आश्रम की दिनचर्या— यहां गुरुकुल में सब से पहली घंटी चार बजे बजती है। इस का हम को बड़ा नाज है। पर आश्रम हम से आगे बढ़ा हुआ है। सत्याग्रह आश्रम पहली घंटी हम से भी २५ मि. पहले अर्थात् ३ ½ बजे बजती है। और आठ नौ मिनट तक घूम घूम कर बजाई जाती है। सवा चार बजे सब आश्रमवासी साबरमती के किनारे इकट्ठे होते हैं। श्री शंकराचार्य के निम्न श्लोकों से प्रार्थना शुरु होती है —

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वम्
सच्चित् सुखं परम हंस गतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्नजागरसुषुप्तमवैति नित्यम्.
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूत संघः॥

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो,
वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः॥

× × ×

बापू जी के चरणों में—

प्रार्थना के पश्चात् राम नाम का मिल कर ऊंचे स्वर से जाप किया जाता है। तदुपरान्त एक दो भजन और तदनन्तर बापूजी पांच बजे तक भगवद् गीता की कथा करते हैं। उन दिनों पन्द्रहवां अध्याय चल रहा था। ५½ बजे दूसरी घंटी पर विद्यार्थिगण व्यायाम इत्यादि में लग जाते हैं। ६ बजे से ६½ तक प्रातराश करते हैं। ६½ बजे महात्मा जी के कमरे में आश्रम की सब देवियां इकट्ठी होती हैं। बापूजी इस समय तुलसी रामायण की कथा करते हैं। इसी समय बच्चों की विद्यालय में प्रार्थना इत्यादि होती है।

सात बजे से १०½ बजे तक प्रत्येक अपने काम पर रहता है। जिस का जो काम है उसी पर चला जाता है। कोई धुनने में, कोई बुनने में, कोई खेती में और कोई दफ्तर में काम करते हैं। १०½ से १२ तक का समय भोजन पकाने, खाने और विश्राम करने के लिए रखा हुआ है। १२ बजे फिर काम पर जाने की घंटी बजती है और सब अपने निश्चित कामों पर चले जाते हैं और ४-४० तक अपने अपने कार्यों में लगे रहते हैं। सायंकालीन प्रार्थना के लिए सब आश्रमवासी जमा हो जाते हैं। भगवद् गीता के अन्तिम श्लोकों के पाठ से (जिन में स्थितप्रज्ञ के लक्षण दिए हुए हैं) प्रार्थना प्रारम्भ होती है। तदुपरान्त रामनाम का जाप और दो एक सन्तों की वाणियां मिल कर गाई जाती हैं। इस के बाद उपस्थिति होती है जिस के उत्तर में प्रत्येक व्यक्ति उस दिन के काते हुए सूत का अपना ब्यौरा लिखवाता है। प्रतिदिन सारे आश्रम का १८ हज़ार गज के लगभग सूत होता है। उपस्थिति के पश्चात् बापू जी आठ बजे तुलसी रामायण की ~~कथा~~ कथा करते हैं। लगभग ९ बजे सभी सो जाते हैं।

बापूजी की दिनचर्या— आम लोगों का ख्याल है कि बापू जी आश्रम में बैठे हुए आराम से दिन काट रहे हैं; पर यह सर्वथा भ्रम है। प्रातः ३-४५ से लेकर रात ९ बजे तक शायद ही कोई ऐसा क्षण हो जो उन को आराम लेने का समय मिलता हो। कम से कम मैंने तीन सप्ताह के निवास में उन्हें बहुत ही ~~[illegible]~~ शाज़ो नादर ही खाली पाया है। प्रायः उन के पास उन के सहकारी कार्यकर्ता भिन्न भिन्न विषयों पर निर्देश लेने के लिए चारों ओर जमा रहते हैं। बापूजी अपना पर्याप्त समय लेख इत्यादि के लिखने में लगाते हैं। अब कुछ समय ~~[illegible]~~ स्वाध्याय में भी देने लगे हैं। विशेष कर आज कल Indian Chamber of Commerce की प्रार्थना पर मुद्रापद्धति के प्रश्न का विशेषतः अनुशीलन कर रहे हैं। अलग कोने में रहते हुए भी भिन्न भिन्न प्रान्तों से आए हुए दर्शक उन के बहुमूल्य समय पर एक खासा टैक्स है। आश्रमवाले भी उन से केवल व्यावहारिक बातों तक परिमित नहीं रहते। एक आकर कहता है- बापू जी आज पेट में दर्द है। कोई कहता है - कल बुखार हो गया था। गोया कि हर कोई अपनी सब प्रकार की शिकायतें

विजय वैजयन्ती

और जरूरियात बापू जी के पास लाते हैं। बापू जी इन की कभी उपेक्षा नहीं करते। उपेक्षा करना इन्होंने कभी सीखा ही नहीं। वे भी हरेक काम में खूब दिलचस्पी लेते हैं। किसी को उपवास कराते हैं, किसी को लुई कोनी का स्नान कराते हैं, किसी को अनीमा देते हैं और किसी को अपने घर से फल का रस पिलाते हैं।

वे ६ बजे हल्का सा प्रातराश कराते हैं। १०½ से ११ तक स्नान इत्यादि। मेरे होते हुए उन्होंने कुछ दिन से साबरमती में बच्चों के साथ तैरना भी शुरु कर दिया था। ११ बजे भोजन करते हैं। भोजन में बकरी का दूध, मुनक्का, दो हलकी हलकी करारी सूखी रोटियां, और फल होते हैं। खाना खाते हुए भी कोई न कोई उन के पास डटा रहता है। किसी दिन कोई न आए तो अखबार भी देखते हैं। १२ बजे से ५ बजे तक विविध प्रकार के कर्मों में लगे रहते हैं। लोगों को मिलने का समय ४ से ५ तक का देते हैं। यही उन का चरखा चलाने का समय है। ५½ बजे सायंकाल का भोजन करते हैं, जिस में प्रायः वे ही चीजें होती है। १९१५ में जब बापू जी कुम्भ पर आए थे तब उन्होंने दो प्रतिज्ञाएं की थी। एक तो रात्री में भोजन न करने की। दूसरी यह कि दिन भर के भोजन में ५ से अधिक पदार्थ न खाऊंगा।

(धारा वाहिक)

गुरुकुलीय ओलिम्पस्

वॉली बॉल

सान्मुख्य

४ नवम्बर १९२६.

चतुरंगी हॉकी सान्मुख्य

४ नवम्बर के - क्राउन टीम, रॉयल टीम } A — डायमण्ड क्लब, एफ. यू. सी. } B.

F. U. C.

सच्चा न्याय.

(श्री पूर्णानन्द जी)

इधर राजकुमार शिवदत्त सिंह ने यौवनावस्था में पग बढ़ाया उधर राजाधिराज जय सिंह को उसके विवाह की फिक्र सताने लगी। उन्होंने बहुत ही तलाश किया पर उनके आँखों में किसी की सूरत न उतरी, हताश होकर बैठ गए। एक दिन थके मांदे विश्राम गृह में पहुंचे और चिल्लाने लगे.

पति की आवाज़ सुनकर महारानी कलावती उनके सामने आकर खड़ी होगई। तब जय सिंह ने ठंडी आह भर कर कहा - प्यारी! बहुत सोचा और परन्तु कोई भी सुयोग्य एवं सुन्दरी राजकुमारी नहीं मिली।

कलावती ने कहा - नाथ! आप इतने बैचेन क्यों हो रहे हैं! विजय गढ़ के राजा राम सिंह की कन्या से ही इसकी शादी कर दीजिये।

जय सिंह ने लम्बी सांस लेकर आँख मूंद ली और सोचते सोचते जब बारह बजे गये तो ज़ोर से चिल्लाने लगे कि मैं अपने प्रिय पुत्र की शादी अवश्य ही लीलावती से करूंगा, उसको मेरे लड़के के लिये ही ब्रह्मा ने रचा है।

सवेरे उठते ही राजा रानी के कमरे में गए और रानी का हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे २ बोले - प्रियतमे? तुमने ठीक ही मुझे सुझाया मैं अवश्यमेव शिवदत्त की शादी विजय गढ़ के राजा रामसिंह की कन्या लीलावती से करूंगा। सो अब शगुन करना चाहिये और उन्हें यह संदेश भेजना चाहिये। उसके अनुसार संदेशा भेजा गया और दोनों पक्ष की अनुमति से शादी बड़ी धूमधाम से होगई।

(२)

शिवदत्त सिंह न जाने आज रात को ~~किसी~~ किस की खोज में घूम रहे हैं। उनके चेहरे से ऐसा मालूम होता है कि वह किसी गहरी चिन्ता में निमग्न है और उसके होठ सूखे जारहे हैं। वह कभी सड़क पर घूमते हैं और कभी किसी जगह गहरी चिन्ता में बैठ कर कुछ शोक पूर्ण व्यंगों से इधर उधर नज़रें दौड़ा लेते हैं। इस प्रकार की क्रियायें करते २ जब १२ बज गये तब इन का ध्यान अपनी कलाई पर बंधी हुई घड़ी पर गया और वह ~~चिल्लाकर~~ चौंक कर चिल्ला उठे कि हैं मैं कहां?

शिवदत्त सिंह ने चारों तरफ देखा कि मैं अब पूर्ण सुनसान जगह में हूं। कोई मुझे देख तो नहीं रहा? जब उसे पूर्ण यकीन हो गया कि मुझे कोई नहीं देख रहा है तो उसने एक आलीशान मकान पर कमन्द लगाई और डरते डरते उसके ऊपर चढ़ गया। ज्योंही उसने बारी में पैर धरा त्योंही उसे एक बालक की रोने की आवाज़ आई। उस आवाज़ को सुनकर एक आवाज़ इसका कलेजा कांप गया। जब रोना बंद होगया तो यह कहने लगा हे परमात्मन्? क्या मुझे यह पाप करना ही पड़ेगा। बार बार उसका मन उसको इस बुराई से मना कर रहा था परन्तु लीला का नाम याद आते ही इसका दिल भर आता था। अन्त में दिल को काबू करके इसने धीरे २ आगे बढ़ना शुरू किया। बड़ी कठिनता से यह एक पलंग के पास पहुंचा और बहुत ही सावधानी से आगे बढ़कर किसी चीज़ को टटोलने लगा। जब पूर्ण निश्चय होगया कि जिस चीज़ को मैं ढूंढ रहा हूं वह यही है तब उसने अपनी जेब से एक शीशी निकाल उसकी देह को सुंघादी और धीरे से उसके गले में सोने का हार निकाल लिया। इसके बाद उसने इस हार को चूमा और बहुत ही खुश होने लगा। परन्तु फिर एक दम उसके मुख का भाव बदल गया और उस का शरीर थर्थर कांपने लगा। इतने ही में वहां खटका हुआ। खटके की आवाज़ से चौंक कर घबराकर एक ध्वनि के साथ सट कर खड़ा होगया परन्तु जब उसने वहां पूर्ण शान्ति पाई तो वह वहां से हटा और उसी बारी के पास लौट आया पर ज्योंही वह कमन्द लगा कर कमन्द लगाकर नीचे उतरना चाहता था उसे पहरेदार की आवाज़ आई "खबरदार जागते रहो"। अब तो उसके प्राण पखेरू उड़ने लगे। इसने झट कमन्द को उतार दिया और छिपकर उसके गुज़रने की इन्तज़ार करने लगा। इतने ही उसे एक और काम याद आया। उसने बारी से हाथ निकाल कर समय देखा तो २ बज चुके थे। बस फिर क्या था वह उसी पलंग के पास पहुंचा और नाक के आगे हाथ रख कर देखने लगा कि वह अभागिनी स्त्री जीवित है या नहीं। जब उसे पूर्ण निश्चय होगया कि वह अभी जीवित है तो उसने उसके पेट पर कटार चुभो दी। इतने में ही उसे किसी के आने की आहट सुनाई दी। आवाज़ सुनते ही यह भागा और झट उसी बारी पर आया इतने में पहरेदार भी वहां से जा चुका था। उसने झट कमंद लगाया और झट नीचे उतर आया और अपने को बचाता हुआ अपने घर में पहुंचा और वह उस हार को अपनी स्त्री के गले में डाल प्रसन्न होने लगा। जब उसने सोने के लिये अपने वस्त्र उतारे तो एक दम कटार की आस्तीन पर हाथ जाने से चौंक पड़ा और उसको खाली पाकर बेहोश होगया।

(२)

पौ फटते ही देवी सिंह के मकान में रोना धोना शुरू हुआ। सब आश्चर्य में थे कि यह क्या होगया। सब आकर सेठ साहिब से सहानुभूति प्रगट करने लगे जब सेठ साहिब अपनी लड़की कमला की लाश को देखने अन्दर गये तो उनकी

नज़र एक कटार पर पड़ी जो कि इसके पेट में घुसी हुई थी। उन्होंने वह कटार एक दम निकाल ली और आश्चर्य से देखने लगे। जब उन्होंने उस पर लिखे नाम को पढ़ा तो वह स्तब्ध हो गये उनकी सब चेष्टायें रुक गई। आखिर सेठजी छुरा लेकर राजदर्बार में पहुंचे और राजा जयसिंह के सामने खड़े होकर इस प्रकार कहने लगे - श्रीराजाधिराज जयसिंह की जय हो! आज रात को न जाने मेरे घर में किसी ने घुस कर डाका मारा, मुझे कुछ भी पता न था। जब मैं सवेरे उठा तो मैं अपनी कन्या कमला को देखने गया। मैंने जो दृश्य देखा वह बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य था। मेरी लड़की के पेट में एक कटार घुसी हुई थी जिसके ऊपर राजकुमार — इतना कह कर सेठ साहिब रुक गये और घबड़ा कर रोने लगे। राजा जयसिंह बोले — कहिये सेठजी रुक क्यों गये। अन्त में सेठ जी ने डरते हुए धीरे से कहा - "शिवदत्त सिंह का नाम खुदा हुआ था। न जाने राजकुमार को मेरे से क्या दुश्मनी थी जो एकाएक उन्होंने यह काम कर दिया।" राजाधिराज जयसिंह इस बात को सुन घबड़ा गये, उनके मुंह पर हवाई उड़ने लगी और मूर्छित होकर सिंहासन पर गिर पड़े। रानी को जब पता लगा तब वह भी बेहोश होगई। प्रजा तथा दरबारी लोगों में भी इस विषय की चर्चा होने लगी।

(५)

आज का दर्बार एक विचित्र ढंग का ही दर्बार है, लोगों में तरह २ की बातें होने लगी। देखें राजा साहिब अपने लड़के के बारे में क्या न्याय करते हैं। आज शिवदत्त सिंह हाथ पांव में बेड़ी डाले राजा के सामने सिर झुकाये खड़े हैं। सारी प्रजा तथा दर्बारी उनकी सूरत को देख कर घबड़ा रहे हैं। सेठ साहिब भी गालों पर हाथ धरे एक टक बन्दी को देख रहे हैं। इतने में राजा ने सभा की निस्तब्धता को भंग करते हुए कहना प्रारंभ किया - "ऐ मेरे प्राणों से प्यारे, एक मात्र मेरे सहारे प्यारे राजकुमार क्या मैं जो कुछ तेरे विषय में सुन रहा हूं, वह वास्तव में ठीक है या स्वप्न मात्र। जल्दी सत्य कहो और मेरे दग्ध हृदय को शान्त करो।"

राजकुमार चुप चाप खड़े रहे। ५ मिनट तक दर्बार में पूर्ण शान्ति रही। इसके बाद राजकुमार ने सिर ऊंचा किया और जनता के सामने सिर नवाकर तथा राजाधिराज के आगे सिर झुका कर अपना अपराध स्वीकार किया।

फिर राजा ने कहा - क्या यह कटार भी तुम्हारी है?

उत्तर में राजकुमार ने सिर झुका दिया।

तब राजा ने कहा कि यह तुमने क्यों किया?

राजकुमार ने हाथ जोड़ कर कहा - महाराज सुनिये " एक बार मैं अपनी स्त्री के साथ घूमने सायंकाल इंजी सड़क पर गया। मैं और मेरी स्त्री एक फिटन पर सवार थी इतने मे मैंने देखा एक मोटर चली आरही है उस पर सेठजी और उनके सब घर वाले बैठे थे। मोटर बहुत धीरे धीरे जारही थी। एक उसमें कमला नाम की लड़की थी

जिसके गले में एक सोने का हार था और वह बहुत ही खूबसूरत थी, उसने जब मेरी स्त्री को देखा तो वह नाक भौं सिकोड़ कर बोली कि "यह कौन सी स्त्री है क्या यह भी हमारी तरह सुख का जीवन बिता सकती है।" उसकी इस हिमाकत को देखकर मेरी स्त्री जल गई और रोने लगी और कहने लगी कि जब तक तुम इसे मार मुझे यह सोने का हार न ला दोगे तब तक मैं तुम्हारा मुंह न देखूंगी नहीं तो जहर खाकर मर जाऊंगी।" अत मुझे बाधित होकर यह काम करना पड़ा। उसके इस वचन को सुनकर सब हैरान हो गये। राजाधिराज भी सोच में पड़ गये। कुछ देर बाद सेठजी से पूछा - क्यों सेठजी यह बात ठीक है कि आप मोटर पर परिवार सहित आप सैर करने गये थे।

सेठजी ने — श्रीमान्! ठीक है। राजा — क्या तुम्हें पता था कि तुम्हारी कन्या ने ऐसा किया।
सेठजी — मुझे भी पता न था - मुझे पता होता तो मैं उसे अंटता और माफी मांगता।
तब राजा कुछ चुप रहे और कुछ सोचकर इस प्रकार बोले - हे मेरे प्यारे पुत्र? क्या तुम्हें पता है कि तुम्हें इस अपराध का क्या दंड मिलेगा?। राजकुमार ने कहा - महाराज। जो कुछ आप मुझे दंड देंगे वो मैं सहर्ष सहने को तय्यार हूं। मैं आगामी आपके घर में इसीलिये पैदा हुआ था। मुझ पापी को वही दण्ड दें जो मेरे लिये उपयुक्त हो। यह कहकर उसने सिर झुका लिया और अपनी आंसुओं से अपनी वेदना को दूर करने लगा।

सारी प्रजा ध्यान से देख रही थी कि देखें राजासाहिब क्या हुक्म देते हैं।
राजा साहिब:— (दिल में) जुर्म तो बहुत बड़ा है, मैं अपने राज्य में ऐसा अधर्म नहीं देख सकता हूं। यद्यपि यह मेरा एकलौता प्यारा पुत्र है तथापि मैं धर्म से एक कदम भी पीछे नहीं हट सकता। मुझ को इसके लिये दंड की आज्ञा देनी पड़ेगी। फिर स्पष्ट प्रकाश में बोले - मैं इसको कतल की आज्ञा देता हूं। अब दरबार बरखास्त किया जाता है। कल ८ बजे प्रातः काल ही इसका कतल किया जावेगा।

(५)

आज प्रातः काल ६ बजे ही सारा दरबार भर गया और इस अजीब नज़ारे को देखने के लिये प्रजा उमड़ आई। ठीक ७½ बजे राजकुमार शिवदत्त राजकुमार दरबार में हथकड़िया तथा बेड़िया डाले हाज़िर किये गये। सारे दरबार में सन्नाटा छाया हुआ था। सब आदमी शान्त विराजमान थी परन्तु सब के चेहरों पर उदासी थी पर राजकुमार के चेहरे पर अजब मुसकान थी।

ठीक ८ बजे राजाधिराजने जल्लादों को हुक्म दिया कि इसकी बेड़िया काट दो परन्तु किसी को भी हिम्मत न पड़ी कि वह उसको छू भी सके। जब कोई भी जल्लाद इस काम को करने के लिये तय्यार न हुआ तो राजा ने कहा - अच्छा वैसे ही इसको तलवार के घाट उतार दो। परन्तु वहां तो पूर्ण सन्नाटा था कौन उस पर हाथ उठाता। अन्त में राजाधिराज स्वयं उठे और हाथ में कटार ले

अपने पुत्र के पास पहुंचे और एक ही क्षण में उसकी बेड़ियां काट दी। इस के बाद राजा ने उसको छाती से लगा लिया और चूमा भरा, आँखों के आँसू न रुक सके। पर हृदय को कड़ा कर अन्त में म्यान से तलवार खींच उसको मारने चले पर बीच में ही सेठ जी ने उनको रोक लिया तब राजा ने कहा - मैं सत्य पर ही दृढ़ हूं न्याय के लिये मुझे अपने पुत्र की भी पर्वाह न करनी चाहिये। पर इतना कह कर राजा सहम कर एक दम खड़े हो गये और राजकुमार के सामने पहुंचे ही थे कि इतने ही में लीलावती ने तलवार पकड़ ली और कहा - पिताजी! कसूर तो मेरा है ये तो निरपराध हैं परन्तु राजा ने किसी की न सुनी और तलवार से अपने बेटे का गला धड़ से अलग कर दिया और अन्त में यह कह कर बेहोश हो गये कि ऐसा पुत्र तो सौ जन्म में भी नहीं मिलेगा। इतने में सारी दिशायें राजा की जय जयकार से गूंज उठी। इन्द्र उसके राज्य में साक्षात् रूप से प्रगट हुए और उनको गले लगाकर कहने लगे कि सच्चा न्याय इसे ही कहते हैं। देव पुष्प बरसाने लगे।

दूसरे दिन पतिव्रता लीलावती भी पति के पीछे सती हो गई।

राजा ने फिर तलवार खींची और अपने को संभाल कर तलवार चलाने लगे इतने में ही किसी ने झटके से उनके हाथ से तलवार खींच ली और उनके कान में यह आवाज सुनाई दी - "नाथ! यह आवाज उस अभागिनी की ही है जो मैंने पारीतीला से इसकी शादी की। पहिले आप मुझे ही मार कर खतम कीजिये।"

---

(3) ~~क्या~~ मैंने कहा - क्या आप दिन भर में शब्दों का बार २ प्रयोग नहीं करते। वह बोला - करता हूं मैंने कहा - ऐसे ही वेद में भी मंत्रों का बार २ पाठ प्रसंगानुसार है तो क्या आपका कुछ हर्ज है।
(२२ पाठ कोष्ठ में)

वह इन उत्तरों से सन्तुष्ट होगया. उसने भी मुझे ५) दिये मैं खुशी से अपनी योग्यता पा लट्टू बना हुआ चल पड़ा

(4) ग्राम का अनुभव - मेरी यात्रा का बहुत बड़ा भाग गावों में बीता है। गावों में बहुत कार्य-ता न मिलने का ~~[illegible]~~ कारण नीतिशास्त्र का अभाव है।

गांव में भिन्न २ प्रकार के मनुष्य रहते हैं। उनके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिये सनातनियों के ग्राम में सनातनी वद भावम् सिक्खों के गांव में सिक्ख समान। मैं सना-तनियों से हरिद्वार की पाठशाला तथा कुम्भ और आजिदलक ... और गोशाला के नाम से रुपया मांगता था सिक्खों से गतका बनैठी आदि शारीरिक खेलों के लिये क्योंकि ये खेल सिक्ख ही खिलाते थे। समाजी तो मिलते ही थे। तो अपने देखा इस प्रकार इनीतिया चलानी पड़ी।

(२) वेष और वेशभूषा का प्रभाव - मेरी समझ में गांवों में सिर नंगा और पीली धोती पहिने कभी न जावे नहीं तो बाबा समझ कर ४ आने पकड़ा देते हैं। एक गांव में पीली धोती पहिन जाने पर कुत्तों ने घेर लिया लोगों को आवाज़ दी तब उन्होंने आकर कुत्तों को भगाया तब से पीली धोती का नाम नहीं लेता।

~~(क)~~ (3) गांव वालों से ~~[illegible]~~ अधिक न मांगे जितना वे प्रेम से दे दें उतना ले लेना चाहिये। एक जगह एक ने २) दिये मुझे ~~[illegible]~~ मैंने लोभ करा और मिलने की आशा से देने के लिये जिद की उससे वह भी छीनने पड़े। तब से मैंने यह उपदेश गांठ बांध लिया है।

~~[illegible]~~ ये ही मेरे अनुभव हैं पाठक! इनसे अवश्य सेव लाभ उठावेंगे

समाप्त

अञ्चल में

बंगाली रंग मंच.

यह सर्व विदित है कि सबसे पहिला बंगाली ड्रामा श्याम बाज़ार में बाबू नवीन के बोस के यहां किया गया था परन्तु वहां कोई स्थिर रंगमंच न था अतः प्रत्येक मनुष्य खेल देखने की उत्सुकता से इधर उधर मारे फिरते थे। रामनारायण तर्कलिकार के द्वारा बनाया हुआ 'कुलीन कुल सर्वस्व' नाम का ड्रामा जो कि १८५६ में चड़क डांगा में बाबू राम जय बसाक के यहां खेला गया था उसकी भी हालत पूर्व ड्रामे के समान हुई जो कलकत्ते में खेला गया था।

यह खेल लेबेडोफ (Lebedoff) नाम के एक रूसी ने बाबू गोलक नाथ दास की सहायता से किया था। इ सबसे अद्भुत बात यह थी कि बाबू गोलक नाथ दासने स्त्रियों का नाटक खेला था इस नाटक का नाम 'छद्मवेश' था। यह अंग्रेजी नाटक Disguise का अनुवाद था जो कि बाबू गोलक नाथ दासने किया था इसमें इन्हीं महाशय ने संगीत लियों का भी समावेश कर दिया था। यद्यपि हम यह देखते हैं कि 'मनी पुजारा' में और 'विद्यासुन्दर' में चित्रकारियों ने स्त्रियों का भाग खेला था परन्तु इन ४० वर्षों के भीतर किसी ने भी स्त्रियों का पार्ट नहीं किया था।

बंगाली नाटक मंडली — १८६३ में एक बंगाली नाटक स्थापित हुई जिसमें कि स्त्रियों का भाग Female Artistes ने ही खेला था और उसी साल ही Oriental Theatre और National Lyceum नाम के और भी दो खेल हुए उसमें भी स्त्रियों का भाग femal Artistes के द्वारा ही हुआ है। बंगाली नाटक मंडली की स्थापना से पूर्व पूर्वोक्त दोनों नाटक मण्डलियां कभी कभी खेला करती थी इस कारण बंगाली नाटक मण्डली रंगमंच में पर स्त्री नटी के प्रवेश करने में आती हैं।

श्री W.C बनर्जी नाटक वेश में — यह पहिले ही कहा जा चुका है 'कुलीन-कुल-सर्वस्व' बाबू राम जय बसाक के यहां खेला गया था। बाबू बिहारी लाल बनर्जी भी एक Artist था जिसने कि स्त्रियों का भाग पूर्ण सफलता से किया था। रामनारायण तर्कलिकार के द्वारा लिखित 'वेणी-संहार' नामक खेल भी उसी वर्ष बाबू काली प्रसन्न सिंह के मकान पर खेला गया था। उसमें भी बाबू बिहारी लालने स्त्रियों का भाग खेला था। अन्य Artistes में जिन्होंने की कि खेल में भाग लिया था वे काली प्रसन्न सिंह और मि. W.C. बनर्जी भी थे।

शकुन्तला — उसी वर्ष बाबू आशुतोष देव के मकान पर 'शकुन्तला' खेला गया था इसमें भाग लेने वालों में प्रियमाधव वसु मलिक के बड़े लड़के शरच्चन्द्र घोष और बिहारी बाबू थे। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार बंगाली नाटकों के जन्मदाता शरच्चन्द्र घोष के साथ बाबू बिहारी लाल बनर्जी भी मिल गये।

विधवा विवाह — १८६० में 'विधवा विवाह' नाम का नाटक बाबू केशव चन्द्र सेन के अनुरोध से सिन्धुरियापट्टी बड़ाबाज़ार के बाबू गोपाल लाल मलिक के घर पर यह नाटक सर रमेश चन्द्र मित्र के बड़े भाई उमेश चन्द्र मित्र के द्वारा लिखा गया था। बिहारी बाबू ने सुलोचना का पार्ट बड़ी प्रशंसनीय रीति से किया था।

माइकेल के नाटक — १८६७ की १२ फर्वरी को माइकेल मधुसूदन दत्त का कृष्णाकुमारी नाटक शोभाबाज़ार राजबाड़ी के यहां प्रथम बार खेला गया। भीमसिंह का Part बिहारी बाबू के द्वारा खेला गया था। जनता के बीच में बंगाली रंगमंच के संस्थापक, गिरीश चन्द्र घोष भी उपस्थित थे। उन्हें स्वप्न में भी ख्याल न था कि उन्हीं के द्वारा भविष्य में सर्व साधारण के सम्मुख यह ही पार्ट उन्हीं के द्वारा खेला जायगा। १८६७ में माइकेल का 'पद्मावती' नाटक अपर चितपुर रोड में जय मित्र के लड़के बाबू पंच कौड़ी मित्र के घर पर खेला गया। 'इन्द्रनील' का पार्ट बिहारी बाबू ने ग्रहण किया। यह खेल इसी पाड़ा के बाबू जगन्नाथ शाह के मकान पर भी खेला गया था इसमें बाबू प्रियमाधव बसु अभिनेता और नगेन्द्र नाथ मित्र ने भाग लिया था। बाबू प्रियमाधव बसु ने खेल के लिये कुछ गीत भी बनाये थे।

सधवा की एकादशी — बाबू नगेन्द्र नाथ बनर्जी ने 'सधवा की एकादशी' के खेल की व्यवस्था की जिसमें कि बाबू गिरीश चन्द्र घोष ने 'नीमचन्द्' का पार्ट खेला था। नैतिक ओफ बंगाल के जीवन का प्रारंभ था। बाबू अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी ने भी इसमें भाग लिया था उसको 'घातीराम डिप्टी' का पार्ट दिया गया था 'अतुल' का पार्ट बाबू नगेन्द्र नाथ बनर्जी ने लिया था और बाबू राधामाधव कर ने भी भाग लिया था। बाबू धर्मदास सुर और बाबू नगेन्द्र नाथ मित्र ने रंगमंच की व्यवस्था की थी।

यह खेल तीन स्थानों पर खेला गया था प्रथम तो मुकर्जी पाड़ा के यहां पर दूसरा बाबू दीनानाथ बोस के यहां पर, और अन्तिम और तीसरा बाबू गिरीश चन्द्र घोष के ससुर के यहां खेला गया था। सर शरद चरन मित्र ने 'रामाभिषेक' नाम के नाटक की रंगमंच को सरकारी खजांची राम प्रसाद मित्र के यहां से उठाकर कम्पनी के लिये निश्चित कर दिया। 'राजस्थान' के संपादक बाबू गोपाल चन्द्र मजूमदार ने नीमचन्द्र का पार्ट लिया था पर उनके किसी कारण वश न आसकने से गिरीश बाबू ने that play किया।

स्थिर नाटक — तब स्थिर नाटक मंडली की स्थापना के लिये एक प्रस्ताव किया गया और इसके लिये बाबू नगेन्द्र नाथ बनर्जी, बाबू धर्मदास सुर और बाबू योगेन्द्र नाथ मित्र के हस्ताक्षरों से युक्त नियमावली प्रकाशित की गई।

बाबू गिरीश चन्द्र घोष इस प्रस्ताव के विरुद्ध थे क्योंकि वे यह नहीं चाहते थे कि सर्वसाधारण से धनियों के मनोरंजन के लिये चन्दा लिया जाय। जनता से चन्दा प्राप्त करने के बदले व्यवस्थापक अपमानित किये जाते थे अतएव यह प्रस्ताव रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया।

लीलावती — सधवा की एकादशी के खेले जाने के पश्चात 'लीलावती' नामक खेल हुआ जिसमें कि गिरीश चन्द्र घोष ने 'ललित' का पार्ट लिया था नगेन्द्र नाथ बनर्जी ने हेम-

चन्द्र' का, योगेन्द्र नाथ मित्र ने 'बाबू नादर चन्द्र' का, बाबू राधा माधव कर ने 'बिनोद गालिनी' का, बाबू क्षेत्र चन्द्र कर ने 'लीलावती' का और बाबू अर्धेन्दु शेखर ने 'हर विलास' का बाबू महेन्द्र नाथ बोस और मोतीलाल सूर ने भी इस खेल में भाग लिया था।

पहिला और दूसरा अंक नं. २ पर बाबू रसावन पाल के मकान पर खेला गया था तीसरा खेल शालिग्राम घोष की गली में हुआ था और भी अन्य बहुत से खेल दीवान चन्द्र मित्र के द्वारा किये गये थे।

इस कंपनी का मुख्य व्यवस्थापक बाबू अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी, महेन्द्र लाल बोस मोतीलाल सूर, नगेन्द्र नाथ बनर्जी, कितेचन्द्र बनर्जी, राधामाधव कर, राधागोविन्द कर धर्मदास सूर और अमृत लाल बोस थे।

कंपनी का द्वितीय खेल 'नवीन तपस्विनी' था जिसमें कि अर्धेन्दु शेखर मुस्तफी ने 'जलधर' बने थे। कंपनी के तृतीय खेल — माइकेल का 'कृष्णा कुमारी' था जिसमें कि बाबू गिरीश चन्द्र ने 'भीमसिंह' का पार्ट लिया था।

राष्ट्रीय नाटक मंडली नीलदर्पण — इन सज्जनों ने अपनी शक्ति को स्थिर रंगमंच बनाने की ओर लगाया और जोरासांको के यहां 'सान्याल घर' नामक आंगन ४ मास के ठेके पर लिया। बाबू भुवन मोहन नियोगी के स्थान पर रिहर्सल किया गया। राष्ट्रीय नाटक मंडली का प्रथम खेल १८७२ की ७वीं दिसम्बर को हुआ और यह ही तिथि कलकत्ते में बंगाली नाटकों का जन्म दिन माना जाता है। 'नील दर्पण' खेलने के लिये चुना गया। बाबू गिरिश चन्द्र घोष ने इसमें भाग न लिया क्योंकि वे चाहते थे कि यह नाटक विस्तृत स्टेज में और टिकिट बिक्री किया जाय।

राजा राधाकान्त देव — सान्याल घर का ठेका समाप्त हो जाने के बाद नाटक मंडली का स्थान राजा जी के सोभाबाजार के बहादुर राधाकान्त देव के मकान में बदल दिया गया। गिरिश चन्द्र घोष की उपस्थिति में मेयो हॉस्पिटल के साथ टाउन हाल में नील दर्पण खेला गया और एल्बर्ट हॉल में भी इसी समय पर खेल की व्यवस्था की गई। 'नीलदर्पण' नामक खेल १८७२ की ७वीं दिसम्बर को खेला गया जिसमें टिकिट भी लगाये गये पहिले धनी और भद्र पुरुष जिनको कि मुफ्त टिकिट मिलते थे वही देख पाते थे परन्तु टिकिट के बेचे जाने पर सर्व साधारण जनता ने भी इस बंगाली नाटक का अवलोकन किया इसी लिये राष्ट्रीय नाटक मंडली को प्रथम बंगालीय नाटक मंडली कहा जाता है। और १८७२ की ७वीं दिसम्बर को कलकत्ते के बंगाली नाटकों का जन्म दिन कहा जाता है। (अनूदित)

(असमाप्त)

विचार दिशा.

तरुण भारत की विचार दिशा.

तरुण भारत क्या सोचता है इस विषय पर श्रीमान् आर्थर मेयो ने डेली ग्राफ में लिखा है कि मैंने यूरोपियन नेताओं, शासकों, लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सभ्यों, विद्यार्थियों और हिन्दू मुसलिम नेताओं से इस विषय पर पूछा है पर २० लाख वर्गमील के लगभग क्षेत्र से आवृत, ३० करोड़ जनों से जनाकीर्ण इस भारत में इस विषय पर खोजना सरल काम नहीं। मैंने भारतीय शिक्षित युवकों की नाड़ी परीक्षा के लिये अनेक विद्वानों से पूछा है यह शिक्षित जन समुदाय २ प्रकार का है, आंग्ल, आंग्ल भारतीय, भारतीय। ये ४ विभागों में विभक्त हैं। पहिले विभाग में ६० हज़ार के लगभग सैनिक हैं। दूसरे आई. सी. एस आदि M.S पदवियों से समुज्वल हैं। तीसरे बैंकों में अनाज का काम करते हैं और फुटकर वस्तुएं बेच कर जीवननिर्वाह किया करते हैं।

यूरोपियन लोगों की हालत बुरी है। भारतीय शासन विभाग को भारतीय करण की नीति के कारण उसको स्पर्धा में भारतीयों ने गिरा रखा है। भारतीय लोग क्लर्क बनने में बड़े प्रवीण हैं पर ये लोग अंग्रेजी भाषा कम पढ़ते हैं। यूनिवर्सिटी परीक्षा नहीं देते तथा उनकी गणित की भी योग्यता भारतीयों से न्यून है B.A फेल से भी कम है। मद्रास में हमारे प्रतिनिधि ने ५ हज़ार बेकार आंग्ल यूरोपियनों की अवस्था को अपनी आंखों से देखा है। उनमें से ऐंग्लो इंडियन बालक आंग्ल प्रकृति और के आदेशों अनुसार पले होने पर भी भारतीयों के साथ प्रतियोगिता में पीछे पड़ गये हैं। वे लोग अपनी प्रान्तीय भाषाओं से सर्वथा अपरिचित हैं।

भारतीय प्रजा के दो विभाग हैं एक शिक्षित दूसरा अशिक्षित। सारे भारत में केवल २ करोड़ २० लाख आदमी पढ़ या लिख सकते हैं। इनमें से २५ लाख मनुष्य अंग्रेजी लिख या पढ़ सकते हैं।

<u>शिक्षा की मांग</u> – मैंने एक कालेज के मुख्य व्यक्ति से बात की। उनका कहना था कि स्वराजिस्ट लोग मुख्य हमला कोलेजों पर करते हैं। वे लोग कहते हैं कि इनके त्याग से एक वर्ष में स्वराज्य हासिल हो सकेगा। तदनुसार बहुतों ने कोलेज छोड़े और फिर छोड़ कर आ भी गये। पर आज! वे कोलेज बेशुमार भर रहे हैं। बोम्बे के विल्सन कोलेज में बाइबिल पढ़ाये जाने पर भी विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जाती है। आगरे के सेन्ट जोन कोलेज में भी बाइबिल [illegible]

विजय वैजयन्ती.

विजय होने पर भी इन्हीं से ही हिन्दु मुसलमान और ईसाई विद्यार्थी पढ़ते हैं। भारतीय शिक्षाशास्त्री एक मत है कि इंग्लैण्ड की यूनिवर्सिटियों में चुने भारतीय विद्यार्थियों को जाकर स्नातक होना चाहिये। यह बात अंग्रेजों की दृष्टि में उत्तम है। भारत में १५ यूनिवर्सिटी हैं। भारतीय विद्यार्थी Law पढ़ते हैं क्योंकि सरकार की नौकरी और पेन्शन के लिये। भारतीय विद्यार्थी अब व्यावसायिक विद्या की तरफ झुक रहे हैं।

इनका दूसरा काम भिन्न जाति तथा भिन्न धर्मों के मनुष्यों को समाज सेवा के लिये एकत्रित करना है। कलकत्ता में एक समूह ने सामाजिक काम यह किया था कि फिजी से आने वाले कुली जो भारतीय भाई थे वहाँ पहुँचते थे, उनको सन्तोष तथा आराम दिया। बोम्बे में इनके एक होस्टल में मैंने कोलम्बो, ट्रावनकोर, बंगलौर, हैदराबाद, पंजाबादि के हिन्दु मुसलमान तथा क्रिश्चियन विद्यार्थी Y.M.C.A की छत्र छाया में विराजमान देखे। मैंने जहां देखा उनका काम उत्साह पूर्ण था। प्रिंस इर्विन ने कलकत्ता में एक डिनर पार्टी दी जिसमें भिन्न धर्मावलम्बी भी उपस्थित थे। बंगाल के मुसलमान नेता इण्डियन क्रिश्चियन एसोशियेशन के प्रधान के पास बैठे थे। श्री एन्ड्रूज भी वहां विराजमान थे। उन्होंने उस एसोशियेशन के कल्याण की कामना की। इसमें अंग्रेज तथा भारतीय न्यायाधीशों ने भी भाग लिया था। ~~Y.M.C.A~~ Y.M.C.A द्वारा सब अतिथि सादर सत्कृत हुए थे। यह काम एक सफलता का आश्चर्यजनक एवं प्रशंसनीय काम था।

(क्रमशः)

सम्राट्.

यात्रा के अनुभव.

यात्रा के अनुभव.

(श्री० श्वेतकेतु जी द्वारा)

वास्तव में इस दुनिया को मैंने इन्हीं छुट्टियों के दिनों में ही परखा। इस दुनिया में भले के साथ कहीं भलाई नहीं की जाती। हरेक मनुष्य दिन रात लूटने की फ़िक्र में रहता है। हम लोग चार दीवारों में रहते हुए कभी इस बात को नहीं जान सकते। इन छुट्टियों में पहिला अनुभव जम्मू स्टेशन से उतरते ही हुआ जो इस प्रकार है। बिस्तर बगल में दबाये मैं पक्की सड़क पर से शहर में जा रहा था कि सामने से आते हुए मनुष्य ने झुक कर पूछा — क्या अभी उतरे हैं। मैंने कहा हां इसी गाड़ी से उतरा हूं। वह बोला — किधर से आगमन हुआ। मैंने कहा — हरिद्वार से आ रहा हूं। ओहो धन्य हो तुम्हारे जैसे, तुम तो मुझे अवतार उतरे प्रतीत होते हो। सच, भगवान के अवतार उतर आये। कृपा कर २ मिनिट बात करने दीजिये। मैंने कहा — कीजिये। झट सड़क से नीचे उतर कर पास वाले पुल के नीचे जा बैठा — और उसने भी मुझको उचित आसन दिया — फिर लगा स्तुति पाठ करने और चरण छूने। मैंने कहा — कि नहीं — चरण न छूजिये। खैर, बहुत पूंछ हिलाने के बाद कहा कि लगभग २ महिने हुए मेरी एक स्त्री खो गई है, मैं तथा मेरी लड़की और ५ वर्ष का छोटा लड़का इकले रह गए। तब से हम हाय २ करते हुए इधर उधर भटकते फिरते हैं। बड़ी कृपा होगी — २,३ सेर आटा ही ले लूंगा। आप बिल्कुल ईश्वर जैसे लगते हो, दयालु हो। खैर, मैंने उससे स्त्री का नाम पूंछा वो बोला राधे। मैंने कहा "मैं जम्मू आर्य समाज में सूचना दे दूंगा शीघ्र ही राधे मिल जायगी। शोक न करो"। बिल्कुल रोने जैसा चेहरा बना कर वह बोला — "आप समझे नहीं, अच्छा — १,२ आने ही दे दीजिये, आटा ले लूंगा, भूखा हूं"। मैंने कहा "रोओ मत शीघ्र ही राधे मिल जायगी। मैं भी मंगता हूं इसलिये कुछ नहीं दे सकता।" मैं उठ कर चल दिया पीछे एक मनुष्य आता दिखाई दिया उसने राधे के पति से पूछा — "क्या कुछ मिला" वह बोला — "नहीं।" मैं रुक गया मैंने उस शख्स से सारा हाल पूंछा। वह बोला "मुझे भी ३ मास हुए यह मिला था मैं भी इसे ईश्वर सदृश लगता था, खैर, मुझ से भी इसने १,२ आने मांगे। मैंने नहीं दिये बोला — भाई साहब यह तो ऐसे ही ठगता फिरता है। मैंने कहा — हां राधे को भेज दिया होगा।

गुरुकुल के ब्रह्मचारी इस के साथ दुर्व्यवहार करेंगे तभी सफल होंगे नहीं तो नहीं

दूसरा मेरा अनुभव यह है कि धनी लोगों पर कभी आश्रित न होओ। मैं २ धनियों के पास गया पहिले ने ११) दिये दूसरे के महल में जो २ दिन रहा क्या देखा !!! एक तरफ गौ शाला देखी दूसरी तरफ अश्वशाला देखी अलग भोजनालय देखा किसी वस्तु का दुःख नहीं। केवल २ आदमी इस महल में रहते थे। मुझको भी २ दिन तक इस महल का सुख, गौओं का दूध, भोजनालय का सहभोज चखना पड़ा। सोने के लिये मोटे २ गद्दे के पलंग सबसे उपरले मंजिल में बिछाये गये। सोचो ज़रा – कि यदि ये ८० हज़ार भी देना चाहता तो बड़ी बात नथी जब दान का समय आया तो २) ही दिये। बड़े आश्चर्य से मैंने कहा – शाह जी! आपसे तो लोग २००) की आशा दिलाते थे। वे अकड़ कर बोले – वे मूर्ख हैं। उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आता। उन्हें नाराज़ जान, कहीं ये २) भी न छीन लें मैंने मैं वहां से रुखसत हुआ। पीछे पता लगा कि यही शख्स जुए में २०, हज़ार एक हार जाते हैं चोर लूट ले जाते हैं। पर इसकी आत्मा पुण्य-कार्य करने के लिये नहीं झुकती। २ तीसरे शाह ने भी अच्छा खिलाया, सुलाया और २ स्नान कराया। दिये ५) ही। बात यह है ज्यों २ धन आता जाता है त्यों २ आदमी कंजूस होता जाता है। परमेश्वर! कभी इतना धनी मत बनाना कि मैं ~~अपने~~ रोटी देना भी बन्द कर दूं। दूसरी तरफ़ साधारण मनुष्य के पास गया उसने शीघ्र ही १५) दे दिये जो कि मेरी इस यात्रा की सबसे भारी रकम थी।

तृतीय मेरा अनुभव यह है कि योग्यता बिना दान मिलना बड़ा कठिन है 'अखतर' की बात है एक डाक्टर साहब से दान लेने गया – उन्होंने उचित आसन देने के बाद ३ प्रश्न किये – (१) संध्या में गायत्री मंत्र एक बार या उससे भी अधिक बार पढ़ना चाहिये (२) वेद मंत्रों के नीचे रेखायें क्यों हैं (३) एक वेद का मंत्र दूसरे वेद में क्यों है। क्या ईश्वर को याद नहीं रहा कि पहिले ये मंत्र लिख चुका हूं। डाक्टर साहब के कठोर प्रश्नों का जवाब बड़ी योग्यता से दिया, वे बड़े सन्तुष्ट हुए। शायद आपमें से बहुत से वैसे जवाब न दे सकते हों अतः संक्षेप में उत्तर लिख देता हूं।

(१) संध्या में गायत्री मंत्र एक बार ही पढ़ना चाहिये। अगर अधिक बार पढ़ना चाहते हो तो सब मंत्रों का भी उतने ही बार पाठ करें। पर इतना संध्या करने को उनके पास समय न था।

(२) वेद की रेखायें व्याकरण में काम आती हैं। आपको शायद व्याकरण का अच्छा ज्ञान नहीं। बोले – मैं व्याकरण नहीं पढ़ा हुआ हूं। मैंने मुस्करा कर कहा – तभी शंका हुई है।

(शेष १२ पृष्ठ पर)

फूल तथा पंखड़ियाँ

मुझे बुला ले अपने पास — टेक —

भेज देश में सन्देशों को, पा न सका हूँ तुझ को मैं,
दिल में मेरे लगा हुआ है, तेरे मिलने का विश्वास ॥१॥

सोचा करता हूँ कि तू है, जीवन-नद के परले पार,
सुना हुआ है कवियों की तू, मुग्ध वाणी में करता वास ॥२॥

दुखिया होकर अन्धेरे में, खोज रहा हूँ तुझ को नाथ!
हाथ बढ़ा ले मुझे बिठा ले, मेरे जीवन के तू आस ॥३॥

प्यासा मैं हूँ बना बटोही, राज राज तू सब का है,
भेद मिटा कर जल्द बुझा दे, मरुस्थली की मेरी प्यास ॥४॥

जैसा हूँ मैं हूँ बस तेरा, मुझे बुलाने में क्यों वेला,
आ पहुँचूंगा विना बुलाए, बन कर तेरा विरला दास ॥५॥

परिवर्तन के पट में नटवर! रंग जमाया करता है,
कहीं रुलाकर, कहीं हँसाता, मेरा अविरत उच्छ्वास ॥६॥

"श्री वदुमाल"

अज्ञेय

विदित है हम को कहते कई,
विदित है उन को कुछ भी नहीं।
कुछ नहीं हम जान सके उसे,
सुजन वे, उनको उस का पता ॥१॥

× × ×

भटकते जन हैं इस में सदा
सकल सार यही निगमान्त का ॥२॥

"छात्र"

अर्पण

तज मन मातृभूमि हित प्राणा।
जो कुछ जीवन का सुख पाना॥

जग जीवन के जाल भंवर में।
भूला फिरे मस्ताना॥

लूट मची है चरण सुधा की।
सोवत है नादाना॥

फिर पछताये हाथ न ऐ हैं।
बिरथा है आंसू बहाना॥

मत डर मूरख मौत के मुंह से।
कुछ दिन है मर जाना॥

जिस जननी ने जन्म दिया रे।
गुन नित उस के गाना॥

भक्ति भाव से झुक कर "प्रेमी"।
चरणन सीस नवाना॥

प्रेमी

पत्थर

ऐ गोल मोल! तुम कितने नीरस हो, हे जड़ तुम कितने निष्ठुर हो, तुम्हें शर्म नहीं आती। पानी में घण्टों बैठ कर भी तुम सरस न बन पाये! धन्य तुम्हारी जड़ता!!

ऐ रसिए! ओ भावुकों के सरताज़, अरे रसिक-मूर्धन्य, ठहर तुझे सरसता दिखाऊं- अभी उछल पड़ूं तो सब भावुक छिटक पड़े!!

"निठुर"

गगनाङ्गण में—

नव वर्ष— विजय वैजयन्ती आज सातवें वर्ष में प्रवेश कर रही है विगत छः वर्षों की आलोचना करना हमारा विषय नहीं है। विजय वैजयन्ती ने जो व्रत लिया था उसको निबाहने में कोई कसर नहीं की गई सफलता कहां तक मिली इसका निश्चय भावी के कार्य कर्ता और अन्य दृष्टा करेंगे पर हम कहना चाहते हैं कि महाविद्यालय दैनिक को विजय वैजयन्ती में सम्मिलित करने का सौभाग्य हमें ही प्राप्त है। वह सम्मिलित स्थायी नहीं था यह केवल महाविद्यालय वाग्वर्धिनी के कार्य कर्ताओं का निर्णय था। वह सम्मिलन छ वर्षों तक रहा। इस वर्ष से वह सम्मिलन का अन्त होगया। अब सर्वथा स्वतंत्र है। इसका उत्तर दायित्व केवल अब हमारे शिर पर है। अच्छा या बुरा जो कुछ है वह आपके आगे है। नवीन वर्ष में पग रखते हुए हम इस अवसर पर निकलने वाले सहयोगियों का विशेषतः अपने पुराने साथी महाविद्यालय दैनिक का स्वागत करते हैं।

स्वागत— हमारे सौभाग्य की बात है कि विजय वैजयन्ती के संस्थापक श्री पं. जनक देव जी विद्यालङ्कार उत्सव कुल के इस अवसर पर पधारे हुए हैं। इस पुण्य अवसर पर कुल बन्धुओं की ओर से तथा विशेषतः विजय-वैजयन्ती के वर्तमान कार्य कर्ताओं की ओर से हम पण्डित जी का हार्दिक स्वागत करते हैं। हमें विश्वास है कि पण्डित जी का आगमन विजय वैजयन्ती के साथ उनके पुराने सम्बन्ध को नया कर और अधिक दृढ़ कर देगा।

नवीन परिषद् ~~[illegible]~~— कुल में एक नवीन परिषद् का जन्म हुआ है इसका नाम होगा अर्थ शास्त्र परिषद्. सम्भवतः यह परिषद् विद्यालय की सभा होगी। अभी परिषद् परिषद् के सभापति महोदय की कापी पर ही है। पर हम उसके प्रगट होने से पूर्व एक बात कहना चाहते हैं कि जो काम इस परिषद् से लिया जारहा है यदि उसी काम को विज्ञान परिषद् के नीचे अर्थ शास्त्र उपसमिति बनाकर लिया जाय तो विज्ञान परिषद् में भी जान आजायेगी वरना रही सही जान भी खतरे में पड़ जायगी। आयुर्वेद परिषद् पहले विद्यालय की थी पर उसने आश्रम में प्रवेश किया फल कुछ विशेष न हुआ। विज्ञान परिषद् को जहां धक्का लगा वहां आयुर्वेद परिषद् भी साल में दो तीन अधिवेशन करने के सिवाय कुछ नहीं कर रही। यदि आयुर्वेद परिषद् के सम्मालक विज्ञान परिषद् के अन्दर रह कर ही काम करते रहते तो पुरानी संस्था भी जीवित

रहती और आयुर्वेद परिषद् का कार्य सब की सहानुभूति भी पाता। आज विज्ञानपरिषद् की जो अवस्था है उस को नज़र में रखते हुए भी हम कहना चाहते हैं कि अर्थशास्त्री भाई यदि विज्ञान परिषद् के अन्दर रह कर अपने क्षेत्र में काम करें तो उन का गौरव घटेगा नहीं बढ़ेगा ही। चीज़ बनानी है पर बनी चीज़ को स्थिर करना और सुचारु रूप से चलाना अधिक कठिन है।

श्रमजीवी दल — कुल में श्रम जीवी दल का प्रारम्भ हुआ है इस के अध्यक्ष भी क्रीड़ा विभाग के अध्यक्ष हैं। अभी यह केवल भण्डार के लिए लकड़ी लाने का काम कर रहा है। लकड़ी लाने का ठेका लेना इस लिए कि क्रीड़ा विभाग को आमदनी होगी खिलाड़ी भाइयों को खेंच सकेगा। पर जिस भाव की जरूरत है वह इस से नहीं आ सकेगा। हम चाहते हैं कि यह व्यावहारिक शिक्षा का कार्य निरन्तर जारी रहे। बेकारी की समस्या प्रतिदिन अधिकाधिक चिन्ताजनक होती जा रही है। शिक्षित बेकारों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है यदि गुरुकुल के स्नातक भी इस की संख्या बढ़ाने में सहायक हों तो गुरुकुल के लिए शोभाजनक न होगा। जब अन्य राष्ट्रीय विद्यालयों ने इस समस्या को हल करने की ओर पग बढ़ाया है और सफलता लाभ कर रहे हैं तब हमारा पीछे रहना हानिकर होगा। लकड़ी ढोने और पानी भरने से यह समस्या हल न होगी। यदि इस के साथ दस्तकारी का काम प्रारम्भ कर दिया जाय तो जहां यह शिक्षा होगी वहां यह एक आकर्षक काम होगा। तथा यह विभिन्नता भी रहेगी और प्रसन्नता पूर्वक सब काम करेंगे। खेल को उन्नत बनाने के साथ यदि इस समस्या की ओर ध्यान दिया जाय तो स्नातक अपने जीवन में जहां स्वतंत्र होंगे वहां समाज के लिए भी ज्यादा उपयोगी होंगे।

हमारे मान्य अतिथि — श्रीमती लैस्टर और उन के भतीजे श्री हौग सत्याग्रहाश्रम से आज या कल कुल में पधार रहे हैं। महात्मा जी के आश्रम में आप कुछ महीनों से निवास कर रही हैं। महात्मा जी के चरणों में विदेश से आने वाली महिलाओं में आप का दूसरा नम्बर है। भगवान् करें कि श्रीमती का आगमन हमारे कुल का सत्याग्रहाश्रम से सम्बन्ध दृढ़ करने में सहायक हो।

इन के बाद कल या परसों नाभा के भूतपूर्व महाराज श्री रिपुदमन सिंह जी भी पधार रहे हैं। आप पर अभी दूसरा प्रहार हुआ है। आप रियासत की प्रजा होने के कारण प्रान्तीय कौंसिल और भारतीय व्यवस्थापिका परिषद् की उम्मेदवारी के अयोग्य ठहराए गए हैं। आपका स्वातंत्र्य प्रेम प्रगट है। महाराज का आगमन कुल के लिए तथा महाराज के लिए शुभ हो। नवीन सम्बन्ध प्रतिदिन बढ़ता रहे। हम मान्य अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

स्नातक भाई का संदेश— स्नातक कृष्णचन्द्र जी विद्यालंकार गत वर्ष से अफ्रीका में हैं। आप अपने समय में यहां क्रीडादल के उत्तम रत्न थे। आप को शताब्दी की पराजय से जो धक्का लगा था उस की वेदना उन के पत्र के प्रत्येक शब्द से सुनाई देती है। वेदना में जादू है वह उस पत्र में मौजूद है। आपने अपने पत्र में वर्तमान खिलाड़ियों को एक सन्देश भेजा है। हमें विश्वास है कि यह सन्देश वर्तमान समय में उठी छोटी २ असन्तोष लहरों को शान्त कर सकेगा और सब एक भाव से कार्य करने में अग्रसर होंगे।

महान् भारत— श्री यदुनाथ सरकार की अध्यक्षता में महान् भारत संघ की स्थापना हुई है। इस के संरक्षकों में महामना मालवीय जी और बिड़ला सदृश महानुभाव हैं। इस संघ का उद्देश्य प्राचीन महान् भारतीय सभ्यता को ढूंढना है। तुर्किस्तान, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, अनाम, मैक्सिको और पेरु में प्राचीन समय में भारतीय जाकर बसे थे। उन्हों ने जिस महान् भारत की रचना की थी उस के भग्नावशेष विद्यमान हैं। यह संघ उसी महान भारत की खोज करेगा जिस को अब तक यूरोपियन विद्वान् करते रहे हैं। यह संघ प्रतिवर्ष भिन्न २ देशों में विद्वानों को भेजेगा। प्रत्येक देश में एक ब्यूरो स्थापित किया जायगा। यह एतत्सम्बन्धी सर्व सामग्री को विद्वानों के लिए उपस्थित करेगा। इस संघ ने यूरोप में स्थित भारतीय विद्वानों और यहां के विद्वानों को सम्मिलित कर लिया है। प्रो. विनय कुमार सरकार इस संघ के एक प्रमुख कार्यकर्ता हैं अतः इस की सफलता में सन्देह करने का कोई अवसर नहीं।

उल्लेखनीय भेद— यूनाइटेड किंगडम का प्रत्येक आदमी प्रतिवर्ष १०० सेब ७० सन्तरे ३० केले खाता है। अंगूर आम और मेवा इस के अलावा हैं। जिस देश के लोग इतना खाएं उन की जीवन शक्ति हम से दुगनी हो तो क्या आश्चर्य है।

इधर भारत में ४० लाख आदमी एक समय भी भर पेट भोजन नहीं पाते। जीवन शक्ति प्रति दिन क्षीण होती जा रही है। जब कि हमारा देश संसार को भोजन देने वाला है। यूनाइटेड किंगडम जिस के पास तीन महीने भर का भी खाने का अपनी भूमि में नहीं पैदा होता वहां के निवासी प्रति तीसरे दिन एक सेब खा रहे हैं। गुलामी और स्वतंत्रता में यह भेद है।